Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDI

हि: ६८६

ॐ

जनकपुर का सन्त साहित्य

श्री राम दरबार

श्री सूर किशोर दास

श्री नवल किशोर दास

श्री रामशरण दास

संकलनकर्त्ता:- ताराकान्त झा (सह प्राध्यापक)

l Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि- ६८६

मिथिला

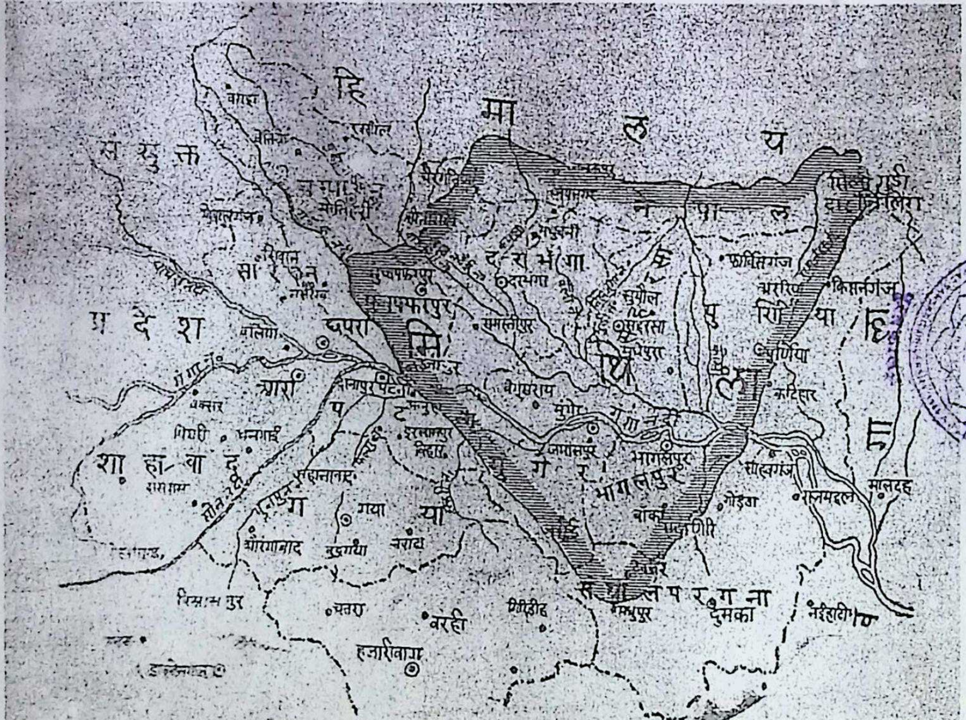

[ग्रियर्सन के 'विहारी व्याकरण' के आधार पर]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

प्रकाशक :- ताराकान्त झा
गा.वि.स.डाम्हीमडै-५, महोत्तरी, जनकपुर, नेपाल ।
(सर्वाधिकार सुरक्षित)

प्रकाशन :- २०६७/४/८ मंगलवार (रक्षा बन्धन)
(ई.सं. २४-८-२०१०)

प्रकाशित पुस्तक :- ५०० प्रति

Acc 30034

सहयोगार्थ रू. १३५।-

कम्प्यूटर :- चुम्फीराम चौधरी [Mobile No. : 009779847847084]
एम.ए.(राजनीतिशास्त्र),
डिप्लोमा इन कम्प्यूटर तथा
हार्डवयर्स इञ्जिनियर एण्ड ओ.एस.
(More than 150 countries)

मुद्रक :- सोनी ग्राफिक्र अफसेट प्रेस, जनकपुरधाम
फोन : ०४१-५२०८९३,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI
हि-६८८

सीता बन्दना

जय-जय सीते ! असुर निहन्त्री,
जगमुद मंगल .... कारणि ।
सहज सुभाव सुधारस सार,
अनुगति गति उपकारणि ॥
कनक बरण सिद्धि पद नेओछे ,
निगमागम नहि जाना,
सृष्टि भेद एक तुहीं माते,
शास्त्र पुराण .... बखाना ॥
आदि अनादि जग कारण तुहीं,
तुम बिनु को जग ....मूले ।
राम रमापति तू कमला रानी,
मेटहुँ भव के ....शूले ॥
भव अपार माया के सागर,
छिन-छिन जलन अनेका ।
बासर रैनि कुवासन सेबल,
परिजन शूलक ....फोका ॥
जग आधार करुणा के सागर,
मुख नहि आवए वाता ।
तारा कान्त चरण पद सेवक,
जनि विसरु हे! माता ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

ॐ

समर्पण

श्रीगणेशाय नमः ।
श्री उमा महेश्वराभ्यां नमः ।
श्रीसीतारामाभ्यां नमः ।
श्री हनुमते नमः ।
मातृ-पितृचरणकमलेभ्योः नमः ।
गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवोमहेश्वरः ।
गुरुःसाक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

मातु-पिता भागीरथी-कपिलेश्वर ।
साधुःसन्त सेवा में प्रतिदिन तत्पर ॥
दुईसुत सुता हुए हम उनके ।
ताराकान्त प्रथम सुत जिनके ॥
कुलदीप नहीं, कुलकुपूत मैं तबतक ।
मातृ-पितृऋण नहीं चुका सकूँ जबतक ॥
जनकनन्दिनी से जब मैं अर्जी की ।
सीतावर श्रीराम ने तव कृपा की ॥
जनकपुर का सन्त-साहित्य संकलित किया ।
माता-पिता के करकमलों मे अर्पित किया ॥

सनातन धर्म एवं संस्कृति के प्रणयी सीताचरण चञ्चरीक, जिनके स्नेह एवं वात्सल्य से मैनें आजतक संसार का अनुभव किया, पिता स्व. कपिलेश्वर झा एवं माता श्रीसती, साध्वी स्व. भागीरथी देवी के करकमलों में सादर समर्पित ।

ताराकान्त झा
सह-प्राध्यापक
या.ल.ना.विद्यापीठ,
मटिहानी, महोत्तरी

SCANNED

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मेरी-दृष्टि

'जनकपुर का सन्त-साहित्य' के लेखक एवं सङ्कलक ने.सं.वि.के हिन्दी विभाग के सह-प्राध्यापक ताराकान्त झा जी हैं। ये अध्ययनशील, अडियल प्रकृतिं के और यथार्थवक्ता हैं। यों तो समान विश्वविद्यालय के प्राध्यापक होने से पहले से ही हम दोनों एक दूसरे के परिचित थे। नेपाल-प्राध्यापक-संघ के उपाध्यक्ष पद पर चुनाव लडते समय ये और अधिक परिचित हुए। जब मैं इस विश्वविद्यालय का परीक्षा-नियन्त्रक था, उस समय झाजी याज्ञवल्क्यलक्ष्मीनारायण विद्यापीठ मटिहानी के प्राचार्य हुए थे। इस समय भी परीक्षा-सम्बन्धी एवं विश्वविद्यालयीय कार्यों में वार्त्तालाप होती रही। इस के बाद दो महिने पूर्व वहीं के लोगोंद्वारा इन्हें भी अपमानित होना पडा था। इस कारण भी दाङ् में केन्द्रीय पुस्तकालय के भौतिक सम्परीक्षण के प्रसङ्ग में आए। इनसे भेंट और वातचीत होती रही। इसी प्रसङ्ग में इन्होंनें अपनी कृति हमें दिखाई, कुछ अंश पढकर सुनाया और उसका 'प्रिन्ट आउट' पढ देने को दिया। आवश्यक संशोधन समेत करने का इन्होंनें आग्रह किया। हम हिन्दी के विशेषज्ञ तो हैं नही, अतः हिन्दी की इस कृतिको हम क्या संशोधन कर सकते हैं ? ऐसा कहने पर 'शोधप्रबन्धों का निर्देशन कर चुके आप इसका भी गुणान्वित और परिष्कृत कर सकते हैं' उन्होंने कहा। इसी आग्रह पर हिन्दीप्रेम के कारण हमने उस कम्प्यूटर-टाइप को सामान्यरूप में पढा और आवश्यक स्थल पर संशोधन भी किया। फिर भी इस कृति को और अधिक परिष्कृत और गुणसम्पन्न बनाने के लिए अभी बहुत गुञ्जाइस वाँकी हैं। इस रूपमें भी इससे हिन्दी-साहित्यका भण्डार तो पूर्ण होगा ही, नेपालीभाषा एवं मैथिलीभाषा का भी भण्डार, वैचारिक एवं विषयवस्तुगत दृष्टिसे पूर्ण होगा।

इसका नाम "जनकपुर का सन्त-साहित्य" होने पर भी यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिथिलाक्षेत्र का सन्त-साहित्य है। और सामान्य रूपमें नेपाल और भारत का भी सन्त-साहित्य है। क्योंकि इसमें जन्म एवं कर्मसे कोई न कोई सन्त जनकपुर के अतिरिक्त नेपाल और भारत के अनेकों प्रदेशों से सम्बद्ध हैं, उनका धार्मिक देन जनकपुरसहित सव के लिए है। मिथिलाक्षेत्र वर्त्तमान नेपाल और भारत के कुछ क्षेत्रों को व्यापन करता है। वर्त्तमान जनकपुर तो मिथिला का छोटा सा क्षेत्र है। बृहद्-विष्णु-पुराण में मिथिला का क्षेत्र निर्धारित है। उसमें लिखा है-

योजनानि चतुर्विंशद् व्यायामः परिकीर्त्तितः।
गङ्गाप्रवाहमारभ्य यावद् हैमवतं वनम्॥
'मिथिला' नाम नगरी यात्रास्ते लोकविश्रुता।

अर्थात् चौबीस योजन विस्तृत (चौडा) और गङ्गा से लेकर हिमालय की तलहटी तक का भूभाग मिथिला है। संस्कृत-वाङ्मय में मिथिला शब्द की व्युत्पत्ति की जाती है- मथ्यन्ते रिपवोऽत्र। इसका अर्थ है- काम, क्रोध एवं लोभादि मानवता के विरोधी तत्त्वों का दमन जहाँ होता है और भौतिक शत्रु-राजाओं का दमन एवं पराजय जहाँ होता है वह मिथिला है। 'मथे विलोडने' इस पाणिनीय धातु से 'मिथिलादयश्च' इस औणादिक सूत्र से इलच्-प्रत्यय एवं मथ के मकारघटक अकारको इकार करने से यह शब्द बनता है। इस प्रकार, यह ऐतिहासिक शब्द होने से विद्वानों की दृष्टि प्राचीनकाल से ही इस पर रही है। इसी ऐतिहासिकता के कारण ही मिथिला के अन्तर्गत जनकपुर से आए रामविवाह के प्रस्ताव की स्वीकृति अयोध्या के राजा दशरथ ने दी थी। अयोध्या भी मानसिक एवं भौतिक शत्रुदमन में अग्रणी रही है। इसीलिए, यथानाम तथा गुण होने से अयोध्या शब्द की भी व्युत्पत्ति की जाती है- 'न केनापि योद्धुं शक्या'। कोई भी राजा या दुर्गुण अयोध्या और वहाँ के सन्तों एवं राजाको जीतने की दृष्टि से आँख भी नहीं उठा सकता था।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सन्तशब्द संस्कृत के सत्शब्द के बहुवचन 'सन्तः' इसका तत्सम है । इस शब्द से बोध्य सन्तलोग सज्जन, सच्चरित्र, नैतिक, त्यागी एवं सदुपदेशक होते हैं, इसीलिए घर, समाज और राष्ट्र में इनकी आवश्यकता होती है । जीवन की पूर्णता के लिए धार्मिकता एवं ईश्वरीय शक्ति में विश्वास आवश्यक होता है । इन तत्वों का उपदेश सन्तलोग देते हैं । शरीर की क्षणभङ्गुरता एवं दोषग्रस्तता दिखाकर शिश्नोदर परायणता की निन्दा वे करते हैं । मानव होकर शिश्न एवं उदरपरायण मात्र होना सवों की दृष्टि में मानव की कमजोरी है । उसके लिए परमार्थसाधन भी आवश्यक है । इसीलिए तो पुरुषार्थचतुष्टय की व्यवस्था शास्त्रों ने की है । धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष मानव के चार पुरुषार्थ हैं । धर्माचरण, अर्थोपार्जन, कामोपभोग एवं मोक्ष या मुक्ति मानव मात्र की अभिलषित वस्तुएँ हैं । धर्म से विरोध न खानेवाला अर्थोपार्जन एवं कामोपभोग भी मानव के लिए आवश्यक है । नहीं तो संसार और उसका सञ्चालन कैसे हो सकता ? इन्हीं तत्त्वों का उपदेश साधु, सन्त, देते हैं । इस सन्त-साहित्य में ऐसे तत्त्वों का भी वर्णन है- सन्तों की वाणी में । इसलिए भी यह कृति अपेक्षणीय है ।

जो दीन, दुःखियों के प्रति दयालु, होते हैं, जिनमें धन, रूप, कुल और, विद्याका घमण्ड नहीं होता, जिन्हें परोपकार करने में आनन्द आता है, जो दीन-दुःखियों द्वारा कुछ मांगने पर खुश होते हैं, जो यौवन के उन्मादों से युक्त हो कर भी स्वस्थ और अविकृत होते हैं -। कलिकाल के भार से आक्रान्त पृथ्वी के रक्षण एवं वहन के लिए विशाल और मजबूत् खम्बों के समान हैं,-ये सन्त जो महान् होते हैं, जिनमें सज्जनता होती है उनका भव (शङ्कर, भगवान्) में भक्ति होती हैं, विभव में नहीं । उनका शास्त्रों और परोपकार में व्यसन होता है युवतियों के कामास्त्र में नहीं । उनकी यश के प्रति चिन्ता होती है वपु(शरीर) के प्रति नहीं । ऐसे सन्तों के चरित्र का उदघाटन करना भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस सन्त-साहित्यका लक्ष्य है, हमें ऐसा लगता है।

प्रा.झाजीद्वारा सङ्कलित एवं लिखित इस सन्त-साहित्य में सन्तोंका इतिहास, सन्तोंका परिचय, जनकपुर और उसके मेलों का परिचय भी विषयवस्तु के रूप में समाविष्ट है। इसमें सङ्कलित श्रीसद्गुरुशरण 'मधुरलता'का यह पद्य साधु-सन्तों के महत्त्व को स्पष्ट करता है –

भारतका अति उपकार किया इन कण्ठी चन्दनवालों ने।
लाखौं, सङ्कट शिरधार किया इन कण्ठीचन्दनवालों ने॥

भारत में गोवध का विरोध और सनातन धर्म एवं संस्कृति में आँच आने पर ऐसे ही साधु-सन्त प्रशासन से लोहा लेते हैं। इसीलिए इनका महत्त्व स्पष्ट है। आज नेता और सरकारद्वारा अपनाई जाने लगी समता और प्रगतिशीलता शताब्दियों से सन्तों ने अपनाई है।

सैनिक संगठन और उनके आवास-क्षेत्रको 'छाउनी' कही जाती है। ऐसी छाउनिया नेपाल के तीर्थस्थल और भारत के अयोध्या, वृन्दावन हरिद्वार और वनारस आदि के मन्दिरों में देखी जा सकती हैं। अयोध्या के मणिराम दास की वडी छाउनी और नृत्यगोपाल दासजी की छोटी छाउनी साधु-सन्तों के आवास के रूप में प्रसिद्ध हैं। दीवाल में वनी एक दराज, और विस्तर लगाने के लिए डेढ दो मीटर जमीन बड़े हलमें उन्हें उपलब्ध होती है। अपना नित्यकर्म और भजन इसी स्थान पर होता है उनका। भोजन रुखा, सुखा जो मिलता है प्रसाद के रूपमें, वे सन्तुष्ट रहते हैं। भजन और मन्त्रजप से राष्ट्रका कल्याण करते हैं। जातिपाँतिका पता नहीं, सव बराबर है। ऐसा साम्यबाद क्या आज के राजनैतिक वाद में देखा जाता है? ये लोग ब्रह्मचर्य एवं अविवाहद्वारा देशके परिवारनियोजन कार्यक्रमको सहयोग कर रहे हैं। इसीलिए इन्होंनें नेपाल एवं भारतका उपकार किया है। इस साहित्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

में सङ्कलित 'फूलवाबा' के "सीतानाम उदार" में यह कितना सुन्दर पद्य है–

जनकलली के पदकमल जब लगि हिय नहि वास ।
राम भ्रमर आवत नहीं तब लगि ताके पास ॥

विद्वान्, रचनाकार एवं मैथिल-कवि कोकिल विद्यापति के घर में भगवान् शिव भी दासता करते थे। ये विद्यापति के प्रिय एवं घनिष्ठ परिचर थे। उनका परिचरानुकूल नाम-उगना था एक दिन परिस्थितिवश भेद खुल जाने के डर से 'उगना' लुप्त हो गए। तब विद्यापति को चैन न हुआ और वे कवि की भाषा में कहने लगे –

उगना रे मोरकतए गेलाह ।
कतए गेला शिव कीदहु भेलाह ॥ पदावली ।

ऐसी सिद्धि और तन्मयता सबों में आवश्यक है- आज भी। श्रीसूरकिशोरदास जी का यह पद्यांश धार्मिक पर्यटन ओर मिथिलाका दर्शन, जीवन में अनिवार्य मानता हैं –

का बहुकाल जिए जगमें,
धिक् जीवन जो मिथिला नहिं देखी ।

इसप्रकार सन्त, मानव-जीवनको परिष्कृत, सफल और सच्चरित्र वनाने में सहयोगी होते हैं। जीवन जीने की कला सिखाते है। जनकपुरका सन्तसाहित्य इन विशेषताओं को जनसमक्ष लाने में सफल बनें यही हमारी शुभकामनाएँ हैं। अन्त में सन्तों को लक्षित कर वना यह नीति-श्लोक उद्धृत कर विराम लेना चाहता हूँ –

वदनं प्रसादसदनं सदयं हृदयं सुधामुचो वाचः ।
करणं परोपकरणं येषां केषां न ते वन्द्याः ॥

अर्थात्, जिनका वदन प्रसन्नता का सदन है, हृदय सदय है, वाणियाँ सुधावर्षी हैं, परोपकार करना जिनका काम या इन्द्रियों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MDP

व्यापार है, ऐसे लोग किसके वन्दनीय नही होते ? इस कृति पर मेरी यही दृष्टि है ।

प्रा.डा.विष्णुप्रसादशर्मा देवकोटा
ने.सं.वि., जनता विद्यापीठ,
विजौरी, दाङ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MB

दो-शब्द

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले ।
तावद् रामायणी गाथा लोकेषु प्रचरिष्यति ॥

राजर्षि विदेह-जनक की कर्मभूमि जगज्जननी जानकी (सीता) की जन्मभूमि, याज्ञवल्क्य, गौतम, पं. शतानन्द, अष्टावक्र, मैत्रेयी, गार्गी जैसे विद्वान्, विदुषियों की तपोभूमि एवं कर्मभूमि, महात्मा सूरकिशोरदास और प्रयागदास जैसे सन्तों की साधना- भूमि के रूप में प्रसिद्ध जनकपुरधाम साधुसन्तों की पावन भूमि रही है। यहाँ अनेक सन्त हुए, जिन्होंने हिन्दी-सन्त-साहित्य के विकास मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। साधु सन्त मनमौजी स्वभावके, घुमक्कड़ और यथार्थवक्ता होते हैं। जहाँ मन भागया रहलिए। इच्छा हुई चल दिए :-

सिंहन के लहडे नहीं, हंसन की नहीं पाँत ।
लालन की नहीं वोरियाँ साधु न चले जमात ॥ (लोकोक्ति)

मैं जनकपुर के सन्त-समागम और उनके द्वारा रचित रचनाओं (सन्तसाहित्य) के संकलन के वारे में सोचता था। परन्तु प्रभु की मर्जी न होने के कारण सफलता नहीं मिल पा रही थी। लेकिन, मनकी साध पुरी करने के लिए मैं कृत्संकल्प था। संयोगवश, पूर्ण सफलता तो नहीं, जानकीजी की कृपा से कुछ संकलन कर पाया हूँ, जिसे भावुक तथा सरस हृदयों के लिए अर्पण करने जा रहा हूँ। जनकपुर के सन्त साहित्य के सम्बन्ध में रसास्वादन करने के लिए जब जिह्वा खोलनी पड़ी तव उन्होंने यही कहा –

कूजन्तं राम रामेति, मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविता-शाखां वन्दे वाल्मीकि-कोकिलाम ॥

–मूल रामायण ।

जब सन्त-साहित्य वा अन्य भाषामूलक साहित्य रसास्वादन करने का सुअवसर प्राप्त होता है, तव आदिकवि वाल्मीकि का स्मरण स्वतः हो जाता है। क्योंकि, वाल्मीकि से बढकर रामको कौन जानता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है ? जनकपुर राममय है-तो, वहाँ के सन्त वाल्मीकि के छायावत् , तो उनके द्वारा रचित पद्य या काव्य वाल्मीकीय रामायण के पथानुगामी हैं । भारतीय उपमहाद्वीप में सन्तपरम्परा बहुत दिनों से चली आरही है । खासकर रामानन्द-काल से इसमें गाम्भीर्य और नामसंकीर्त्तन पर अधिक बल दिया गया है । देश में राजनैतिक उथल-पुथल और उसके कुप्रभाव तथा अपसंस्कृति के रोकथामस्वरूप सन्तों का आगमन हुआ और होता आया है :-

यदा-यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ (गीता)

हिन्दी साहित्यका भक्तिकाल विश्व साहित्य की अनोखीं निधि है । इसके कवीर, नानक, सूर और तुलसी इस काव्य-गगन के उदीयमान नक्षत्र हैं, जो आज भी अपनी आभा से सन्त-साहित्य- परम्परा को जीवन्त रखने में सहयोग कर रहे हैं । इस सन्त-परम्परा के निर्गुण और सगुण दो पक्ष हैं । जनकपुर निर्गुण और सगुण दोनों पक्षीय सन्त-परम्पराका संगमस्थल के रूप में स्थित रहा है । सगुण पक्षमें रामभक्तिशाखा और कृष्णभक्ति शाखा पड़ती हैं । जनकपुर निर्गुण और सगुण दोनों पक्षीय सन्तपरम्परा का संगम स्थलके रूप में प्रसिद्ध रहा है । खासकर गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस के रचनाकाल से सन्त-साहित्यका विकास जनकपुर मे अधिक हुआ । अयोध्या के राजकुमार श्रीराम और मिथिला की राजकुमारी मैथिली (सीता) के वैवाहिक सम्बन्ध के चलते जनकपुर में संतों का आवागमन जारी रहा और आज भी वर्त्तमान है ।

आज सन्तपक्ष कमजोर पड़ता जा रहा है- तो असन्त पक्ष का पलड़ा मजवूत होता जा रहा है । जिसके चलते नेपालसहित विश्व में अशान्ति वढ रही है । मर्यादाएँ समाप्तप्रायः हैं । सामाजिक जीवन अघ से भर गया है । साधु, सन्तों और सज्जनोंका जीना कठिन हो गया है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

। व्यक्तिगत जीवन पापमय बन गया है । मानवता की खिल्ली उड़ रही है । ऐसे समय में सन्त-समागम और उनके द्वारा रचित सन्मार्गप्रदर्शन और प्रभुस्मरण ही इस माया रूपी भवसागर से पार करेगें । मुझे पूर्ण विश्वास है-कि इस सन्त-साहित्य के अध्ययन और मनन से श्रद्धालुओं में सीताराम के प्रति श्रद्धा और भक्ति बढेगी । सच्चरित्रता और नैतिकता आदि मानवीय गुणों का विकास होगा । त्रिताप नष्ट होंगे । परोपकार की भावना जगेगी । अन्तःकरण शुद्ध होगा । साधु, सन्तों तथा दीन-दुखियों के प्रति श्रद्धा बढेगी । प्रभुका वरदान मिलेगा । देशमें शान्ति आएगी और विश्व का कल्याण होगा ।

इस पुस्तक में सन्त साहित्य से युक्त सम्बद्ध स्थल, मठ-मन्दिर तथा अन्वेषण के समय में प्राप्त सन्तोंद्वारा रचित रचनाओं का संकलन सावधानीपूर्वक किया गया है । फिर भी भूल से कुछ स्थलों मठ-मन्दिरों तथा उनसे सम्बन्धित सन्तों की रचना छूट गयी हो तो उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ ।

सन्त न वाँधे गाठरी, पेट समाता लेइ ।
आगे पाछे हरि खडा जब माँगे तव देइ ॥

इस सिद्धान्त के सन्त होने के कारण वे अपना मूल परिचय नहीं देते थे । क्योंकि साधु, सन्त रमता जोगी वहता पानी जो होते हैं ।

इस सन्त-साहित्य के प्रथम-पराग, द्वितीय-पराग और तृतीय-पराग में विषयवस्तुको क्रमानुसार रखा गया है । इस कृति के प्रकाशन में विशेष रूप से मेरी सहधर्मिणी श्रीमती सुनयना झा के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिसने मुझे प्रेरणा देकर उत्साहित करती रही । इसी तरह अपनी समिक्षात्मक सहयोग तथा "मेरी एक दृष्टि" लिखकर मेरी हौसला बढानेवाले ने.सं.वि.के प्रा.डा.श्रीविष्णुप्रसादशर्मा देवकोटाजी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MiDR

के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। इसी तरह इस पुनीत कार्य में वातावरण मिलाकर सहयोग करनेवाले नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्रीविदुर पौडेलजी, शिक्षाध्यक्ष श्रीभागवतप्रसादशर्माजी, प्रा.श्रीस्थानेश्वर गौतमजी एवं परीक्षा नियन्त्रक श्रीश्रीधर अधिकारीजी के प्रति विशेष रूप से अभारी रहूँगा। इसीप्रकार इस कृति के प्रकाशन के लिए कम्प्यूटर टाइपीङ् और सेटिङ् करनेवाले श्री चुम्फीराम चौधरीसहित प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करनेवाले सभी व्यक्तियों को हार्दिक धन्यवाद !

"अस्तु"

ताराकान्त झा
सह-प्राध्यापक
या.ल.ना.विद्यापीठ,
मटिहानी, महोत्तरी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

भूमिका

दुर्लभं संस्कृतं वाक्यं दुर्लभः क्षमकृत्सुतः ।
दुर्लभा सदृशी भार्या दुर्लभः स्वजनः प्रियः ॥

आज के भौतिकवादी युग में लोग हत्या, हिंसा, अपहरण तथा वैयक्तिक स्वार्थ(धन लिप्सा) में पड़कर अशान्त जीवन जीने को बाध्य हैं । सर्वत्र निराशा ही निराशा व्याप्त है । विध्वंसक अस्त्र-शस्त्र जमा हो रहे हैं । इर्ष्या और द्वेष से समाज में तनाव वढ रहा है । उससे त्राण पाने के लिए लोग छट-पटा रहे हैं । सुख और शान्ति का खोज विश्वस्तर पर जारी है । विनाश के कगार पर खड़े विश्वको बचाने के लिए एवं शान्ति और सद्भाव के लिए एक मात्र उपाय सतसंग और रामकृपा है । ये दोनों समाज और देश को शान्त एवं सुखी बनाने वाले हैं । साधु भौतिकवादी युग की यातनाओं से मनुष्य मात्र को दूर रखने में सहायक होते हैं । यह भौतिक आकर्षण ही आज के मनुष्य के सारे दुःखों की जड है । राम चरितमानस में उसके निराकरण का सब से सरल मार्ग सत्संगति और श्रीराम भक्ति को स्पष्ट रूप मे इंगित किया है –

विनु सतसंग विवेक न होई ।
रामकृपा विनु सुलभ न सोई ॥
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई ।
पारस परस कुधात सुहाई ॥ -रामचरित मानस बा. का.

"सतसंग" और "रामकृपा" में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है । 'सतसंग" के लिए चाह और 'रामकृपा' के लिए भक्ति आवश्यक है । सन्त सतसंग के पक्षधर होते हैं, तो असन्त उसके विरोधी । भरत के अनुरोध पर प्रभु श्रीराम संत और असन्त के स्वभावको स्पष्ट करते हुए कहते हैं –

सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ ।
भुलेहुँ संगति करिअ न काऊ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

तिन्हकर संग सदा दुःखदाई ।

जिमि कपिलहिं धालइ हरहाई ॥ रामचरित मानस उ.का.

दुष्ट हृदय अहंकारी और स्वार्थरत होता है । वह परद्रोह में रत, सत्संग और हरिकथा से दूर भागता है –

स्वारथ रत परिवार विरोधी ।

लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥

मातु-पिता गुर विप्र न मानहिं ।

आपु गए अरुघालहिं आनहिं ॥

करहिं मोह वस द्रोह परावा ।

सन्त संग हरि कथा न भावा ॥

ऐसे अधम मनुज खल कृतयुग त्रेतां नाहिं ।

द्वापर कछुक वृंद बहु हाइहहिं कलिजुग माहिं ॥

रामचरित मानस उ.का.

संत परद्रोह से अलग रहकर दूसरों का हित करने से वढकर कोई धर्म नही मानते । सांसारिक दुःख रूपी विशाल सागर को पार करने का एक ही उपाथ है- रामभक्ति, रामकथा, साधुसंगति और सन्त समागम :-

भव सागर चह पार जो पावा ।

राम कथा ता कहँ दृढ नावा ॥

हरि चरित्र मानस तुम्ह गावा ।

सुनि मैं नाथ अमित सुख पावा ॥

रामचरित मानस ।

भगवान् शिव से पार्वती जी कहतीं हैं- हे प्रभु ! आपने राम कथा रूपी अमृतपान कराया, मैं इससे अति प्रसन्न हूँ । जो मनुष्य अपना कल्याण चाहता है, वह प्रभु श्रीराम में भक्ति करे ।

आज के कलिकालरूपी विकराल समय में सारे दुःखों से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

छुट्कारा पाने का एक मात्र आधार सत्संग ही है । शिव-पार्वती-संवाद सुनकर मैंने जनकपुर का संत-साहित्य के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पण करते हुए उन श्रद्धालुओं (सन्तों) द्वारा रचित श्रीराम कथामृत रूपी रचनाओं को एक जगह सूचीबद्ध करने का संकल्प लिया । इस क्रम में जनकपुर के संतों द्वारा रचित रचनाओं के साथ-साथ मैथिलीभाषा में भी जिन कवियों द्वारा सीता राम का गुण-गान हुआ है, उन मनीषियों की रचना को भी रखने में मैं अपना अहो- भाग्य मानता हूँ ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि, जनकपुर का सन्त-साहित्य के अध्ययन और मनन से हमारे कलुष दूर हो जाऐगें । कलिप्रभाव कम होगा । लोगों में साधु, संत के प्रति आस्था और विश्वास का वातावरण बनेगा । आपस में फैल रहे इर्ष्या-द्वेष का अन्त होगा । समाज में मानवीय गुणों का विकास होगा । जीवन जीने की कला आएगी ।

इस संत साहित्य में इक्यावन (५१) सन्तों का उल्लेख है । जिसमे २५ संत-साहित्यकार चर्चित है । सन्त-साहित्य के अध्ययन से हमारे आन्तरिक और वांह्य परिवेश स्वच्छ होंगे । सत्संग (साधु-समागम) की भावना का विकास होगा । परोपकार की भावना जगेगी । प्रभु श्रीराम में भक्ति होगी । जनकपुर का सन्त- साहित्य मिथिला से सम्बन्ध रखता है । मैथिली मिथिला की भाषा है । मैथिली भाषा सरल, समृद्ध तथा लालित्यपूर्ण है । इस सन्त- साहित्य के बहुत से सन्त मैथिली भाषा के अच्छे ज्ञाता थे । सन्त साहित्य के विकास से मैथिली साहित्य-भण्डार समृद्ध होगा । इसमें जितनी रचनाऐं हैं, उनके रचनाकार संस्कृत-वाङ्मय से प्रभावित हैं । संस्कृत, हिन्दी, नेपाली आदि भाषाओं की जननी है । संस्कृत- साहित्य में वाल्मीकीय रामायण का मूर्धन्य स्थान है । जितने भी सन्त हुए हैं, वे वाल्मीकि रामायण से प्रभावित हैं । यह सन्त-साहित्य संस्कृत वाङ्मय की उदात्त भावनाओं से अत्यधिक प्रभावित है । मुझे विश्वास है कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDP

सन्त-साहित्य के विकास से संस्कृत- साहित्य के विषयवस्तु प्रचारित-प्रसारित होंगे । क्योंकि संस्कृत साहित्य परोपकाराय सतां विभूतयः, सर्वे भवन्तु सुखिनः' आदि के आधार पर विश्व में विख्यात है । मानसिक विकृतियों से अलग सम्पूर्ण धरती को मानवता के धरातल पर देखने का प्रयास ही जीवन जीने की कला है । अपनी भावनाओं का पवित्र और उपकारी समर्पण सन्तसाहित्य के द्वारा इन मनीषी कवियों ने किया हैं । हिन्दी-साहित्य में आज पाश्चात्त्य संस्कृति का प्रभाव अत्यधिक वढ रहा है । यह सन्त-साहित्य हिन्दी साहित्य में बढ रही कुरीतियों, असहिष्णुताांओं तथा कुप्रभावों को रोकने में सहायक सिद्ध होगा । आज सर्वत्र हिंसा, अशान्ति व्याप्त है । सन्त-साहित्य के अध्ययन से देश में वढ रही अशान्ति दूर होगी । समाज में सद्भावनाओं का विकास होगा । जिस तरह- सूर, तुलसी, कवीर, नानक आदि सन्त कविओं की प्रेरणामयी कविता समाज को सुख शान्ति दे रही है । उसीप्रकार यह सन्त-साहित्य समाज के लिए वरदान सिद्ध होगा । यह सन्त-साहित्य व्यक्ति और समाज को नैतिक, चरित्रवान, धर्म और कर्त्तव्यनिष्ठ बनाने में सहायक सिद्ध होगा । जिसकी आवश्यकता आज अपरिहार्य है । भौतिकवाद को, अध्यात्मवाद के माध्यम से हानिकारक होने में रोक लगाएगा, यह सन्त-साहित्य । भाषिक रूप से हिन्दी वाङ्मय के विकास में एक इँटा और जोडेगा । विषयवस्तु की दृष्टि से मैथिली-साहित्य और नेपाली साहित्य को भी समृद्ध बनाएगा । साधु, सन्त, चरित्र और नैतिकता के धनी होते हैं । उनकी रचना के माध्यम से इन मानवीय गुणों का मैथिल एवं नेपाली समाज में प्रचार-प्रसार होने से नेपाल के हिन्दी भाषा और मैथिल समाज में परिष्कार की अपेक्षा है । साधु-सन्तों का जीवन और व्यवहार समाजवादी होता है – समतावादी होता है । इस समतावाद का उदय और प्रचार-प्रसार इसके पाठकों में होगा । यह मेरा विश्वास है इससे द्वेष और इर्ष्या कम होगी । साहित्य दानव को मानव बनाता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

है । नेपाली समाज वास्तव में मानव समाज बने, यह मेरी इच्छा है । इस सन्त-साहित्य के अध्ययनं से यह सम्भव है, यह मेरा विश्वास है । न होने से कुछ होना अच्छा है, इस कथन के आधार पर हमने जनकपुर के सन्त-साहित्य के विषय में लेखनी को व्यावृत किया है । इसमें कितनी सफलता हमें मिली है । पाठक लोग ही बताएँगे । इस के सुधार और परिष्कार की कितनी आवश्यकता है यह भविष्य और पाठकों के सुझाव हीं कराएँगे ।

अन्त में मैं इस पुनीत कार्य में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग करने वाले महानुभावों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए तथा श्रीराम के ये वचन उद्दृत करते अपनी लेखनी को विराम देता हूँ-

निसिचर हीन करउँ मही, भुज उठाइ पन कीन्ह ।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ-जाई सुख दीन्ह ॥

रा. मा. अ. का.

अस्तु !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE

विषय-सूची

क्र.सं	शीर्षक	पेज नं.
	प्रथम-पराग	
१.	मिथिला	१
२.	मिथिला शब्द का शाब्दिक तथा तात्त्विक अर्थ	४
३.	मिथिला का क्षेत्र	५
४.	मिथिला में जनकपुर का स्थान	५
५.	जनकपुर के चतुष्कोण में शिवलिङ्ग स्थापना	१२
६.	जनकपुर की प्रसिद्धि	१३
७.	जनकपुर धाम	१३
८.	मोक्षधाम के रूप में जनकपुर	१४
९.	श्रीजनक की वंशावली	१५
१०.	श्री मिथिलेशजी महाराज के नाना आदि सम्बन्धियों का संक्षिप्त वर्णन	१७
११.	रामशब्दका अर्थ	१८
१२.	सीता शब्दका तात्त्विक अर्थ	१८
१३.	सीता और राम के सम्बन्ध	२३
१४.	सम्बन्ध स्वरूप	२३
१५.	मिथिला और अयोध्याका सम्बन्ध	२४
१६.	गिरिजा स्थान (फूलहर)	२७
१७.	अहल्या (अहिल्या) स्थान	२७
१८.	मिथिला में धनुषा	२८
१९.	सन्त	२९
२०.	सन्त-साहित्य	३०
२१.	श्रीसूरकिशोर दासजी	३०
२२.	मामा प्रयागदास	३३
२३.	रामप्रियाशरण "प्रेमकली"	३५
२४.	महात्मा रामस्नेहीदास (लताजी)	३६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

२५. विश्वेश्वर गिरी ३७
२६. श्रीजनकराज किशोरीशरण 'रसिक अली' ३७
२७. काष्ठ जिह्वा स्वामी ३८
२८. महात्मा रामशरण ३९
२९. सीतारामशरण (रामरसरंगमणी) ३८
३०. सियालालशरण 'प्रेमलता' ४१
३१. पं. श्रीअवधकिशोरदास (प्रेमनिधिजी) ४३
३२. "प्रेमलता" ४५
३३. पं. उर्मिलाकान्तशरण (ज्योतिषी) श्रीरामानन्द आश्रम, जनकपुरधाम ४६
३४. रामायणी रामचरित्रदास 'श्रीनिधि' (विहारकुण्ड, जनकपुरधाम) ४७
३५. श्रीराम कृपालुशरणजी, अग्निकुण्ड झुलनकुंज, जनकपुरधाम ४८
३६. श्रीजनकराज किशोरीशरणजी महाराज (श्रीरसिक अलीजी) ४८
३७. श्रीरामदासजी (मूल) ५०
३८. श्रीसाधूरामजी ५१
३९. श्रीजगन्नाथदासजी ५१
४०. गुप्तरामजी महाराज रसिक-भवन रामकुंज-जनकपुर (अग्निकुंड) ५२
४१. "श्रीवैदेही शरणजी- श्रीजनकपुर, युगल किशोर कुंज" ५३
४२. स्वामी रामचरणदास (आचार्य जी महाराज) ५४
४३. स्वामी प्रेमदास महाराज जी "दूधमती" जनकपुरधाम ५५
४४. श्रीमोदलताजी ५६
४५. स्वामी पं.रामरुप दासजी ६२
४६. अनन्त विभुषित श्री बल्लभाचार्य ६४
४७. बाबा नारायणदासजी, रत्नसागर ६५
४८. पं.श्रीरामदुलारी-शरण 'रूपलता' सुन्दर सदन अग्निकुण्ड, जनकपुर ६६
४९. पं. अवधकिशोरदासजी ६७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDP

५०. वेदान्ती वैदिक पं. स्वामी श्रीरामसेवक दास (अवधेश कवि) ६७
५१. कथाकार संत रामटहल शरण 'शास्त्री' ६८
५२. महन्थ गोकुल गिरि ७०
५३. परमहंस श्रीरामशरण जी महाराज ७०
५४. सन्त-तस्मैया-बाबा ७१

द्वितीय-पराग

५५. श्रीस्वामी सियाराम दासजी महाराज (सीतामढी के सिद्ध बाबा) ७२
५६. श्रीनवलकिशोरशरणजी "फूलबाबा" (श्रीपरमहंस आश्रम सीतामढी) ७३
५७. सियाराम सरूपशरण "सुहागलता" जी महाराज सदुगुरु निवास सीतामढी ७४
५८. मौनी बाबा ७५
५९. श्रीमत्परमहंस परिब्राजकाचार्य वेदोपनिषद्भाष्कर श्रीब्रह्मनिष्ठ स्वामी श्रीभगवदाचार्यजी महाराज ७६
६०. रामकृपालु शरण जी ७९
६१. पं.राम स्नेही दास ७९
६२. भजनानंदी स्वामी रामशरणदास ७९
६३. स्वामी श्रीराम गुलाम दास मधुकर (नारद) ८०
६४. भालु खोला के श्री नागा बाबा ८१
६५. परमसिद्ध पुरुष कलना के "परमहंस बाबा" ८३
६६. १०८ स्वामी श्रीवासुदेवाचार्य जी महाराज (दार्शनिक सार्वभौम) ८४
६७. १०८ श्रीमान् महन्त लषण नारायण दास जी महाराज ('विद्याविनोद' वैष्णव भूषण) ८५
६८. १०८ श्री स्वामी परमहंस रामहृदय दासजी ८६
६९. स्वामी वजरंगदास जी महाराज ८६
७०. श्रीसद्गुरुशरण "मधुरलता" सीतामढी जनकपुर ८८
७१. श्रीभारतेन्दु-बाबु की जनकपुर यात्रा ८९
७२. विद्यापति (मैथिल कोकिल) ९४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

७३. मंडनमिश्र ९७
७४. पं.रमाकान्त झा ९८
७५. जनकपुर के कुटियों की जनसंख्या तथा साधुसन्त ९९
७६. श्रीजनकपुरधाम के प्रमुख मेले ९९
७७. रामनवमी १००
७८. श्रीजानकी नवमी १००
७९. विवाह-पञ्चमी १०१
८०. झूला १०२
८१. मध्यम तथा अन्तर्गृही परिक्रमा १०२

तृतीय- पराग

८२. श्रीजनक मन्दिर १०३
८३. श्रीजानकी मन्दिर १०३
८४. श्रीसुनयना मन्दिर १०५
८५. विवाह-मडवा (मण्डप) १०५
८६. श्रीराम मन्दिर १०५
८७. श्रीलक्ष्मण मन्दिर १०५
८८. देवीमन्दिर (राजदेवी) १०५
८९. सङ्कट मोचन १०६
९०. श्रीरत्नसागर मन्दिर १०६
९१. श्रीदशरथ मन्दिर (महाराज सर) १०६
९२. रामानन्द आश्रम १०७
९३. रामानन्दद्वार १०७
९४. ब्रह्मचर्याश्रम १०८
९५. श्रीरसिक और कृपा निवास १०८
९६. रंगभूमि १०९
९७. जनकपुर का राममन्दिर, महंथ परम्परा और नामावली १०९
९८. जानकी मन्दिर महान्त(महन्त) परम्परागत नामावली ११०
९९. गंगासागर ११०
१००. धनुष सर १११

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE

१०१. अरगजासर	१११
१०२. महाराजसर	११२
१०३. रत्न सागर	११२
१०४. दीर्घिकासर	११२
१०५. विषहरा सर	११२
१०६. पदप्रक्षालन तीर्थ (गोरधोई पोखरी)	११३
१०७. पुरन्दरसर	११४
१०८. मुरली सर	११४
१०९. अग्निकुण्ड	११४
११०. विहारकुण्ड (श्रीजानकी ह्रद)	११५
१११. ज्ञानकूप (विद्याकूप)	११५
११२. दूधमती गंगा	११६
११३. अक्रूरकूप	११७
११४. सतानन्दकूप	११७
११५. जनक कूप	११७
११६. रामानन्द साहित्य-माला द्वारा प्रकाशित पुस्तकें	११७
११७. लेखक की स्वरचित कविताएँ	१२४
प्रतिभा (नेपाली) में	१२४
सीते नैहर उजरल तोर (मैथिली) में	१२५
११८. समापनोक्ति	१२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रथम - पराग

१. मिथिला

जाता सा यत्र सीता सरिद मल जला बाग्वती यत्र पुण्या ।
यत्रास्ते सन्निधाने सुर नगर नदी भैरवो यत्र लिङ्गम् ॥
मीमांसा-न्याय बेदाध्ययन-पटुतरैः पण्डितैं मण्डिता या
भूदेवो यत्र भूपो यजन बसुमती सास्ति मे तीरभुक्तिः ॥

मिथिला राज्य की स्थापना के सम्वन्ध में विद्वानों, इतिहास कारों तथा अन्य अन्वेषकों के विचार, तर्क एवं अनुमान के आधार पर मिथिला राज्य के वारे में जो कुछ तथ्य समेट सका हूँ वह जिज्ञांसुओं के सामने रखना चाहता हूँ । त्रेता युग में मिथिला और उसकी राजधानी जनकपुर का अस्तित्व भू-मण्डल में सर्वविदित हो चुका था । मिथिला राज्य होने से वहुत पहले यह प्रदेश निर्जन वन के रूप गें विख्यात था । माध्रव विधेय ने यज्ञद्वारा इस भूमि को पवित्र कर अन्वेषित किया । कुछ दिनों के वाद यह जयन्तपुर के नाम से विख्यात हुआ । सूर्यवंशी राजकुमार निमी (नेमि) को वुलाया गया और उन्हें इस प्रदेश का राजा वनाया गया । नेमि निःसन्तान थे । राज्य का उत्तराधिकारी दिए विना राजा का अन्त होना पाप समझा जाता था । इसीलिए नेमि के पार्थिव शरीर को मथकर एक तेजस्वी वालक का जन्म कराया गया, जो मिथि नाम से ख्याति प्राप्त किया । उन्होंनें अपने राज्य का नाम मिथिला रखा । उस समय मिथिला की सीमा दक्षिण में गंङ्गानदी, पूर्व में कोशी, उत्तर में हिमालय पर्वत तथा पश्चिम मे गण्डकी नदी तक फैला हुआ था –

गङ्गा हिमवतोर्मध्ये नदी पञ्च दशान्तरे ।
तैर्भुक्तिरिति विख्यातः मिथिलापरमपावनी ॥

मिथिला माहात्म्य ।

मिथि राजा पराक्रमी तेजस्वी प्रजावत्सल, विद्या एवं विद्वानों का आदर करने वाला न्यायप्रिय राजा था । उसके राज्य में मिथिला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

धन-धान्य एवं ऐश्वर्य से भरपूर रहता था । यही कारण था कि मिथिवंशीय राजा लोग मिथिला को धनधान्यपूर्ण विद्वानों की कर्मस्थली एवं ऋषिमुनियों का तपःस्थल के रूप में संरक्षण देता गया । इसी वंश में राजा देवरात हुए जिन्होंने शिव धनुष पाया था । इसी वंश के राजा जनक एक ऐसे प्रजावत्सल राजा हुए जिन्हें लोग प्रत्यक्ष जनक ही समझते थे । उन्हीं के वाद इनकी वंशावली में जनक जोडा जाने लगा । राजा सीरध्वज "जनक" के समय में मिथिला का नाम बहुत चर्चित रहा । वैसे तो मिथिला के सम्बन्ध में ये वातें भी कही जाती हैं- कि "मथ्यन्ते यत्र रिपवः सा मिथिला"- यहाँ के लोग तपश्चर्या के द्वारा काम, क्रोध, मोह, पाखण्ड और मात्सर्य को जीत कर –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥ की सर्वोदय भावना से सवों के कल्याण में अपने को लगाते थे । राज-काज की भाषा संस्कृत थी । ग्रामीण लोग मैथिली भाषा बोलते थे । मैथिली भाषा की अपनी स्वतन्त्र लिपि थी और वह आज भी है । मिथि वंशी राजा लोग शैव धर्म में अपनी आस्था रखते हुए भी अन्य धर्मों के प्रति उदार देखे गये हैं । सीरध्वज राजा जनक को विदेह, मिथिलेश आदि के नाम से भी जाना जाता है । ये वड़े दार्शनिक थे । इनके समय में मानव जाति को दासता से मुक्ति मिली थी । समाज में सुखशान्ति, समुन्नति, उच्चवैभव प्राप्त हुआ । जहाँ सत्यकाम, जावाली, अरुपा, गौतम्, सम्येताकेतु, याज्ञवल्क्य, पं.शतानन्द, अष्टावक्र, गार्गी और मैत्रेयी आदि ऋषियों, ऋषिकाओं एवं विद्वानों द्वारा ज्ञान और दर्शन का विकास हुआ । मिथिला को शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता और ज्ञान का केन्द्र माना जाता था ।

मिथिला भूमि की विशेषताएँ अद्भुत हैं- इसी भूमि से जगज्जननी-जानकी का आविर्भाव हुआ । इसी भूमि में राजा जनक, महर्षि याज्ञवल्क्य, गौतम, कणाद्, वोधायन, मंडन मिश्र, कुमारिलभट्ट,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

उदयनाचार्य, वाचस्पति, विद्यापति, अयाचिमिश्र, गंगेश आदि विभूतियाँ उत्पन्न हुए और अपने ज्ञान दीप से संसार को प्रकाशमय किया। मिथिला में शक्तिपीठों की कमी नहीं है। यह मिथिला शिव पार्वती का क्रीडा-स्थल, सीताराम की विहार भूमि, ऋषिमुनियों का साधनाक्षेत्र, ज्ञानी- विज्ञानियों की ऊर्बरा भूमि, साधु सन्तों का पावनपीठ तथा कवि-कोविद एवं लेखकों के लिए मनभावन स्थल विशेष बना रहा। गौतम ऋषि के त्याग और तपस्या से हरा-भरा यह मिथिला कला-कौशल तथा चित्रकला के साथ वास्तुकला में भी अद्वितीय था। असंख्य लुभावन पुष्करणियों तथा मठ-मन्दिरों से यह मिथिला महत्त्वपूर्ण एवं मन को हर लेने वाली थी। यहाँ वारहों मास हरियाली से युक्त सदावहार वन थे। जिसमें अनेकानेक महत्त्वपूर्ण एवं वहुमूल्य वृक्षों के साथ-साथ वर, पीपल, पाखड, आम, कटहल, लिची, जामुन, वैर, बडहर, आँवला, अमरुद, अनार, निंवू, केला तथा पपीते आदि फल युक्त वृक्षों को देख कर किस का मन नही लुभाता था। यहाँ की शुक, सारिका, तोते- मैनें तथा कोयल आदि खगकुल का गुञ्जन अन्तःकरण को छू लेता था। यहाँ की नर-नारियाँ सीधा-सादा, मुखों- पर मुस्कान लिए अतिथि सत्कार पर विशेष ध्यान रखती थीं। पुरुष धोती- कुर्ता तथा स्त्रियां साड़ी-चोली पहनना पसन्द करती थीं। भोजन में मुख्य दाल-भात, दही, चूडा के साथ-साथ विविध प्रकार के शाक-सव्जी होते थे। भांगको शिवबूटी समझ सेवन करने की परिपाटी थी। पर्व त्योहारों में- रक्षावन्धन, विजयादशमी, दीपावली तथा होली के अलावा चौठचन्द, तीज, अनन्त-चतुर्दशी, जितिया, कोजाग्रा, छठ, सामाचकेवा, वसन्तपञ्चमी(सरस्वती पूजा) आदि व्रत धूमधाम एवं आस्था के साथ मनाया जाता था।

त्योहारों में कृष्णाष्टमी, शिवरात्री, विवाहपञ्चमी, रामनवमी, सीतानवमी, मध्यमा-परिक्रमा का अपना अलग महत्त्व है। साँस्कृतिक कार्यक्रम में सीता-राम-संकीर्तन, हनुमानाराधना के साथ-साथ सलेस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेले एवं जरजटिन का भी अपना महत्त्व है। यहाँ के मठ-मन्दिर तथा घर-आँगन में नानाप्रकार के तुलसीवट मिल जाएँगें। गिरिजा स्थान, अहल्या स्थान ने तो श्रीराम का मन भी चुरा लिया था। गिरिजा स्थान के समीप में एक भव्य सुन्दर नाना प्रकार के फूलों से भरा हुआ पुष्प वाटिका थी जहाँ जनकनन्दिनी जी प्रतिदिन प्रातः आकर फूल चुनती थी, तथा सहेलियों के साथ गिरिजा पूजन करती थीं। कल्याणेश्वर, जलेश्वर, क्षीरेश्वर, धनुषा तथा वटेश्वर नाथ से रक्षित यह भूमि इतना आकर्षणयुक्त था कि विश्वामित्र जैसे ऋषिगण यहाँ आते ही रहते थे। ऋषि परशुराम का तो यहाँ तीर्थ स्थल ही था।

इस प्रकार मिथिला की संस्कृति, सन्तसाहित्य, सभ्यता, सत्यकाम और समभाव आज भी धरोहर के रूप में सुरक्षित है –

मिथिला के दही चूड़े कटहल आम।
वर्णत पंथ चले श्रीराम ॥

२. मिथिला शब्दका शाब्दिक तथा तात्त्विक अर्थ

मिथिला शब्द तीन अक्षरों का शब्द है। यह शब्द वेद मन्त्र से भी श्रेष्ठ है। मकार सृष्टिकर्ता (श्रीव्रह्म), थकार स्थिति(पालन कर्ता) श्रीविष्णु तथा लकार लयकर्ता (संहारकर्ता) श्रीमहादेवजी है। उन तीनों देवताओं की तीन शक्तियाँ यानी मकार का इकार (श्रीसावित्री) थकार का इकार यानी (श्रीलक्ष्मी) और लकार का आधार श्रीपार्वतीजी हैं। वैसे मिथिला का सामान्य अर्थ- मिथि राजा द्वारा स्थापित अति प्राचीन देश है, जहाँ अयोध्या के राजा राम का विवाह सीता के साथ हुआ था। रामायण के अनुसार राजा मिथि से मिथिला की उत्पत्ति कही जाती है।

पाणिनीय उणादि सूत्र मे 'मिथिलादयश्च' शब्द की व्याख्या मथ्यन्तेयत्र रिपवः सा मिथिला नगरी" के रूप में करते हैं अर्थात् वह देश मिथिला है जहाँ शत्रु का दमन किया जाता है। इतना ही नही क्योंकि कश्यां मरणान मुक्तिः तारक मन्त्रोपदेशतः अर्थात काशी में मरणशील

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

व्यक्तियों के कानों में तारक मंत्र (सीताराम) का उपदेश देते हैं। परन्तु मरणशील व्यक्ति मिथिला शब्द का उच्चारण से ही मुक्ति प्राप्त करते हैं। यथा - ॐ इत्येकाक्षरं व्रह्म व्याहरन् मा मनुस्मरन। यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमांगतिम् (गीता) इस प्रकार मरण के समय में ॐ उच्चारण होने से मुक्ति मिलती है। वह ॐ मिथिला शब्दका प्रतिपादक है। जैसे मकार सृष्टि कर्ता च (व्रह्मा) थकारः स्थिति पालक (विष्णु) लकारो लय कर्ता च (शंकर) स्वराः तेषां प्रर्वतकाः।

३. मिथिला का क्षेत्र

कौशिकीतु समारभ्य गण्डकी मधि गम्य वै।
योजनानि चतुर्विंशद् व्यायामः परिकीर्तितः॥
गंगा हिमवतोर्मध्ये नदी पञ्चदशान्तरे।
तैरभुक्तिरितिख्यातोः देशः परमपावनी॥
विस्तारः षोडशप्रोक्तः॥

मिथिला माहात्म्य के अनुसार प्राचीन मिथिला का भूभाग पूर्व में कौशकी नदी, पश्चिम में गण्डकी, उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में गंगा नदी वह रही है। पूर्व से पश्चिम ९६ कोष तथा उत्तर से दक्षिण ६४ कोष अर्थात् यह क्षेत्र १२५०० वर्गमील में फैला हुआ पाया जाता है। मिथिला माहात्म्य के अनुसार मिथिला के विविध वारह नाम प्रसिद्ध है -- (१) मिथिला (२) तीरभुक्ति (३) वैदेही (४) नैमिकारण्य (५) ज्ञानक्षेत्र (६) कृपापीठ (७) स्वर्णलांगल पद्धति (८) जानकी जन्मभूमि (९) विकल्मषा (१०) रामान्दकरी (११) विश्वभवानी और (१२) नित्य मंगला है। जिन में ९ नाम तो केवल विशेष मात्र है और तीन विदेह, मिथिला और आधुनिक तिरहुत शब्द प्राचीन तीरभुक्ति शब्द का ही अपभ्रंश रूप है।

४. मिथिला में जनकपुरका स्थान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिथिला भूमि की विशिष्टताएँ अद्भुत हैं । इसी भूमि से जगज्जननी जानकी का आविर्भाव हुआ । इसी भूमि में राजा जनक, महर्षि याज्ञवल्क्य, गौतम, कणाद, बोधायन, मण्डनमिश्र, कुमारिल भट्ट उदयनाचार्य, शंकर, वाचस्पति, विद्यापति, पक्षधरमिश्र आदि उत्पन्न हुए और अपने ज्ञानदीप से संसार को प्रकाशमय कर दिया ।

देवभूमि, तपोभूमि एवं महिमा मण्डित हिमालय की सगरमाथा, कंचनजंघा आदि देदीप्यमान चोटियां सुशोभित होते हुए मिथिला के अन्तर्गत उसके उत्तर पार्श्व में लम्बायमान विराजमान है । तीर्थ तथा सिद्धपीठ तो अनेकानेक है । कोशी और कमला नदियाँ मिथिला की मिट्टी को ऊर्वरा वनाती हुई वह रही है । संसार का सार, ज्ञान है । ज्ञान के भण्डार वेद हैं और वेदों का सार वेदान्त है । इस मिथिला भूमि में वेदान्त तथा दर्शन के ज्ञाता एवं मर्मज्ञ यत्र-तत्र पाये जाते हैं । ज्ञान जैसा पवित्र और रक्षक वस्तु और कोई नहीँ है ।

जनकपुर मिथिला की राजधानी थी । मिथिवंशीय राजा का यह कर्मक्षेत्र रहा है । सीरध्वज राजा जनकजी एक ज्ञानी पुरुष थे फिर भी यज्ञादि कर्मानुष्ठान हमेशा किया ही करते थे । ज्ञानी होते हुए भी कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वय अत्यन्त ही सुन्दर ढंग से किया है और वे विश्व के सामने योगेश्वर श्रीकृष्ण की भाषा (गीता) में निष्काम कर्म द्वारा संसिद्धि को पाने में एक उदाहरण के रूप में इतिहास प्रसिद्ध हैं । जनकपुर स्थित अग्निकुण्ड पर ज्ञानी होते हुए भी यज्ञादि कर्मानुष्ठान किया करते थे । केवल पौराणिक वचनों से नही अपितु आजतक जनकपुर का अग्निकुण्ड इसका प्रबल प्रमाण है । यहाँ पर ही कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वय राजा जनक ने किया था । जिसे देश-देश के मुनि और विद्वान् अपने-अपने संशयों को दूर करने के लिए आते थे और निःशंशय होकर जाते थे । जिसका विशद वर्णन उपनिषदों में याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों के संवाद में आया है । महर्षि शतानन्द और याज्ञवल्क्य यहाँ के ही दार्शनिक एवं विशिष्ट विभूति थे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIB

। दूसरा प्रसिद्ध दार्शनिक भगवान् श्रीबोधायनजी हुए, जिन्होंनें बोधायन-वृत्तिनाम का एक ग्रन्थ लिखा जिसमें मीमांसा की बहुत ही सुन्दर व्याख्या की गयी है । बोधायन वेदव्यास जी के प्रशिष्य हैं । यह पाराशर्य्य विजय में स्वामी रामानुजाचार्य जी ने भी कहा है ।

व्याकरण के सूत्रकार पाणिनि के गुरु 'वर्ष' और उनके छोटे भाई उपवर्ष थे । उपवर्ष शंकर स्वामी नामक द्विजवर के पुत्र थे । त्रिकाण्ड-मीमांसा दर्शन के सभी भाष्यकारों ने बोधायन को भगवान् कहकर सम्बोधन किया है । भगवान् बोधायन त्रिकाण्ड मीमांसा-दर्शन के ऊपर बृहद्वृत्ति ग्रन्थ तथा बोधायनश्रौतसूत्र, बोधायन धर्मसूत्र और बोधायनस्मृति आदि अनेकानेक ग्रन्थों की रचना करते हुए तथा उपदेश करते हुए अपने तपश्चरण में मग्न रहते थे । सन्यासग्रहण के उपरान्त उनका नाम "पुरुषोत्तमाचार्य" हो जाने पर भी भगवान् बोधायन नाम से ही प्रसिद्ध होते रहे । उनका प्रचार क्षेत्र विशेषकर यह जनकपुरधाम ही था । उन्होंने जनकजी की प्राचीन् पद्धति के अनुसार ही कर्म, ज्ञान और भक्ति (उपासना) का भी पूर्ण समन्वय किया । भगवान् बोधायन के प्रति दार्शनिक भाष्यकारों की इतनी ऊँची श्रद्धा थी-कि सभी उनके वाक्यों के उदाहरण देते थे । जैसे –

"भगवता उपवर्षेण इति हि भगवान् उपवर्ष" इस प्रकार इन्होंने अनेकों श्रौतस्मारतादि ग्रन्थों का प्रणयन कर समन्वय सिद्धान्त का प्रशस्त मार्ग प्रदर्शन किया है । जिसे विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त भी कहते हैं । मिथिला धन्य है– जिसमें यतिराज भगवान् बोधायन उत्पन्त हुए । ज्ञात होता है- कि स्वयं वादरायण भगवान् वेदव्यासजी अथवा उनके पुत्र श्री शुकदेव जी ने ही अवतार लिया हो । क्योंकि त्रिकाण्ड-मीमांसा दर्शन का ऐसा व्याख्याता दूसरा न कोई हुआ न तो कोई होगा ही–

धन्यासौ मिथिला यस्यां जज्ञे बोधायनो यतिः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यासो वा व्यासपुत्रो वा नान्यः कश्चन हीदृशः ॥

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी ने मिथिला (तिरहुत) की भूमिको तिलक स्वरूप एवं त्रिभुवन विदित कहा है । (भूमि तिलक सम तिरहुत त्रिभुवन जानिये (मानस) । अक्षरशः सही है । श्रीमिथिला में ही जगज्जननी श्रीजनकनन्दिनी के प्राकट्य से यह भूमंडल की तिलक स्वरूपा तो है ही सतयुग से आज तक महर्षि याज्ञवल्क्य, गौतम, कणाद, महाराज जनक, बोधायन, मंडनमिश्र, कुमारिल भट्ट, उदयनाचार्य, पक्षधर, मिश्र शंकर वाचस्पति, विद्यापति, आदि दर्शनिक महाविभूति एवं वाङ्मय-मूर्ति को उत्पन्न कर विश्व में विख्यात है । गोस्वामी जी ने श्रीअवध से बढकर श्रीमिथिला की भूरी-भूरी प्रशंसा की है । लोगों की धारणा है कि श्रीअवध मस्तक और श्रीमिथिला तिलक स्वरूपा है । श्रीअवध के राज्य को तथा श्री दशरथ जी के धन को गोसाँइ जी ने निम्न प्रकार से वर्णन किया है ।

"अवध राज सुरराज सिहाहिं, दशरथ धन सुनि धनद लजाहि" (अ.का.२२४) । यही इन्द्र जो श्रीअवध के राज्य के लिए ललचाते थे श्रीमिथिला में जाने से "जो संपदा नीच गृह सोहा, सो विलोकि सुर नायक मोहा" (बालकाण्ड) और जो धनद श्रीदशरथ जी के धन देखकर लजाते थे उनके समान धन मिथिला के एक वाणिंज्य के पास था-

धनिक वणिक वर धनद समाना,

वैठे सकल वस्तु लै नाना (वा.का.) मानस ।

जनकपुर के स्त्री-पुरुषों के विषय में श्री गोसाई जी ने कहा है -

पुर नरनरि सुभग सुचि संता ।

धरमशील ज्ञानी गुनवंता ॥ (वा.का.) ।

यहाँ के सभी लोग कर्म, ज्ञान और उपासना निष्ठ थे । यह कहिए कि काण्डत्रय निष्ठ थे । जिसका समन्वय भगवान वोधायन ने किया है । जनकपुर के नरनारियों को काण्डत्रयनिष्ठ होना स्वभाविक ही था । जव कि श्रीमिथिलेशजी विदेहराज स्वयं इसका ज्वलन्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MD

प्रमाण थे। जिनके विषय में गोसाईजी ने ये वर्णन किया है- धरम नय ब्रह्म विचारु।

यहाँ यथामति मोर प्रचारु॥ (वा.का.)।

लेकिन यह, ब्रह्म सुख सहसा परमानन्द सुख में जो भगवद्दर्शन से होता है परिणत हो गया-

इन्हहिं विलोकत अति अनुरागा।
वरवस ब्रह्मसुखहिं मन लागा॥ (वा.का.,मानस)

स्वयं श्री राघवेन्द्र भगवान् ने श्री जनक जी के विषय मे कहा है-

सुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी।
वोले सत्य सरल मृदु वानी।
विद्यमान आपुनि मिथिलेसू।
मोर कहव सव भाँति भदेसू॥ (अयोध्याकाण्ड मानस)

श्रीजनकपुर का महत्त्व इससे भी सिद्ध होता है कि श्रीअवध में श्रीभगवान् रामचन्द्रजी ने साठ हजार वर्ष तक केवल जलाहार और सात हजार वर्ष तक वायु के आहार कर तप करने पर मनु जी को श्रीदशरथ के रूप में जन्म लेने पर उनके पुत्र के रूप में दर्शन दिया था।

यथा – यहि विधि वीते वरषषट, सहस वारि आहार।
संवत सप्त सहस्त्र पुनि रहे समीर आधार॥
(वा.का., मानस)

भगत वछ्छल प्रभु कृपानिधाना।
विस्ववास प्रगटे भगवाना॥ (वा.का., मानस)

लेकिन जनकपुरधाम में वही भगवान की लीलायें हैं- कि विना तपस्या के ही भगवान राम जनकपुर वासियों के प्रेम को देखते ही आ गये –

देखन नगरु भूप सूत आए, समाचार पुरवासिन्ह पाये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धाये धाम काम सब त्यागी, मनहुँरंक निधि लूटन लागी ॥
(वा.का., मानस जनकपुर दर्शन) ।

अर्थात् विना प्रयास ही रूपलावण्य का भण्डार लूट रहीं है। यहाँ की देवियों के त्याग तथा "तत्सुखे सुखित्वम्" जिस को पराभक्ति कहते हैं। श्री पूज्यपाद गोसाँईंजी ने चरम सीमा में चित्रण किया है जो उनके इन चौपाइयों से स्पष्ट है –

निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई।
होहिं सुखी लोचन फल पाई ॥
युवतीं भवन झरोखन्हि लागीं।
निरखहिं राम रूप अनुरागीं ॥
कहहिं परसपर बचन सप्रीति।
सखी इन्ह कोटि काम छवि जीती ॥
देखि राम छवि कोउ एक कहई।
जोगु जानकी यह वर अहई ॥ (वा.का., जनकपुर दर्शन)

यह उत्कृष्टता तव समझ में आएगी जव आप दूसरी ओर व्रज कुमारिकाओं का कात्यायनी व्रतका अभीष्ट अपने सामने रखें।

यथा- कात्यायिनी महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्द गोप सुतं देवि पतिं में कुरु ते नमः ॥

अर्थात् हे कात्यायनि। हे महामाये। हे महायोगिनि। हे सवकी एक मात्र स्वामिनी। आप नन्दनन्दन श्रीकृष्ण को हमारा पति वनादीजिये। हे देवि। हम आप के चरणों में नमस्कार करती हैं।

श्री रामानन्दीय श्रीवैष्णव सम्प्रदाय का सिद्धान्त तथा व्यवहार अनादि काल से श्रुति-स्मृति सम्मत समन्वयात्मक राग द्वेष रहित रहा है। श्रीवशिष्ट, पराशर व्यास, शुकदेव, बोधायन आदि सभी पूर्वाचार्य ऋषि महर्षि हैं जिनको वैष्णव ही नहीं वैदिक भी अपना पथप्रदर्शक मानते है। इन्होंनें भगवान् के किसी नाम, रूप या भगवद्विभूति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MD

रूप किसी भी देवी देवता से विरोध नहीं किया है। भगवान वादरायण श्रीव्यासाचार्य का पुराण प्रणयन एवं भगवान् बोधायन (श्रीपुरुषोत्तमाचार्य) की उपर्युक्त ग्रन्थ तालिका से यह स्पष्ट है।

जनकपुर कुमारिकाएँ रामको देखते ही सीता के लिए यह वर उचित है, वह ईश्वर से प्रार्थना करती हैं। यह बर सीता को प्राप्त हो तो हम पूजन करेंगी। वे सभी व्रजकुमारिकाओं की तरह श्रीकृष्णजी को देखते ही हमारा पति वना दीजिए का, रट नहीं लगाती। यह है जनकपुर की शालीनता, संस्कृति, ज्ञान, वैभव, प्रतिष्ठा तथा यहाँ के अनुकरणीय चरित्र –

जुवतीं भवन झरोरवन्हि लागीं।
निरखहिं रामरूप अनुरागीं॥
देखी राम छवि कोउ एक कहई।
जोगु जानकिहि यह बरु अहई॥ (वा.का., जनकपुर)

जनकपुर के प्रायः सभी दार्शनिकों की यह परिपाटी आजतक चली आ रही है- कि देवविशेष के अनन्योपासक होते हुए भी देवतान्तरोपासन की निन्दा अथवा उनके उपासकों से राग, द्वेषादि नहीं करते। इस पद्धति के प्रवर्त्तक भी राजर्षि श्रीजनक, वेदज्ञ याज्ञवल्क्य और भगवान बोधायन माने जाते हैं। क्योंकि उन्होंने धर्मसूत्र और श्रौतसूत्र तथा स्मृत्यादि ग्रन्थो में विष्णु शिवादि की प्रतिष्ठा परिचर्यादि का समान रूप से विधान किया है।

जनकपुर की प्रथम विशेषता यह है कि प्राचीन से लेकर आज तक कभी धर्मनिरपेक्ष राज्य नही घोषित किया गया है। यहाँ आज भी हिन्दूराज्य नेपाल अपने धार्मिक प्रतिष्ठा से गौरवान्वित है। दूसरी विशेषता यह है कि यहाँ प्रारम्भ से आज तक कभी यवनों का राज्य नहीं हुआ है। तभी तो यवनों के डर से भयभीत होकर श्रीसूरकिशोर दास जी, श्रीअवध से श्रीमिथिला उसमें भी श्रीजनकपुर पधारे। तीसरी विशेषता जनकपुर की यह है कि यहाँ गौओं का वध नही किया जाता है और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न यहाँ के सरिताओं मे अन्य जगहों की भाँति खुलेआम मछलियाँ मारी जाती है। श्री जनकपुरधाम ज्ञान, भक्ति और कर्म का समन्वय स्थल रहा है। दर्शन एवं मीमांसा प्रधानपीठ है जिसको साधु-सन्त और दार्शनिक तथा अन्यान्य शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान् उक्त रूप से दर्शन के हेतु ललायित रहते है। परमात्मा वैष्णव, साधु एवं सन्तों द्वारा विश्व को विवेक और ख्याति से पूर्ण करें। चौथी विशेषता यह है कि जनकपुर के मठ-मन्दिरों में अन्य तीर्थ स्थानों की भाँति पण्डे और भीखमंगे नही रहते हैं। धर्म निरपेक्षता की घोषणा से विशेषकर जनकपुर क्षुब्ध और दुःखी है। इससे लाभ के वजाय हानि ही होगी। इससे हमारी अनादि परम्परा, और नेपाल के बहुमत पददलित हुए हैं। विश्व के एक मात्र हिन्दु राष्ट्र नेपाल की एक अपनी पहचान थी जो मिटने जारही है इस देशको हिन्दु राष्ट्र नेपालके रुप में रहना ही श्रेयस्कर रहेगा।

५. जनकपुर के चतुष्कोण में शिवलिङ्ग स्थापना

जनकपुर के उत्तर पूर्व कोण में मिथिलेश्वर पूर्व दक्षिणकोण में कल्याणेश्वर दक्षिण-पश्चिम में जलेश्वर (स्वयं स्थापित जलेश्वर शिवोऽहं), पश्चिम-उत्तर कोण में क्षीरेश्वर (सोमेश्वर) महादेव का मन्दिर स्थापित है।

६. जनकपुर की प्रसिद्धि

जनकपुर पाँच कारणों से प्राचीन से लेकर अव तक प्रख्यात एवं प्रसिद्ध है।

(१) श्रीइक्ष्वाकु महाराज के पुत्र श्रीनिमि महाराज ने घोर तपस्या की थी।

(२) प्राचीनकाल में सोने के खान होने के कारण यह सुवर्ण कानन (कांचनवन) संसार में प्रसिद्ध था।

(३) महाराज निमि ने एक नगर निर्माण किया और उसी नगर में उनके मृत शरीरको मथने पर एक मिथि नाम का पुत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIE

उत्पन्न हुआ जो मिथिला का राजा हुआ।

(४) श्रीनिमि के वंश में श्रीदेवरात हुए जिन्होंनें घोर तपस्या करके श्रीशङ्करजी से वरदान स्वरूप एक धनुष प्राप्त किया था।

(५) श्रीसीरध्वज(जनक) जी ने कन्या रूप में श्री जानकी जी को प्राप्त किया था।

वैवस्वत मनु के वंश में इक्ष्वाकु राजा हुए। उनके पुत्र का नाम श्रीनिमीजी था। श्रीजनक की पदवी के जितने भी राजा हुए उन सवों में प्रथम श्रीमिथिजी ही जनक नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्हीं के समय से श्रीजनक, मैथिल तथा विदेह की पदवी चली आ रही है।

७. जनकपुर धाम

"धन्यात्वं मिथिले देवि ज्ञानदे मुक्तिदायिनी।
रामस्वरूपे वैदेहि सीताजन्म प्रदायिनी॥"
"सच्चिद आनन्द धाम जनकपुर।
जेहि ध्यावत विधि हरिहर पुर॥"

सीतायन॥

"अनन्या राघवेणाऽहं भास्करेण यथा प्रभा"

श्रीवाल्मीकि-रामायण॥

श्रीपद ही से सब की शोभा, सो सीया ललाम।
सीय चरित ही धरे राम पर, ऋषि की यही कलाम॥

तीर्थ विग्रह प्रभु मूर्ति में- उज्जैन चरण, काँची पुरी मध्यभाग, द्वारिका नाभी, हरिद्वार हृदय, मथुरा ग्रीवा, मूलकाशी नासिका, और मस्तक अयोध्या माने जाते हैं। इसी प्रकार मिथिला को तीर्थों का तिलक कहा गया है–

"भूमि भाल जिय जानु तिलक रचना मिथिला है"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिथिला-विलास ॥

मिथिला सी मिथिला, सिय सी सिय, राम राम से कहते हैं ।
समता जोग न अपर देव त्रय जिन्ह की पद रज चहते हैं ॥

श्रीसीताराम-रहस्यदर्पण ॥

मिथिला के दही- चूड़े कटहल आम ।
वर्णत पंथ चले श्री राम ॥

खास जनकपुरधाम ५ मील गोलाकार परिक्रमा के भीतर फैला हुआ है । वेद उपनिषद् इतिहास-पुराण और लोक-प्रसिद्ध मिथिला नरेश की यह राजधानी है । महाराज निमि के वंशज मिथि राजा ने इसे सृष्टि के आरम्भ में वसाई है । शास्त्रानुसार जमुनी और दुग्धमती इन पवित्र दोनों नदियों के मध्य में यह जनकपुरधाम अवस्थित है । श्रीशुकदेव जी का सत्संग स्थान यही है । श्री ५ रणवहादुर शाहदेव के ही समय से जनकपुर जंगल से ग्राम के मंगल में परिणत हो गया था ।

मोक्षधाम के रूप में जनकपुर

पौराणिक तथा ऐतिहासिक मतानुसार जनकपुर उत्तम तीर्थ स्थल के रूप में तीर्थों का तिलक है । इसमें मनुष्य के सारे पापों को नष्ट करने की क्षमता है- क्योंकी यह पावन भूमि ही जानकी जी की जन्मभूमि है ।

यथा- अन्य स्थाने कृतं पापं, तीर्थस्थाने विनश्यति ॥
तीर्थस्थाने कृतं पापं वाराणस्यां विनश्यति ॥
वाराणस्यां कृत पापं मुक्तिक्षेत्रे विनश्यति ॥
मुक्ति क्षेत्रे कृतं पापं मिथिलायां विनश्यति ।
मिथिलायां कृतं पापं अन्तर्गृहे विनश्यति ॥
अन्तर्गृहे कृतं पापं वज्रलेपं भविष्यति ॥

इस प्रकार की दृढोक्ति और निष्कर्ष जनकपुर और मिथिला के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIB

महत्त्वको प्रमाणित करते हैं ।

९. श्रीजनक की वंशावली

विष्णु के पुत्र ब्रह्मा, ब्रह्मा के मरीची, मरीची के कश्यपजी, श्रीकश्यपजी के विवश्वान्, विवश्वान के मनु, मनु के इक्ष्वाकु, इक्ष्वाकु के निमि, निमि के मिथि, मिथि के जनक, जनक के उदावसु, उदावसु के नन्दिबर्धन, नन्दिबर्धन के सुकेतु, सुकेतु के देवरात, देवरात के वृह्द्रथ, वृहद्रथ के महावीर, महावीर के सुधृति, सुधृति के धृष्टकेतु, धृष्टकेतु के हर्यश्व, हर्यश्व के मरु, मरु के प्रतीन्धक, प्रतीन्धक के पुत्र कीर्तिरथ, कीर्तिरथ के देवमीढ, देवमीढ के महीध्रक, महीध्रक के कीर्तिरात, कीर्तिरात के महारोमा, महारोमा के स्वर्णरोमा, स्वर्णरोमा महाराज के तीन रानियाँ हुई । शुभजाया से सीरध्वज और कुशध्वज दो पुत्र । सदामहारानी से ५ पुत्र हुए यशध्वज, वीरध्वज, रिपुतापन, हंसध्वज और केकिध्वज महाराज हुए ।

सर्वदा महारानी से –

- शत्रुजित, यशःशाली, तेजःशाली, अरिमर्दन, विजयध्वज, महीमंगल, बलाकर चन्द्रभानु ।
- श्रीसीरध्वज महाराज की सुनयना तथा कान्तिमतीजी दो रानियाँ थीं ।
- श्रीलक्ष्मीनिधि जी तथा श्रीगुणाकरजी ये दो पुत्र । सीता जी तथा उर्मिला जी दो पुत्रियाँ हुई ।
- श्रीकुशध्वज महाराज के सुदर्शना महारानी तथा सुभद्रा महारानी दों महारानियां थीं ।

- श्रीनिधि जी, श्रीनिधानक जी ये दो पुत्र तथा माण्डवी, श्रुतिकर्ति ये दो पुत्रियाँ हुई । काठमाण्डौं के राजा धर्मपाल की मृत्यु के वाद सुधन्वा राजा हुआ जो सीता स्वयंवर में भाग लेने जनकपुर आते समय कुशध्वज के हाथों मारा गया कुशध्वज काठमाडौं के राजा हुए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

। उनके पुत्रों ने हजारो वर्ष तक यहाँ का शासन चलाया ।

सर्वदा महारानी के पुत्र तथा पुत्रवधु

यशध्वज महाराज की महारानी श्री सुचित्राजी से पुत्र श्रीधीरवर्णजी एवं सुषमाजी, परमाजी, स्नेहपराजी तीन पुत्रियाँ हुई ।

वीरध्वज महाराज के सुखवर्द्धिनीजी, सहज सुन्दरीजी, रति मोहीनीजी ये तीन महारानियाँ तीन पुत्र और पुत्रियाँ हुई । सुखवर्द्धिनी महारानी के पुत्र श्रीदेवयानीजी, पुत्री उमंगाजी । सहज सुन्दरी महारानी के पुत्र आज्ञा पारजी, पुत्री तरंगाजी हुई । श्रीरति मोहिनीजी के पुत्र श्रीवंश प्रवीणजी, पुत्र श्रीमोहिनीजी पतोहु मदनमालतीजी हुई ।

श्रीरिपुतापन महाराज की महारानी श्रीसुवृत्राजी, पुत्र आज्ञा प्रवीणजी, चित्रभानुजी, तथा पुत्री क्षेमाजी हुई । श्रीहशरवजी महाराज की महारानी श्रीक्षेमवर्द्धिनीजी, पुत्र श्रीप्रेम निधिजी, पुत्री शुभशीलाजी हुई ।

श्रीकेकिध्वज महाराज की महारानी श्रीचन्द्रकान्ताजी, पुत्र श्रीसेवापरजी, श्रीविहारिणीजी, श्रीमाधुर्याजी, श्रीशत्रुजित महाराज की महारानी श्रीचन्द्रकान्तिजी, पुत्र श्रीश्रृंगार निधिजी, पुत्री श्री चारुशील हुई । श्रीयशःशाली महाराज की महारानी श्रीविदग्धा जी, पुत्र श्रीअंशपरजी, पुत्री श्रीलक्ष्मणाजी हुई ।

श्रीतेजःशालीमहाराज की महारानी श्रीविशालाक्षीजी, पुत्र श्रीसुलोचनाजी, पुत्र श्रीअनूपनिधिजी हुए । श्रीअरिमर्दन महाराज की महारानी आगरी, श्रीअनूपनिधिजी हुए । श्री अरिमर्दन महाराज की महारानी आगरीजी, श्रीसुभद्राजी, और उनसे पुत्री श्रीहेमाजी हुईं । श्रीविजयध्वज महाराज की महारानी अशोकाजी उनसे युक्ता उदयप्रभा नाम की पुत्री उत्पन्न हुई । श्रीप्रतापन महाराज की परम सुशीला महारानी श्रीविनीताजी, उनके पुत्र श्रीक्षेमानिधि जी, पुत्रीमती सुभगाजी हुईं । श्रीमहिमंगल महाराज के महारानी मोदिनी जी उनके पुत्र श्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIB

मंगलनिधि जी, पुत्री श्रीवरारोहाजी, हुईं। श्रीवलाकर महाराज की महारानी श्रीशोभनांगीजी, उनके पुत्र शीलनिधिजी, पुत्री पद्मगन्धाजी हुई। श्रीचन्द्रभानु महाराज की महारानी श्रीचन्द्रप्रभाजी उनकी पुत्री श्रीजनकदुलारीजी तथा चन्द्रकलाजी हुई।

१०. मिथिलेशजी महाराज के नाना आदि सम्बन्धियों का संक्षिप्त वर्णन।

विकाशा नाम की नगरी का राजा श्रीभूरिमेधा महाराज हुए। उनके श्रीसुमालजी, तथा कुण्डलजी दो पुत्र हुए। श्रीभूरिमेधा महाराज की श्री सुधाग्रा महारानी से श्री सुनयना जी, श्रीकान्तिमती जी ये दो पुत्रियाँ हुई। उनदोनों को श्री भूरिमेधा महाराज ने श्रीसीरध्वज महाराज के लिए अर्पण कर दिया। श्रीसुनयना जी से अवनिकुमारी सीता जी पुत्री तथा श्रीलक्ष्मीनिधिजी सत्पुत्र हुए। श्रीकान्तिमती से पुत्र गुणाकरजी, पुत्री उर्मिलाजी हुई।

भूरिमेधा महाराज के छोटे भाई श्रीज्ञानमेधा हुए। उनकी गुणाग्रा महारानी से श्रीवीर और श्रीकान्त ये दो पुत्र हुए। इन्हीं महारानी से श्रीसुदर्शनाजी, सुभद्राजी दो पुत्रियाँ भी हुईं। उन दोनोंका विवाह कुशध्वज महाराज से हुआ। सुदर्शनाजी से पुत्री माण्डवीजी, पुत्र श्रीनिधिजी, तथा सुभद्रा महारानी से पुत्र निधानक जी एवं पुत्री श्रीश्रुतिकीर्तिजी प्रसिद्ध हैं।

विडालिका नाम की नगरी के राजा श्रीधर महाराज हुए। उनकी महारानी सुकान्ति जी हुई। इनसे श्री कान्तिधर और यशोधर नाम से दो पुत्र हुए तथा श्रीसिद्धिजी, श्रीवाणीजी, श्रीनन्दा जी, श्रीऊषाजी ये चार पुत्रियाँ हुईं। श्रीलक्ष्मीनिधिजी को श्रीसिद्धि जी, श्रीगुणाकरजी को श्रीवाणीजी, श्रीनिधिजी को श्रीनन्दाजी, और श्रीनिधानकजी को श्रीऊषाजी प्रदान की गई।

वारहल नाम के नगर के राजा वृन्दारकजी महाराज हुए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उनके वंश में अर्क भास्वर महाराज हुए । जिनकी महारानी श्री जाज्याजी हुई और उनके बलायतजी तथा श्रीवलोन्नायजी दो पुत्र हुए । शुभजाया नाम की पुत्री हुई जो श्री हृस्वरोमा महाराज से विवाही गयी । इन्हीं शुभजाया महारानी से सीरध्वज तथा कुशध्वज दो पुत्र रत्न उत्पन्न हुए । महोद्धि के किनारे पूर्व में एक वारधान नाम का वड़ा भारी नगर था । वहाँ के एक राजा श्रीविश्वकायजी महाराजजी हुए हैं । उनके श्रीसदाजी और श्रीसर्वदाजी ये दो पुत्रियाँ हुई । उन दोनो पुत्रियों का विश्वकाय ने श्रीह्रस्वरोमा महाराज को दान किया । श्री सदाजी और श्रीसर्वदा जी के पुत्र पाँच आदि का नाम पूर्व में आ चुका है ।

शास्त्र ज्ञान के बिना मनुष्य अन्धा होता है ।

११. रामशब्दका अर्थ

रमन्ते योगिनो यस्मिन इति रामः ॥

रामशब्द 'रमु' धातु में घञ प्रत्यय लगाकर बना है । इसका विग्रहगत अर्थ हुआ ऋषिकर्त्तृक रमणाधिकरण । अवश्य ही ऋषि-मुनि लोग रामका ध्यान कर उस में रमते हैं । 'रमणं रामः' भी होता है । जिसका प्रयोग 'क्रीडा' के अर्थ में होता है । रसिक राम- भक्तों के विचार में- राम के अलौकि सौन्दर्य में जीव मात्र को रमाने की जो अद्भुत क्षमता है उसी के कारण उनका नाम 'राम' पड़ा है । इस विग्रह से निष्पन्न राम शब्द की 'कृत्तादित. सूत्र से प्रतिपादित सेता चेती है । भग (तेज) विशेष के वाचक राम की अर्थवत्' सूत्र से ।

१२. सीता शब्दका तात्त्विक अर्थ

सीता का अर्थ है- अपनी मधुर चेष्टाओं से (प्रियतम)को वश में करने वाली । क्षिनोतिवशं करोति स्वचेष्टया भगवन्तं सा सीता । इस शब्दको त्रि रणात्मक माया का स्वरूप माना गया है । सीतोपनिषद्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

में कहा गया है- कि सीता शब्द में सकार विष्णु का, ईकार माया का, तकार मोंक्षप्रद शक्ति का तथा आकार अमृत का प्रकृति है। यह नाम अव्यक्त रूपिणी महामाया का व्यक्त विग्रह है। उन तीनों वर्णों के अनुसार 'सीता' के तीन रूप हैं- प्रथम शब्द- ब्रह्ममयी (मूल प्रकृति), द्वितीय- पृथ्वी पर जनक के द्वारा सीता (लांगल पद्धति) से उत्पन्न होने के कारण जानकी अथवा सीता और तृतीय अव्यक्त स्वरूपा साकेत विहारिणी सीता।

सी- इस पद के प्रेम पूर्वक सदा उच्चारण करने से मनुष्यों को विना अन्य साधनों के ही प्रेम, आनन्द, शान्ति तथा स्वभाविक विशुद्ध भाव की निःसन्देह प्राप्ति होती है।

ता- पद के उच्चारण से सत्व, रज, तम इन तीनों गुणरूपी समुद्र से पार कर देने वाला तीव्र वैराग्य और अनुराग की वृद्धि करने वाला जानिए- पुनः "ता" पदका नित्य उच्चारण करने से मिलन कराता है, और उन के वियोग से प्राप्त हुई सारी मानसिक व्यथाओं को दूर कर देता है – "श्रीसीतायै नमः"- यह मंत्र राज है।

श्री- समस्त गुण सम्पन्ना को ही श्री (जी) कहते हैं। सीतायै- जीव द्वारा किया हुआ- जो कुछ जप, तप, हवन वरुकृत है तथा दिया हुआ धनादिक दान एवं प्राप्त किया हुआ वैभव कौशल है, वह सव श्रीजानकी जी के लिए ही है अन्य किसी के लिए नहीँ- (यह मध्यम- सीतायै का अर्थ हुआ) नमः का अर्थ है जीव का नहीं, इसका तात्पर्य यह है कि इस त्रिलोक में जो कुछ भी है वह सव श्रीकिशोरी जी का है, जीवका नही (मानक-पीयूष)।

आदिकवि श्रीवाल्मीकि जी लिखते है कि, काव्य रामायणं कृत्सनं सीतायाश्चरितं महत् (वाल्मीकि १।४।९)। अर्थात् रामायण में श्रीसीताजी का ही महान् चरित है। मं.श्लोक ५ देखिए। गोस्वामी जी भी कहते है-

सती सिरोमनि सिय गुन गाथा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोइ गुन अमल अनूपम पाथा" (१।४२) ॥ इसी से उन्होंने श्रीसीता जी की वन्दनां श्रीराम जी से पहले की है। सरस्वती जी विशेष रूप से श्रीजी की सेवा करती हैं। यथा लहकौरि, गौरि सिखाव, रामहि सीय सन सारद कहैं। १।३२०। निष्कर्ष यह है कि राम चरित में श्री जी का चरित्र प्रधान है और बाणी जी प्रधान रूप से श्री जी कि सेविका है। वाणी श्री- किशोरी जी की और गणेश जी श्री राम जी के सम्बन्धी हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने भी गीता में कहा है-

अज्ञश्चाश्रद्धधान-श्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥४॥४०।

अर्थात् अज्ञानी श्रद्धारहित और संशय युक्त पुरुष विनाश को प्राप्त होता है और संशययुक्त पुरुष के लिए न सुख है, न इह लोक है और न परलोक ही है। महाभारत शान्ति पर्व तुलाधर जावालिसंवाद में कहा है कि यदि कर्मो में वाणी के दोष से मंत्र का ठीक उच्चारण न हो सके और मन की चंचलता के कारण इष्टदेव के ध्यान मे विक्षेप आ जाय तो भी यदि श्रद्धा हो तो वह उस दोष को दूर कर देती है। यथा- पितरो वाक्य मिच्छन्ति भाव मिच्छन्ति देवता। किन्तु श्रद्धा के न रहने पर केवल मंत्रोच्चारण और ध्यान से ही कर्म की पूर्ति नहीं होती। श्रद्धा के विना कर्म व्यर्थ हो जाता है। ध्यान और जप से भी श्रद्धाका महत्व अधिक है। श्रद्धादेवी धर्म की पुत्री है, विश्व को पवित्र एवं अभ्युदयशील बनाने वाली है। सावित्री के समान पावन, जगतको उत्पन्न तथा संसार सागर से उद्धार करने वाली हैं -

"श्रद्धा-धर्म-सुता देवी पावनी विंश्वभाविनी।
सावित्री प्रसवित्री च संसारादवतारणी ॥४४-४६॥

श्रद्धा और विश्वास की आवश्यकता है, क्योंकि इनके विना मानस एवं श्री राम भक्तिका मिलना दुर्लभ हैं –

यथा- जे श्रद्धा संवल रहित नहि सन्तन्हकर साथ।
तिन्ह कहं मानस मानस अगम अति ।१।३८।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MD

विनु विश्वास भगति नहि तेहि विनु द्रवहिं न राम ७९० ।
"कोई सिद्धि विना विश्वास के नहीं होती ।
यथा- कवनिउ सिद्धि कि विनु विश्वासा ॥७९०॥

वेद, शास्त्र या गुरु उसके जानने की उत्कट इच्छाको "श्रद्धा" कहते है । यथा- पार्वती शंकरौ बन्दे श्रद्धा विश्वास रुपिणौ । विद्वान कहते हैं कि किसी सद्गुण वा अच्छाई पर मन खिंचकर उसे स्वयं अपने तक अथवा अपने को उस तक पहूँचना चाहे वा वैसा ही होने की कामना करे तो, इस अभिलाषा को "श्रद्धा" कहते है । इसी तरह विश्वास = वह धारणा जो मन में किसी व्यक्ति के प्रति उसका सद्भाव, हितैषिता, सत्यता, दृढता आदि अथवा किसी सिद्धान्त आदि सत्यता या उत्तमता का ज्ञान होने के कारण होती है = किसी वात पर अथवा किसी व्यक्ति आदि पर पूरा भरोसा हो जाना, उस पर मन का वैठ जाना भाव यह कि जैसे विना विश्वास के भक्ति नहीं होती, वैसे ही शिवजी की कृपा के विना भक्ति नहीं होती

यथा- "विनु विश्वास भगति नहिं...... ७९० ।
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी ।
सो न पाव मुनि भगति हमारी ॥१।१३८"।

ईश्वर को देखना चाहते हो तो तर्क वितर्क को छोड़ श्रद्धा-विश्वास से काम लेकर भजन करो । पृष्ठ २३, २५ तक- २८१ ।

"सीता" यह पद "षिञ्(सि) बन्धने" में "क्त" प्रत्यय लगने से वनता है । "सीता" नाम केवल हल जोतने के समय प्रकट होने से ही नहीं है । यह तो ब्रह्म में विकार कहाँ ? सृष्टि कहाँ ? जगत् कहाँ ? श्रीसीता जी ब्रह्म के बँधने का कारण हुई, वह सगुण हुआ, प्रेम पाश मे बंधा, राम हुआ, इसीलिए आगे कहते है "रामवल्लभाम्" एक विद्वान् गौड़ जी ।

श्रीराम जी तथा उनका नाम अनादि है रघुकुल में अवतीर्ण होने के पूर्व भी "राम" नाम था । प्रह्लाद जी सत्ययुग में उसे जपते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थे, पर जव वे ही रघुकुल में अवतीर्ण हुए, तव अनुभवी महर्षि वशिष्ठ ने उनका वही नामकरण किया। वैसे ही "सीता" नाम अनादि है। मनु शतरूपा को जब ब्रह्म ने दर्शन दिया तब भी "श्रीसीताराम" रुपसे स्थित थे। अनादि "सीता" नाम की व्युत्पत्ति गौड़ जी ने ऊपर वतायी है। वही सीता जव अबतरी तव उनका वही नाम यहाँ के अनुभवी मुनि ने रखा। परन्तु यहाँ उस नाम की व्युत्पत्ति इस प्रकार हुई कि महाराज सीरध्वज जनक जी पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञभूमिको जव हल से जोत रहे थे उस समय हल के अग्र भाग से कन्या श्रीसीता जी प्रकट हुई। यथा- "तस्य पुत्रार्थ यजन कृषतः सीरे सीता दुहिता समुत्पन्ना ॥२८॥ (विष्णु पु.अंश ४ अ. ५)" द्वितीया भूतले हलाग्रे समुत्पन्ना" (श्री सीतोपनिषत्)" अथ में ...कृषतः क्षेत्रं लाङ्गलादुत्थिता ततः ॥१३॥ क्षेत्रं शोधयतः लब्धा नाम्ना सीतेति विश्रुता (वाल्मी.१।६६)। अर्थात् श्रीजनक महाराज श्रीविश्वामित्र जी से कह रहे हैं कि हल से क्षेत्रको जोतते समय 'सीता' नाम की कन्या मुझ को मिली। श्रीमहारानी ने अनुसूयाजी से (वाल्मी.अ. ११८।२८ में) यही वात कही है। इन उद्धरणों से यह नही सिद्ध होता कि इसी कारण से यह नाम "सीता" पड़ा, परन्तु आनन्द रामायण सार काण्ड अ, ३ में इसी कारण से 'सीता' नाम होना कहा है। यथा- सीराग्रान्निर्गता यस्मात् सीतेत्यत्र प्रगीयते ॥७४॥ अर्थात् हल के अग्र भाग से उनका प्राकटय हुआ अतएव लोग उनको 'सीता' कहे हैं। उसका तात्पर्य यह जान पड़ता है कि हल से जो लकीर खेत में पड़ी है उसका नाम 'सीता' है। और ये वहीं लकीर से हलाग्रद्वारा प्रकट हुई इससे 'सीता' नाम पड़ा।

'सीता' नाम से बन्दना करने के और भाव ये कहे जाते हैं कि यही प्रधान नाम है। जब मनुशतरूपाजी के सामने प्रथम आप का आविर्भाव हुआ तव यही नाम प्रकट किया गया था। यथा-राम वाम दिसि सीता सोहे' (ख) यह ऐश्वर्य सूचक नाम हैं। जहाँ-जहाँ ऐश्वर्य दर्शित करना होता है वहाँ वहाँ इस नाम का प्रयोग होता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

उन्हें 'राम' की वल्लभा कहकर जनाया कि ये वहीं 'सीता' है कि जिनके अंश मात्र से असंख्यों उमा, रमा, ब्रह्मणी उत्पन्न होती है और यह है कि इनकी कृपा विना श्रीराम रूपकी प्राप्ति नही हो सकती। 'सीता' नाम भी अनेक अर्थोंका बोधक है। यथा- लक्ष्मी, सीता, उमा, सीता मन्दाकिनी माता। इन्दिरा भुस्तथा सीता सीतोक्ता जानकी बुधैः (अनेकार्थे) पं. रामकुमार।

१३. **सीता और राम के सम्बन्ध** (तारक मंत्र- "सीताराम")

सीताराम में वही सम्बन्ध है, जो सांख्य के पुरुष और प्रकृति में है। सीता मूलप्रकृति है और राम आदिपुरुष। उनकी साकेत-लीला प्रकृति के साथ पुरुष की नित्य क्रीडा का प्रतिरूप है। उनका सम्बन्ध नित्य है। जिस प्रकार सूर्य में प्रकाश, रत्न में मूल्य और राजा में कीर्ति रहती है, उसीप्रकार श्रीरामजी में श्रीकिशोरी जी रहती हैं और श्रीकिशोरीजी मे श्रीराम जी रहते हैं।

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वार्ग्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ बन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥ रघुवंशसर्ग १

इस श्लोक के समान सीता जगत के माता और राम पिता के समान है। इन दोनों में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। वे युगल-जोड़ी के रूप में अवस्थित हैं। इस यथार्थता को सब कोई नहीं जानते विद्वत्वर्ग या भगवान् ही जानते हैं।–

कविः करोति काव्यानि रसं जानन्ति पण्डिताः।
सुन्दर्या अपि लावण्यं पतिर्जानाति नो पिता ॥

शिव पार्वती के वन्दनीय श्री सीताराम की महिमा और सम्बन्धको शिव के विना कौन कह सकता है।

१४. **सम्बन्ध स्वरूप**

सांसारिक सम्बन्धों की भाँति ही भक्त और भगवान् के बीच भी सम्बन्ध ५ प्रकार के होते हैं। ये हैं- मधुर, सख्य, दास्य, वात्सल्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और शान्त। यही भक्त के पंचरस कहे जातें हैं। दो से अधिक रसों की सदीक्षा देने की परिपाटी किसी सम्प्रदाय में प्रचलित नही दिखाई देती। रसिक सम्प्रदाय में इसके अपवाद केवल हनुमान् जी ही हैं। वे एकसाथ ही श्रृंगार-सख्य और दास्य इन तीनों रसों के आचार्य माने जाते हैं। जिनमें दास्य और श्रृंगार ऐसे परस्पर विरोधी रस भी हैं।

१५. मिथिला और अयोध्याका सम्बन्ध

सीताराम सीता मिथिला की गौरव है तो, राम अयोध्या का। सीता शक्ति है तो राम पुरुष हैं। एक के विना दूसरा नहीं रह सकता है। जिसप्रकार प्रकृति के विना पुरुष और पुरुष के विना प्रकृति एक दूसरे के अभाव में सृष्टि विकास करने में शक्तिहीन् हैं, निष्क्रिय हैं। इनदोनों का सम्बन्ध सदैव नित्य है। सीता आदि शक्ति इसके वाद राम पुरुष शक्ति है। यहीं कारण हैं कि पहले सीता तव राम सीताराम पूर्ण होता है। एहलोक में दोनों अर्द्धनारीश्वर की भाँति अभिन्न हैं। दानों मिलकर ही पुरुषत्व और एकत्व को प्राप्त करता है। इस प्रकार मिथिला एवं अयोध्याका सम्बन्ध विशिष्टाद्वैत ही समझना चाहिए। अयोध्या के सन्त मिथिला के सन्तों को जिस दृष्टि से देखते हैं उसे आज भी कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। शत्रुओं को मथने-पराजित करने के अर्थ में मिथिला, न के नापि 'योद्धं, शक्या' के अर्थमे अयोध्या बनी। समान होने के कारण ही इनका सम्बन्ध बना।

यदि सीता जी नहीं होती तो जो रूप मर्यादित ढंग से राम का निरख पाया है वह वैसा न होकर किसी दूसरे रूप और ढंग का होता। श्रीसीता और राम के जीवन में जो घटनाएँ घटी, वे मर्यादा के दृष्टान्त हैं। व्यवहारिक जीवन में इनदोनों का प्रभाव इतना पड़ा कि भारत नेपाल में तो कौन कहे, विश्व के अनेक देश रुस, चीन, जापान जैसे देश में भी रामचरित मानस का अनुवाद कर उसकी जनता में अनुकरणीय काम हुआ है। यह गौरव मिथिला और अयोध्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MDI

का मात्र न होकर नेपाल और भारत का है। आज के भौतिकवादी युग में भी मानसिक, साँस्कृतिक एवं आध्यात्मिक भूख जाग चुकी है। तभी तो मिथिला और अयोध्या का सम्मिलित मर्यादा विश्व के नर और नारियों को प्रभावित कर अपनी ओर खींच रही है।

अतः मिथिला के विना अयोध्या और अयोध्या के विना मिथिला का वस्तुतः कोई चमत्कार नही। मिथिला के दही-चूड़ा का वर्णन श्रीराम द्वारा होने से, वह आज भी कनकभवन मे सुवह के जलपान में चूड़ा और दही का प्रधानभोग के रूप में है –

मिथिला के दही-चूड़े कटहल आम।
वर्णत पंथ चले श्रीराम॥

साकेत प्राप्त करने का प्रमुख द्वार हैं मिथिला और अवध। शरीर के कपाल का भाल यदि अवध है तो उस भाल की शोभा तिलक यानी मिथिला है। तिलक, मिथिला का प्रतीक है और भाल श्रीअवध का यही कारण है कि मिथिला के पुरुष, भक्त तो क्या, यहाँ की देवियाँ भी तिलक लगाती है। जो अन्य पुण्य स्थल के नारी जगत् में देखना तो क्या, सुना भी नही जाता। तिलक मिथिला का प्रतीक यानी श्रीकिशोरीजी का ही स्वरूप है। यहाँ की देवियाँ श्रीजानकीजी की ही स्वरूपा मानी गयी हैं।

कनक-भवन के निर्माता वही व्यक्ति हैं, जो जनकपुर में भी श्रीसीताजी का परम सुन्दर भव्य राजमहल नौलखा मन्दिरवनवाया। दोनों के निर्माता ओरछा नरेश श्रीप्रताप सिंह जी थे। शासन का मुख्य अंग धर्म है। धर्म के अभाव में राज्य का संचालन ठीक रूप से हो ही नही सकता। इस भौतिक युग में धर्म ही एक ऐसा माध्यम है जो सभी तरह के अधर्म और अनैतिक प्रवृति को आगे बढने से रोक सकती है। महात्मा गाँधी जी का भी कहना है कि जब सभी अपने धर्म का पालन करें तो कोई कभी दुःखी नहीं रहेगा। मनुष्य का वास्तविक धर्म है मानवकल्याण। कर्म और धर्मका समन्वय ही तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिथिला और अवध है। इस के अभाव में साकेत की इच्छा करना केवल कल्पना हीं, नही वरन् विल्कुल ही मिथ्या है।

जिसप्रकार माता के इतिहास में श्री कौशल्याका अद्वितीय ऊँचा एवं पवित्र स्थान है। उसी प्रकार समस्त भूमि में श्रीमिथिला की भूमि की है। मिथिला में जानकी के प्रति स्नेह तथा आदरभाव कितना है यह इस वात से ही स्पष्ट हो जाता है कि जानकी जी की उत्पत्ति मिट्टी से हुई है इसका प्रतीक मिथिला के घर-घर में कुलदेवता मिट्टी की ही बनायी जाती है। इस हालत में पवित्र मिट्टी की पूजन न हो तो और हो किसकी। जनकपुर में स्थित राजदेवी की पीड़ी भी मिट्टी की ही है। मर्यादापुरुषोत्तम राम माता कौशल्या के उदर से उत्पन्न हुए जव कि जगज्जननी ब्रह्मविद्या, रामाभिन्ना भगवती सीताजी का प्राकटच श्रीमिथिला भूमि से हुआ, न कि माता सुनैना जी से।

यह मिथिला केवल वैष्णवों के लिए नहीं किन्तु शैवों के लिए भी अत्यन्त उपादेय एवं हृदय है। इसका कारण ब्रह्मज्ञानी अनन्य शैवराजर्षिजनक जी एवं उनके पूर्वजों के द्वारा भी अन्तर्गृह राजप्रासाद के पंचकोशी पुरी के चारों प्रमुख द्वार पर श्री कपिलेश्वर नाथ, श्रीकूपेश्वर नाथ आदि तथा श्रीकल्याणेश्वर नाथ, मनःकामना (गिरिजा मनःकामना नाथ), श्रीजलेश्वर नाथ, क्षीरेश्वर नाथ तथा पिनाकेश्वर नाथ जिसे प्रचलित शब्द द्वारा स्थापित रामेश्वरम् के समकक्ष हैं।

इस प्रकार मिथिला रामभक्तिरूपी गंगा एवं शिवभक्तिरूपी यमुना के समन्वय केन्द्र होने के कारण तीर्थ राज प्रयाग के समान अभी भी शोभा प्राप्त कर रही है। इसका प्रत्यक्ष और प्रवल प्रमाण श्रीतुलसी कृत "मानस" है। इस प्रकार का अद्वितीय संमिश्रण श्रीअवध में नही देखा जाता है, जो श्रीमिथिला में प्रत्यक्ष है। इसका विकास, व्यवस्थापन और प्रचार-प्रसार सरकारीस्तर पर करना अत्यावश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

१६. गिरिजा स्थान (फूलहर)

यह स्थान जनकपुर से दक्षिण में पड़ता है। यह भारत के (विहारप्रांत) के मधुवनी जिला में पड़ता है। यहाँ गिरिजा-भवानी का सुन्दर मन्दिर है। राजा जनक का अतिविशाल और सुन्दर पुष्पोंद्यान यहीँ था। पुष्पचयन के क्रम में सीता और राम में परस्पर भेंट और प्रथम दर्शन यहीँ हुए थे। जानकीजी अपनी सहेलियों के साथ पुष्पचयन और गिरिजापूजन के लिए नित्य आया करती थीं। यह स्थान पौराणिक धरोहर के रूप में स्थित हैं। यहाँ एक भव्य अतिरमणीय पुष्करिणी भी है, जो दर्शनार्थी के मन को मोह लेती है। जनकपुर से गिरिजा स्थान जाने में कोई कठिनाई नहीं है। मध्यमा परिक्रमा के समय यात्रियों का द्वितीय पड़ाव भी यहीँ रहता है।

१७. अहल्या (अहिल्या) स्थान

यह स्थान मिथिला के तपोभूमि के रूप में विख्यात रहा है। यहीँ गौतम ऋषि अपनी भार्या अहिल्या के साथ तपश्चर्या में लीन रहते थे। ऋषि गौतम ब्रह्म-मुहूर्त में स्नान करने निकल जाते थे। इसी मौका का लाभ उठाकर इन्द्र और चन्द्रमा ने छल करके अहिल्या के साथ दुर्व्यवहार किया, जव इसका पता गौतम ऋषि को लगा तो उन्होंने इन्द्र और चन्द्रमा को शाप देदीया। अहिल्याको 'पत्थर हो जाओ' कहकर शान्त हो गये। पत्नी के अनुनय-विनय करने तथा सत्य बात से अवगत हो जाने पर उन्होनें अहिल्या से कहा- त्रेता युग में श्रीराम इस रास्ते जनकपुर आऐगें, उस समय तुम्हारा उद्धार होगा। विश्वमित्र के साथ श्रीराम, लक्ष्मण जनकपुर धनुषयज्ञ देखने आए तो, रास्ते में इस निर्जन स्थान को देख विश्वामित्र से पुछा। विश्वामित्रद्वारा पूरी जानकारी मिलने पर वे पाषाणमयवनी अहिल्या को अपने चरणस्पर्शद्वारा पूर्वरूप में ला दिये।

यह स्थान अभी भारत के (विहार राज्य के) दरभंगा जिला के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्तर्गत पड़ता है । सीतामही से रेलद्वारा कमतौल पहुँचकर वहाँ जाया जा सकता है । यह स्थान अत्यन्त रमणीय और दर्शनीय है ।

१८ मिथिला में धनुषा

यह स्थान जनकपुर से १२ माइल उत्तरपूर्व की और है । इसके सम्बन्ध में पौराणिक मत यह है कि सीता स्वयंवर में श्रीराम ने शिवधनु तोड़ा उस का एक खण्ड उसी घना जंगल में गिरा था वह यहाँ अभी प्रत्यक्ष दर्शनीय है साथ ही इसमें विशेषता यह है कि यह अभी भी फैंलता नजर आता है । इसका दर्शन रामेश्वर के दर्शन के समान है । धनुषा पहाड़ के नजदीक है । यात्रियों के विश्राम के लिए यहाँ एक धर्मशाला भी है । इस धर्मशाला को पटना के एक ताराचन्द्र जी ने १९९६ साल में यात्रियों की सुविधा हेतु बनवाया था । माघ महिना में यहाँ मकर का मेला लगता है किन्तु खासकर प्रत्येक रविवार को काफी भीड़ हुआ करती है । कुछ विद्वानों का मत है कि धनुभँग इसी स्थान पर हुआ था । परशुराम ऋषि भी यहाँ पधारे थे । परशुराम तलाव यहीं है ।

धार्मिक चर्चा इस प्रकार हैं- महर्षि दधीचि के पवित्र अस्थियों (हड्डी) से विश्वकर्मा द्वारा निर्मित इस धनु से शिव ने त्रिपुरासुर का बध किया । एकवार शैव और वैष्णव भक्तों के आग्रहवश शिव-विष्णुका प्रणय-पूर्वक प्रेम युद्ध हुआ, उसी में विष्णु भगवान् ने शिवधनु को लीला मात्र से जड वना दिया और शिव जी उसे पुनः चढा न सके । प्रभु ने अपने अवतार में उसे तोडने का सन्देश देकर सुरेश्वर यह गोप्य कथा कहकर अन्तर्ध्यान हो गये । वही धनुष परशुराम द्वारा फिर विदेह-वंशीय महाराज देवरात को प्राप्त हुआ । शिव प्रसाद मानकर उसकी पूजा करते हुए शिरध्वज महाराज के समय में प्रभु ने अवतार लेकर उस को तोडा । तिव्बत और भूटान तक के लोग मनोकामना पूर्ति हेतु यहाँ आते है ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

श्रीरामस्य करस्पृष्टं धनुःखण्डस्य दर्शनम् ।
सर्वाघौघहरं पुसां सर्वकल्मषमार्जनम् ॥

इसीलिए कहा है । लोगों का कहना है कि धनुषयज्ञ के लिए विशाल मखशाला यहीं बनी थी ।

भगती हेतु सोई दीनदयाला ।
चितवत चकित धुनष मखशाला ॥

(रामचरित मानस, बालकाण्ड) ।

१९. सन्त

सन्तशब्द संस्कृत के सत्‌शब्द के बहुवचन 'सन्त' इसका तत्सम रूप है । साधु और सन्त को परिभाषा में बाँधना वडा कठीन कार्य है । प्रचलित रूप में साधु-सन्त सच्चरित्र, सज्जन, त्यागी, नैतिक, धर्मोपदेशक और सद्‌गुणी होते हैं । ये उदार चरित के "बसुधैव कुटुम्बकम्"- होते हैं । ये भोगविलास से पृथक रहकर त्याग तपस्या से अपने चञ्चल मन को कसलेते हैं । इन्द्रियों को अपने वश में करके सिद्ध पुरुष के रूप में समाज का कल्याण करते हैं । ईश्वर-भक्ति ही इनका कर्म होता है । लोगों में दयाभाव और मानवकल्याण ही इनका धर्म होता है । साधु-सन्त किसी खास वर्ग विशेष के परिधि में न बँधकर वे सवके, और सब उनके होते हैं । इनका स्वभाव समदर्शी, परोपकारी, दीन-दुखियों का सहयोगी, मृदुभाषी और हितैषी होता है ।

आर्यावर्त को साुध-सन्तों का देश ही कहा जाता है । यहाँ एक से एक त्यागी साधु सन्त हुए हैं- वाल्मीकि भारद्वाज, दधीची, विश्वामित्र, याज्ञवल्क्य, वेदव्यास, सुकदेव, बुद्ध ,रामानुज, माध्वाचार्य, रामानन्द, कवीर, सूर, तुलसी, नानक, सूरकिशोर दास, सुक्रात प्रभृति के साधु- सन्तों से हमारा इतिहासपुराण भरा पड़ा है । देश तथा समाज सेवक के रूप में महात्मा गान्धी, विनोवाभावे और कृष्णप्रसाद भट्टराई जैसे सन्तों ने भी अपने मन, वचन तथा कर्म से देश तथा समाज में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदर्श स्थापित किया है-

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ।
मनस्यन्यद् वचस्यंन्यत् कर्मण्यन्यद दुरात्मनाम् ॥

(पञ्चतन्त्र)

इसप्रकार साधुसन्त माया मोहरहित अनिन्दक होते हैं । उनमें अपना और पराया का भेद भाव नहीं रहता है । वे किसी पर नाराज नहीं होते । होते हैं भी तो क्षणिक ।

सोना सज्जन साधुजन, टुटि जुरै सौ वार ।
दुर्जनकुम्भ कुम्हार के एके धक्का दरार ॥

(साधुवचनं) ।

२०. सन्त-साहित्य

सन्त-साहित्य-अपनं अहं को छोडकर प्रभु गुणगान में मस्त होते हैं वे सन्त है तथा उनके द्वारा रचित रचना-संग्रहको सन्त-साहित्य के नाम से जाना जाता है। इसमें प्रभुस्मरण प्रधान होता है ।

२१. श्रीसूरकिशोर दासजी

परिचय –

श्रीसूरक्रिशोर जी वात्सल्यनिष्ठा के भक्त थे । राजपुताने से आकर इन्होंने मिथिला में अपनी गद्दी स्थापित की थी । मामा प्रयागदास इन्हीं के शिष्य थे । ये अग्रदासजी के गुरु भ्रश्ता, किल्ह स्वामी के पौत्र शिष्य थे । इनका जन्म जयपुर में शनाढ्य व्राह्मणवंश में हुआ था । जयपुर नरेश रामसिंह के दुर्व्यवहार से जव मथुराचार्य गलता छोडकर चित्रकूट चले गये तो इन्हें वहुत दुःख हुआ । इन्होंनें उसी समय में गलता छोड़दिया और अपने वड़े गुरुभाई के साथ लोहार्गलसीकर चले आये । वहाँ सन्तों की किसी जमात में रहने लगे . आरम्भ से ही जानकी जी में इनकी वात्सल्यनिष्ठा थी । अतएव जव कभी वाहर तीर्थाटन और सन्तसमागम् में घूमनें के लिए जाते तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

उनकी मूर्ति सदा साथ लिये रहते थे । और बाजार में जाकर उनके लिए खिलौने, मिठाइयाँ आदि खरीदा करते थे । ये सव वात्सल्यसूचक चीज भी इनके हितैषी साधुओं को जगन्माता में पुत्रीभाव रखकर उन्हे साथ लिये- इनका घुमना अच्छा न लगा । एक दिन उनलोगोंने वह मूर्ति इनसे छिनली । सूरकिशोर जी को इससे बड़ा दुःख हुआ । उसी व्यथा से उद्विग्न होकर वे मिथिला चले गये और वहाँ कुटी वनाकर 'पुत्री' के वियोग में साधनामय जीवन व्यतीत करने लगे । रसिक साम्प्रदायिक ग्रन्थों के अनुसार जानकीजी की वह मूर्ति मिथिला में पुनः प्रकट हुई । उसकी स्थापना करके वे अपनी मानस 'पुत्री' की सेवा में ही मग्न रहने लगे । इस घटनाका संकेत उनके एक छन्द में भी मिलता है जिसकी आरम्भिक पंक्तियाँ इस प्रकार है –

मिथिला कलिकाल ग्रसी सिगरी,
तब जानकी जू झटदै उघरी – मिथिला विलास पृ.४० ।

इसके पश्चात् मिथिला के तीर्थस्थलों का उद्धारकर उन्होंने उसकी मर्यादा पुनः स्थापित की । जानकीजी के प्रति वात्सल्य भाव रखने के कारण सूरकिशोर जी अपने को महाराज जनक का भाई और राम को अपना दामाद मानते थे । अतएव जव कभी वे अयोध्या जाते तो तत्कालीन सामाजिक मर्यादा के अनुसार नगर के भीतर अन्न जल नहीं ग्रहण करते थे । वे सरयूतट पर लकड़मंडी के पास ठहरते थे । जनश्रुति है- कि एकबार जव वे अयोध्या आये और कनकभवन में 'पुत्री' से भेट करने गये तो श्रीविग्रह को सोद एवं मैले वस्त्र धारण किये और आभूषण हीन देखकर बहुत दुःखी हुए । तत्काल ही वहाँ से मिथिला के लिए लौट पड़े । मार्ग में पुत्री की दशा से दुःखी और चिन्तित होने से कई दिन तक विना अन्न, जल ग्रहण किये चलते रहे । एकरात को जब वे पेड़ के नीचे सोये थे तो, कहते हैं कि सीता जी दिव्यवस्त्राभूषणधारण किये प्रकट हुई और पिता के पैर पकड़कर रोने लगीं । सूरकिशोर- जी का निम्नलिखित छन्द इसी घटना का सूचक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बताया जाता है-

उभै कुलदीप सिखामनि जानकी लोक अरु वेद की मेड न मेटी।
भरी सुख सम्पत्ति औधपुरी रजधानी सवै लछना सो लपेटी॥
करै मिथिला चित सूरकिशोर सनेहकी बात न जात समेटी।
कोटिन सुख्ख जो होइ ससुरारि तो वापको कौन नभूलति बेटी॥

मिथिला लौटने पर उन्होंने अपना सारा जीवन 'दामाद' और 'पुत्री' की उपासना में बिताया। सूरकिशोरजीने अपने इस वात्सल्यका आजन्म निर्वाह किया। दामाद के नाते, उन्होंने राम से परमपद तक की याचना नहीं की। इस विषय में रसिकों में उनका यह छन्द बहुत प्रसिद्ध है।

आपका 'मिथिला विलास' श्रीधाम के प्रति अनन्य अनुराग उत्पन्न करने वाला है। आपका विश्वास है कि हमारा भला तो श्री किशोरजी के नाते मिथिला में प्रकट होने से ही हो चुका, फिर श्रीरामका सहारा लेना कायरता है। जिनके कुल में सपूत नहीं उपजते उन्हे दामादों का भरोसा रखना पड़ता है –

मिथिलावासीराम सहायक हैं, तो उपासक कौन कहे भलकी।
जिनके कूलपूत सपूत नहीं, तेहि आस दमादन के बल की॥
मिथिला विलास पृष्ठ- ३५।

इनकी अधिकांश रचनायें फुटकर छन्दों के रूप मे मिलती हैं। "मिथिला-विलास" सरसछन्दों में वात्सल्यभाव की सुन्दर व्यञ्जना के साथ तत्कालीन ऐतिहासिक, एवं सामाजिक परिस्थितियों की भी झलक मिलती है। ग्रियर्सन ने १७०३ ई. तथा शिवनन्दलाल कर्ण महोदय ने इनका समय १७३० ई. निर्धारित किया है। इनका ग्रन्थ क्रमश. (क) मिथिला-विलास (ख) सुर भजनावली (ग) सीतायन है। कुछ विद्वानों की राय है- कि सीतायन का रचनाकार सूरकशोर दारा ही हैं। किन्तु आजकल के प्राप्त अंक में लेखक की जगह रामप्रिया शरणका नाम अंकित है। मेरे विचार में लेखक नहीं वरन् उधृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MD

वाले हैं। "रोहिणी खतिवडा" इनके मिथिला आगमन के कारणों का विश्लेषण करते हुए, समाज की इस अधोगति की ओर संकेत किया है –

कलिकाल बढयो दल जीति चढयो, सव वेद पुरान भए सिथिला।
साधु के ठौर असाधु बसै, सुथला जेइ ठौर भए कुथला।
वरनाश्रम धर्म विचार गए, द्विजतीरथ देवभये निथला।
रही ठौर न और कहूँ जगमे, तव सूर किशोर तकी मिथिला।

इस प्रकार मिथिला-विलास मिथिला और मैथिली के विलास हाव, भाव और सौन्दर्य एवं वासल्यका वर्णन करनेवाला सन्त्काव्य है।

२२. मामा प्रयागदास

परिचय –

ये महात्मा सूरकिशोर के साधक शिष्य थे। इसी नाते वे अपने को निमिवंशी और जानकीजी का छोटा भाई मानते थे। अपने इस भावुक और मानस सम्बन्ध से राम इनके वहनोई होते थे। अपने इस नातेपर इन्हें गर्व था। अयोध्या के सखाओं को ये मधुर गालियाँ देते थे। वहाँ के दास्य-भावना के भक्त तथा अन्य नागरिक इन्हें 'मामा' कहते थे। इसी कारण 'मामा प्रयागदास' के नाम से ये अधिक विख्यात थे। इनकी जन्मभूमि का पता नही चलता। 'रसिक' 'प्रकाश भक्तमाल' के अनुसार लड़कपन में हीं विरक्त होकर ये काशी तथा प्रयाग होते हुए मिथिला पहुँचे और महात्मा सूरकिशोर के शरणागत हुए। वहुत दिनों तक नबसखाके रूप में मिथिला के गाँवों मे वालकों के साथ खेलते रहे। जव बड़े हुए तो सूरकिशोरजी ने करवा लेकर अपनी पुत्री का हाल-चाल लेने के लिए इन्हें अयोध्या भेजा। अयोध्या पहुँचकर ये कनकभवन गये और 'चिउरा-मिठाई' भेंटकर अपनी 'वहन' से करवा माँग लिया। उसे लेकर एक नीम के पेड़ के नीचे रहने लगे। निमि वंश के होने से नीम वृक्ष से इन्हें सहज अनुराग था। अयोध्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

में प्रयागदास जी की तत्कालीन जीवन-चर्चा के सम्बन्ध में आज भी उनकी ये पंक्तियाँ लोगों को स्मरण है –

नीम के नीचे खार पड़ी है, खार के नीचे करवा ।
'परागदास' अलबेला सोचै, रामललाके सरवा ॥

इनकी विरक्ति-भावना अत्यन्ततीव्र थी । जव कभी अयोध्या में मेला लगता तो ये नगर छोड़कर रामघाट के पास खेतों मे जा रहते थे । मेलों को ये वैरागियों का प्रपंच कहा करते थे –

"मुड़ियों ने परपंच रचा है हमें काम के भेलों में ।
'परागदास' रघुवर को लैके, पड़े रहेगें ढेलों में ॥

अयोध्या में कई वर्ष निवासकर प्रयागदास गुरुका स्मरण करने पुनः मिथिला लौट गये । वहाँ से कुछ दिनो के वाद प्रयाग चले आये और त्रिवेणी के तटपर रहने लगे । एक दिन वहीं कथा में उन्होंने राम वनगमनका प्रसंग सुना । यह समाचार सुनते ही वे व्याकुल हो गये । कथावाचक से वारवार पूछने पर उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि उनकी 'बहन' समेत दोनों राजकुमार नंगे पैर ही वन को गये हैं । उनकी कोमलता का ध्यानकर प्रयागदास जी वेचैन हो गये ।

इसी समय किसी श्रद्धालु ने उन्हें कुछ द्रव्य दिया, उससे तीन जोड़े जूते और चारपाई बनवाकर, उन्हें शिर पर रखकर वन वासियों को ढूँढते हुए वे चित्रकूट पहूँचे । कई दिनों तक खोजने के वाद जव वहाँ कहीं भी उनका पता न चला, तो पंचवटी गये । सन्तों का विश्वास है- कि वहाँ दोनों वनवासी राजकुमारों तथा अपनी 'बहन' सीता जी को उन्होंने चारपाई समर्पित की और तीनों को अपनी हाथों जूता पहनाया ।

मामा प्रयागदास ने "जनकपुर के सरवा"का एक नवीन भाव प्रदर्शित किया । इस दृष्टि से सख्य सम्प्रदाय में इनका विशिष्ट स्थान है । इनके रचित कोइ ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, किन्तु ठेठ भाषा में इनकी जो उक्तियाँ प्रचलित है उनमें इनके नैसर्गिक भाव की एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

विचित्र मिठास पाई जाती है। जैसे –

परागदास जो पीपर होते, राघों होते भुतवारे।
आठ पहर छातीपर रहतें, वे दशरथ के पुतवारे॥
धुनि धुनि के सवा कहै महेसवा, पारनपावै सेसवा।
परागदास पहलदवा के कारण, रघवा होइगे वघवा॥

मामा प्रयागदास के सम्बन्ध में यह कथन है कि जनकपुर में एक ब्राह्मणी रहती थी उसका एक मात्र पुत्र प्रयागदत्त था। प्रयागदत्त कसार की पोटली लेकर अयोध्या चले त्रिलोचन स्वामी (अध्योध्या) से दीक्षित हो गये इससे प्रयागदत्त से प्रयागदास हो गये। अयोध्या के लड़के इन्हें मामा कहकर पुकारा करते थे। इन्हें भारतीय मजनू कहा जा सकता है। भाई मजनू यदी लैला के आशिक थे तो प्रयागदास जी अवध के छैला के। प्रयागदास जी जब डेढ या पौने दो वर्ष के हुए होगें, तो पढने मे इनका मन नहीं लगता था। तथापि, कुशाग्रवुद्धि होने के नाते अल्पकाल में ही उन्होंने सारस्वत, अमरकोश और मूहुर्त्तचिन्तामणि भी पढ ली थी।

भक्त सौरभ सम्पादक हनुमान प्र.पोद्दार।

२३. रामप्रियाशरण "प्रेमकली"

जन्म- १७६० साल- रचना- सीतायन।

ये मिथिला निवासी रसिक सन्त थे। युगलप्रियाजी ने इनकी कुटी माधौपुर में होनेका उल्लेख किया है।

(सीतायन मधुरवाल काण्ड पृष्ट ४१)।

इनके गुरु 'नेहकली' नामक कोइ रसिक महात्मा थे, जो उसीं प्रदेश के रहने वाले जान पड़ते हैं। भाव से अपने को सीताजी की सहोदरा वहन मानते थे। इस सम्वन्ध से वे अयोध्या में जाकर कुछ दिन तक रहे भी। इन्होंने रसिक सन्तों रामायण के आधार पर 'सीतायन' नामक एक विशाल प्रवन्धकाव्य की रचना की है। यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE

सात काण्डों में विभक्त है। जिनके नाम है- बालकाण्ड, मधुरमालकाण्ड, जयमालकाण्ड, रसमालकाण्ड, सुखमाकाण्ड, रसालकाण्ड और चन्द्रिका काण्ड इसकी रचना सं. १७६० (१७०३ ई.) है । विद्वान रोहिणी खतिवडा का कहना है कि रामप्रियाशरण जी सीतायन के लेखक नहीँ वरन लेखक सूरकिशोरदास से उधृत करने वाले हैं । इनकी अपनी रचना अभी तक अप्राप्य है श्रीरसिक संप्रदाय में) । प्राय रचना कवितावली तथा अनेक पद हैं, श्री "रसिक प्रकाश भक्तमाल" सीतायन में सीता जन्म पर सोहर गीत के कुछ अंश –

आज जनकपुर मंगल वाज् बधाय हो ।
चौदह भुवन सकल सुख, वृष गृह आय हो ॥
देव वधू समर नाचहि मंगल गावहिं हो ।
सियको चरण सरोजनि रवि सुख पावहिं हो ॥

छ खण्डों मे विभक्त इस ग्रन्थ में सीताजी की विशेष महिमा का उल्लेख है ।

२४. महात्मा रामस्नेहीदास (लताजी)

इनका जन्म सन् १९१७ उत्तरप्रदेशान्तर्गत श्रीसीतापुर मण्डल में हुआ था । आपने अयोध्या-निवासी श्रीहरिनारायणदास जी से प्रमोदवन में सन् १९३३ में राममंत्र की दीक्षा लेली थी । बाद में आपका निवासस्थान विहार कुण्ड (जनकपुरधाम) में हुआ । आप मेधावी थे । आपकी अलौकिक रचनाएँ निम्न प्रकार की हैं–

(१) श्रीजानकी चरितामृतम् ।
(इस में लगभग ६,५०० श्लोक है) ।
(२) श्रीकिशोरी सुमंगलम् ।
(३) सीतारामकृपाकटाक्ष-स्तोत्र ।
(४) श्रीकिशोरीजी की अद्भुत लीला ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: M

(५) श्रीसद्गुरु-मंगल-स्तोत्र आदि ।

२५. विश्वेश्वर गिरी

इन्होंने बृहत् विष्णुपुराण के आधार पर मिथिला महात्म्य की रचना की, जो अप्राप्य है ।

२६. श्रीजनकराज किशोरीशरण 'रसिक अली'

इनका जन्म काठियावाड़ मे सुदामापुरी के पास नागर ब्राह्मणवंश में हुआ था । बाहर-बाहर घूमते अयोध्या आ गये । कुछ दिन यहाँ ठहर कर मिथिला आ गये । और फिर आजन्म यहीं रहे संस्कृत, व्रज तथा अवधी तीनों भाषाओं में उन्होंने काव्य-रचना की है । उनके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या २४ है, जिनकी सूची इस प्रकार है –

(१) सिद्धान्त मुक्तावली ।
(२) सीताराम-सिद्धान्त ।
(३) आत्मसम्बन्ध-दर्पण ।
(४) आन्दोलनरहस्य-दीपिका ।
(५) तुलसीदास चरित्र ।
(६) विवेकसार-चन्द्रिका ।
(७) सिद्धान्तचौंतीसा ।
(८) वारहखड़ी ।
(९) ललित श्रृंगारदीपक ।
(१०) कवितावली ।
(११) जानकीकर्णा-भरण ।
(१२) सीताराम अनन्यतरंगिनी ।
(१३) श्रीसीतारामरहस्य-तरंगिनी ।
(१४) होलिका बिनोद ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MDF

(१५) वेदान्तसार सुभदीपिका ।
(१६) श्रुतिदीपिका ।
(१७) श्रीरामदास दीपिका ।
(१८) दोहावली ।
(१९) रघुवर-कर्णाभरण ।
(२०) मिथिला-विलास ।
(२१) अष्टयामप्रबन्ध-पद ।
(२२) बर्षोत्सव पदावली ।
(२३) जिज्ञासापंचम ।
(२४) अमररामायण ।

इनकी रचना सुललित, सरस, कोमलकान्त पदयुक्त है। ये रसिक स्वभाव के थे। इनके मधुर सम्भाषण से भक्त गण आत्म-विभोर हो उठते थे। इनके पद्य सौष्ठव माधुर्य गुण से युक्त हैं। इनके जन्म के बारे में सही तथ्य अवगत नहीं हो सका है। परन्तु उनका निधन सन् १९०९ ई. में हुआ था।

२७. काष्ठ जिह्वा स्वामी

ये रसिक रामभक्तों की श्रेणी में आते है किन्तु उनकी यह रसिकोपासना सरलीभाव से न होकर दास्यभाव से हुआ। स्वामी जी ने अयोध्या, मिथिला, चित्रकूट इन तीन तीर्थों की यात्रा भी की थी। उनके एक छन्द से ऐसी ध्वनि निकलती है कि मिथिला में वास ही नही वहाँ के श्रृंगारी सन्तोंका उन्होंने कुछ दिन सत्संग भी किया था। हिन्दी भाषा के प्रौढ कवि होने के अतिरिक्त स्वामी जी संस्कृत के भी प्रकाण्ड पण्डित थे। उनकी भाषा में भोजपुरी, खड़ी बोली और अवधी की खिचड़ी से एक अपूर्व मिठास आ गई है। जो इस काल के कुछ ही भक्तों की वाणी में मिलती है। अवतक उनकी निम्नलिखित कृतियों का पता चला है –

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: M

(१) रामायण परिचर्या ।
(२) विनयामृत ।
(३) पदावली ।
(४) रामलगन ।
(५) वैराग्यप्रदीप ।
(६) अयोध्याबिन्दु ।
(७) अश्विनीकुमार-बिन्दु ।
(८) गायबिन्दु ।
(९) जानकी-बिन्दु ।
(१०) पंचकोशमहिमा ।
(११) मथुराबिन्दु ।
(१२) रामरंग ।
(१३) श्यामरंग ।
(१४) श्यामसुधा ।
(१५) उदासी संत-स्त्रोत ।

२८. महात्मा रामशरण

ये महात्मा अवध प्रदेश के निवासी थे इनका अधिक जीवन मिथिला में ही वीता। ये मिथिला के हीं सन्तो में गिने जाते हैं। इनका जन्म अवध के तिलोई राज्य में तमसा के तट पर पण्डित- पुरवा नाम के ग्राम में आषाढ-शुक्ल द्वितीया सं.१८६४ (१८१७ ई.) को हुआ था। इनके पिता का नाम रामस्वरूप ज्योतिषी था। शैशवावस्था में ही माता इन्हें छोडकर परलोक चली गयी थी। दादी ने इनका पालन पोषण किया। १६ वर्ष की आयु में गृह त्यागकर तीर्थाटन को निकले। सर्वप्रथम प्रयाग गए वहाँ से अयोध्या आये फिर काशी गए और काशी से पुनः अयोध्या लौट गए। अयोध्या से चित्रकूट तथा पंचवटी में ठहरकर श्रीरवाधाम पहुँचे फिर तिरुपति गए। वहाँ से पुरी गए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और पुरी से मिथिला आए फिर अन्य जगहों में घूमते हुए जनकपुर आए। मिथिलाको अपना निवास वनाकर साधना करनेवाले सख्यभाववेशी सन्तों में महात्मा राम शरण का सर्वोच्च स्थान है। उनके रचित दो ग्रन्थ हैं- रामतत्व सिद्धान्तसंग्रह और मैथिलीरहस्य पदावली। फिर कुछ भावनात्मक रचनाओं का भी संग्रह किया। अवधी होने पर भी उनकी भाषा भोजपुरी और मागधी से प्रभावित है। उनकी रचनायें अधिकतर सोरह छन्द में लिखी गई है। जिनका विषय है - जनक का हलयज्ञ, जानकी जन्म तथा फुलवारीं लीला आदि। उनकी रचना के नमूना उदाहरणीय है-

हलवा जोतैते राजा जनक न ये हो राजा जनकन हो।
ललना अनुपम कन्या पाये सुमोद बढायेल हो॥
मास वैसाख शुल्क पक्ष नवमी न हो।
ललना सीतानाम धराये मुनिन गुन गायेल॥
वेदपुरान प्रसंसत जाहि प्रसंसत हो।
ललना सुनयना जू गोद खिलायिल हिये हुलसाइल हो।
रामशरण मिथिलेस द्वार पर मिथिलेस द्वार पर हो॥
ललना चहुँ दिसी मंगल चारु सु सोहर गायेल हो।

२९. सीतारामशरण (रामरसरंगमणी)

इनका जन्म चित्रकूट के दक्षिण रामपुर नामक ग्राम में वैशाख सं. १९१६ को हुआ था। इनके पिता वशिष्ठगोत्रीय सरयूपारीण ब्राह्मण अवध किशोरप्रसाद थे, और माता का नाम जगरानी देवी था। अपने जन्मस्थानका उल्लख करते हुए ये स्वयं कहते हैं –

चित्रकूट दक्षिण दिशा, योजन पंच प्रयान।
ग्राम रामपुर जन्म द्विज, दीन्हें राम सुजान॥

अयोध्या में १४ वर्ष तक साधना करके मिथिला आए और ८ वर्षों तक जनकपुर में तपोमय जीवन व्यतीत किया। मिथिला से पुनः अयोध्या लौटे और सीताकुण्ड पर रहने लगे। रसरंगमणीजी सरवाभाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

से आराध्य की उपासना करते थे। इनकी २७ रचनायें उपलब्ध हैं जो खण्ड तथा मुक्तक काव्य के रूप में लिखी गई है। उनकी रचनाओं की तालिका निम्नाङ्कित है –

(१) रामस्तवराज टीका।
(२) ध्यानमंजरी टीका।
(३) श्रीसीताराम मानसी सेवा।
(४) श्रीरामानन्दयशावली।
(५) श्रीहनुमत यज्ञ तरंगिनी।
(६) श्रीयुगल जन्म बधाई।
(७) सरयूरसरंग लहरी।
(८) बारहमासा महात्म्य।
(९) श्रीसीतारामनाम मंजरी।
(१०) श्रीरामलीला-संवाद।
(११) श्रीरामप्रेमपंच रत्न।
(१२) श्रीसीतारामप्रेम पदावली।
(१३) होलीविलास।
(१४) श्रीसीताराम शोभावली।
(१५) श्री सीताराम नखशिख आदि।

३०. सियालालशरण 'प्रेमलता'

प्रेमलता जी ग्वालियर के निवासी सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनका जन्म उसी राज्य के पनियार नामक गाँव में वि.सं.१९२८ (१८७१ ई.) के भाद्र महीना में हुआ था। पिता का नाम मौजीराम था। वे घर छोड़कर चित्रकूट गये और वहाँ से अयोध्या आए और फिर वहीं से मिथिला और काशी की यात्रा की। आप पर्यटन के वड़े शौकीन थे इसी से तो कभी अयोध्या, कभी मिथिला कभी काशी तो कभी प्रयाग आदि में जाते ही रहते थे। दैवयोग से एकवार आप काशी कें स्टेशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDR

पर उत्तरकर-रेलवे लाइन पार कर रहे थे कि, गाड़ी के इंजनका धक्का लगा और सं. १९९७ मे साकेत सिधार गये। आपका अधिकांश समय मिथिला के पावन भूमि में विचरण करते बीता। आपने ६० वर्ष तक ग्राम-ग्राम में कीर्तन मंडलियाँ स्थापित कीं दो हजार, दो सौ से अधिक इनके शिष्य हुए। प्रेमलताजी की गणना श्रृंगार परम्परा के रससिद्ध सन्तों में की जाती है। उनकी साधना प्रणालीकी विवेचना सुवोध शैली में इनकी 'वृहद्‌उपासना-रहस्य' नामक रचनाओं में मिलता है। वह अन्यत्र दुर्लभ है। इनकी साधना श्रृंगार है। प्रेमलता जी की ३३ कृतियों का पता चला है, जो इस प्रकार हैं–

(१) वृहद् उपासना रहस्य।
(२) प्रेमलता पंदावली।
(३) चैतन्यचालिसा।
(४) सीताराम रहस्य दर्पण।
(५) सीतारामनामरूप-वर्णन।
(६) सीतारामनाम-जापक-महात्म्य।
(७) ज्ञानपचीसा।
(८) मिथिलाविभूति प्रकाशिका।
(९) वैराग्यप्रवोधक बहत्तरी।
(१०) हितोपदेश शतक।
(११) प्रेमलता व्रारा खडी।
(१२) नामसम्बन्ध बहत्तरी।
(१३) नामवैभवप्रकाश चालिसा।
(१४) जानकी विनय नामादि।
(१५) नाम दृष्टान्तावली।
(१६) सतगुरुपदार्थप्रवोधिका।
(१७) सन्तप्रसादी-महात्म्य।
(१८) नामरहस्यत्रयी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

(१९) नामतत्वसिद्धान्त ।
(२०) जानकीस्तुति ।
(२१) षट्-ऋतु-विमल-विहार ।
(२२) अनन्य शतक ।
(२३) निजात्मबोध-दर्पण ।
(२४) अपेल सिद्धान्त ।
(२५) षोडश भक्ति ।
(२६) सन्तमहिमा ।
(२७) उपदेश पेटिका ।
(२८) पंच संस्कार ।
(२९) अष्टयाम ।
(३०) जानकी बधाई ।
(३१) सार-सिद्धान्त-प्रकाश ।
(३२) नित्य प्रार्थना ।
(३३) विश्वविलास बीसिका ।

अयोध्या में सं. १९५९ में जाकर इन्होंने महात्मा राम वल्लभ शरण से मंत्र तथा माधुर्यसम्बन्ध की दीक्षा प्राप्त की। जैसा कि उन्होंनें स्वयं ही लिखा है –

"सरयू तट लक्ष्मण किला, तहँ सिय वाग सुहाग ।
अवध धाम गुरु कीन्ह मोहि, शिष्य सहित अनुराग ॥
श्री राम वल्लभा शरण मम, सदगुरु परम सुजान ।
निर्मायिउ पुनि सरयुतट, सदगुरु सदन स्थान ॥"

३१. पं. श्रीअवधकिशोरदास (प्रेमनिधिजी)

रचेअनेकन ग्रन्थ सूचि, भवनिधि तरण जहाज ।
परमपूज्य आचार्य श्रीप्रेमनिधि महाराज ॥

इनका जन्म गुर्जर प्रदेशांतर्गत घरणीघर भाड़ी के सन्निकट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

जि. वनास कांठाथंराद नामक ग्राम से प्रसिद्ध है। विप्रकुल पं. श्री रामजी भाई त्रिवेदी ऐसे परमोदारश्री पिता एवं रेवावाई से वि.सं. १९७२ आसीन कृष्ण ३ रविवार को जन्म लिया था। ये संत शिरोमणि स्वामी श्रीमथुरा दास जी के शिष्य थे। ये वेदान्त, साहित्य, व्याकरण आदि शास्त्रों से विभूषित थे। इन्होंने अनेकों साहित्यों की रचनायें की। श्रीजगज्जननी श्रीकिशोरीजी को अपने इष्ट स्वरूप सम्बन्ध से बडी बहन के रूप मे मानकर अपने को लघु भ्राता के समान मधुर भाव के रूप में मानते थे। श्रीप्रभु की अमिट निशानी कृतियाँ भी इनकी श्रीदुलहा भगवान का सुविग्रह तथा मंदिर श्री जनकपुरधाम में श्रीरामानन्द आश्रम श्रीभाँवरी मंडप सुविख्यात है। इनके काव्य तथा कथाओं में माधुर्य एवं बाणी में सरसता, गंभीरता तथा मनोहारिता भी थी। जिसे जैन-सन्यासी और श्रीरामानुजी आदि सभी श्रवण गायन करके प्रसन्न चित्त होकर विभोर हो जाया करते थे। उन सभी स्थलों में दवा आदि का सुन्दर प्रबन्ध किया गया था। अयोध्या, मथुरा में भी इनका आश्रम था। सभी जगहों का रेख-देख ये वरावर किया करते थे। इनका स्वर्गवास वि.सं. २०४४ कार्तिक कृष्ण २ तदनुसार ता. ८/१०/८८ गुरुवार को सायंकाल में हुआ। इनके द्वारा १२४ ग्रन्थों की रचना हुई है, इनका प्रकाशन भी हो चुका है। जिनमें से कुछ निम्नाङ्कित है–

(१) प्रेमरस माधुरी।
(२) श्रीमिथिला-नवरत्नस्तोत्रम् (संस्कृत काव्य)।
(३) जनकपुर की झाँकी।
(४) प्रेमप्रभा।
(५) श्रीमिथिला भावभूषण।
(६) श्रीजानकी-चालिसा।
(७) श्रीमिथिला-चालिसा।
(८) श्रीसीतास्त्रोत्र-सुधा-सागर (पूवार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE

(९) सीता मंत्र रहस्य ।
(१०) सीतामही रहस्य ।
(११) श्रीसीता सूक्तम् ।
(१२) श्रीजानकी नवमी ।
(१३) श्रीजानकी-महायज्ञ-पद्धति ।
(१४) महाराज जनक ।
(१५) दिव्य धामक पथपर ।
(१६) हमारी धार्मिक मर्यादा ।
(१७) भजनप्रेम लहरी ।
(१८) दीक्षा पद्धति ।
(१९) भागवत धर्म ।
(२०) मन-प्रवोध-माला ।
(२१) आदर्श योगी ।
(२२) श्रीसाकेत महिमा आदि ।

बहुमुखी प्रतिभा के कारण आप- नेपाली, बंगाली, मारवाडी और गुजराती भाषा के विज्ञ थे । बंगाल के सुप्रसिद्ध कवि ईशान चन्द्र सेन द्वारा रचित श्री रामायण रसायनम्' अन्तर्गत श्रीसीता सप्तशती की टीका इन्होंनेकी थी । वंगाल में "कीर्तिवास रामायण" का पाठ किया करते थे । और वंगला भाषा में कथा भी कहते थे । मारवाडी भाषा अच्छी तरह बोलते थे और गुजराती भाषा में आपकी रचना 'श्रीप्रेम गीत गंग' "भजनप्रेम लहरी" श्रीप्रेमनिधि रामायण तथा भजन प्रेम पुष्पाञ्जली है । आप आयुर्वेद के भी ज्ञाता थे । आप की अप्रकाशित आयुर्वेदीय रचना में वनौषधि- चिकित्सा शास्त्र है ।

३२. "प्रेमलता"

जनकपुर, रामानन्द चौक स्थित साकेत सदन की संस्थापिका प्रेमलता उर्फ मीरा बाई का जन्म १९८७ साल में हुआ । स्व. नागर मल भुन-भुन वाला के एक मात्र पुत्र आनन्दी लाल भुन-भुन वाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDR

और चार लडकिओं में सब से छोटी प्रेमलता किशोरावस्था में बहुत वीमार रहती थी और उन्हीं दिनों वारह वर्ष की आयु में चित्रकूट के सन्त पं. स्वामी सीताराम की शिष्या बन रामभक्ति में लीन हो गयी ।

रामभक्ति में लीन प्रेमलता अपने स्वरचित गीत और भजनों को गाकर प्रेम वाई वन गई और लोग उन्हें मीरा बाई भी कहने लगे ।

३३. पं. उर्मिलाकान्तशरण (ज्योतिषी) श्रीरामानन्द आश्रम, जनकपुरधाम

इनका जन्म सखुआ जि.सहरसा विहार में हुआ । इनके पिता का नाम पं.सदानन्द झा (मैथिल) तथा माता का नाम नागेश्वरी देवी था । आप गणित तथा फलित में ज्योतिषाचार्य थे । १९७५ ई मे शिक्षणपेशा से अवकाश प्राप्त कर तीर्थाटन के क्रग में जनकपुरधाम (मिथिला) आए । कुछ दिन जानकी महल गें ठहरकर आध्यात्म रामायण की कथा शुरु की। एक दिन श्रीरामानन्द आश्रम के महंथ पं. अवधकिशोर दास 'प्रेमनिधि' मझ्ल में श्री जानकी जी के दर्शनार्थ पधारे । परस्पर परिचय और शास्त्रीय वार्त्तालाप से प्रभावित हुए। उस समय वे पेट के रोग से ग्रसित थे । उसी हालत में अपने सभी समानों के साथ उक्त आश्रम में वे आगये । आश्रग की पवित्रता, सौन्दर्य एवं सारी सुविधा देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। प्रेमनिधिजी ने आयुर्वेद के जानकार होने के नाते इनकी पेट की बीमारी दूर कर दी । पिछे चलकर उन्हींसे वैष्णव दीक्षा ले ली ।

दीयते ज्ञानसद्भावः क्षीयते पशुवासना ।
पानक्षपणसंयुक्ता दीक्ष तेनेह कीर्त्तिता ॥ इस स्मृति के अनुसार दीक्षा, पशुभावना का नाश और ज्ञान की प्रतिक के लिए ली जाती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: Mi

(१) संक्षिप्त रामायण एवं (सत्संग महिमा)।
(२) जप, यज्ञ एवं मन्त्रराज-महिमा।
(३) श्रीरामचरितमानस में जनकपुरधाम और महाराज जनक।
(४) सीताराम-विवाह-पदावली।
(५) श्रीराममंत्रार्थ।
(६) श्रीसीतामंत्रार्थ।
(७) श्रीहनुमत् उपासना।
(८) श्रीसीता सूक्तम्।
(९) श्रीरामार्चा-माहात्म्य (रामपूजा-पद्धति)।
(१०) श्रीवैष्णवधर्म, सनातनधर्म। आदि करीव २० ग्रन्थ है।

३४. रामायणी रामचरित्रदास 'श्रीनिधि'
(विहारकुण्ड, जनकपुरधाम)

इनका जन्म मधुबनी जिला पोष्ट तथा ग्राम बररी चौगामा भाया कमतौल में वि.सं. १९७८ में हुआ था। इनके पिता का नाम वहादुर मिश्र था। अयोध्यानिवासी बाबा श्रीमणीराम दास जी की छावनी में बैठकर श्रीराम सुन्दर दासजी से रामायण सम्बन्धी विशेष जानकारी प्राप्त की है। आप स्वर्गीय श्रीनन्ददासजी के शिष्य हैं। आप अन्य तीर्थों से घूमकर जनकपुर में ही निवास करने लगे थे। बाबा रामचरित्रदासजी अधिक समय भगवद् नाम कीर्त्तन में ही व्यतीत करते हैं। गायक होने के नाते भगवान् की लीला- यस सम्बन्धी भजन से विशेष प्रेम रखते हैं। आप श्रीमिथिला-निवासी होने के कारण भगवान श्रीरामको दुलहा वेष में उपासना करते हैं तथा भगवान के श्री मिथिला संवधी का ही विशेष कीर्त्तन करते है। इनकी उपलब्ध रचनाएँ निम्नप्रकार की हैं–

(१) श्रीमैथिली प्रेमप्रकाश।
(२) श्रीमैथिली-प्रेमविनोद-पदावली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) तुलसी की रामकथा ।

(४) श्रीरामकेवट-संवाद ।

(५) श्रीशवरी चरित्र ।

(६) होली बहार ।

३५. श्रीराम कृपालुशरणजी, अग्निकुण्ड झुलनकुंज, जनकपुरधाम

श्रीरामकृपालु शरणजी का जन्म विहार के मिथिला प्रान्त के अन्तर्गत सीतामढी से पूर्व की ओर ४ मील पर रसलपुर ग्राम है, वहीं संवत् १९४२ में हुआ। पिताका नाम श्रीशिवशरण शर्मा तथा माताका नाम कलावती देवी था। इनका नाम राम इकवाल शर्मा था। सात वर्ष की उम्र में इनका यज्ञोपवीत सं. १९४९ में हुआ। बचपन से ही आपकी निष्ठा साधु सन्तों में रही। इन्होंनें विरक्त की दीक्षा श्रीराजारामशरण जी से ली थी। दीक्षा के वाद इनका नाम राम इकबाल शर्मा से रामकृपालु शरण हुआ। आपने मध्यमा की परीक्षा पास की थी। आप रामायण की कथा भी कहा करते थे। जनकपुर के अग्नि कुण्ड में झुलन कुंज का निर्माण संवत् १८०५ में हुआ। आपके द्वारा लिखित कुछ पुस्तकें इस प्रकार हैं –

(१) श्रीसीताराम-भक्तिसार-सिद्धान्त ।

(२) श्रीवाल्मिकाभ्य उपनिषद् ।

(३) वाल्मिकाभ्य उपनिषदभाषा टीका तथा प्रणवें रामायण ।

कमतौल स्टेशन के पास अहिल्या स्थान का महंथ भी आप रह चुके हैं। कुछ दिनों के वाद अपनी अस्वस्थता के कारण इन्होंने अपने शिष्य रामचन्द्र शरणको अहिल्या स्थानका कार्यभार सौंप दिया था।

३६. श्रीजनकराज किशोरीशरणजी महाराज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपका जन्म गुजरात (काठियावाड़) देश के सुदामापुरी गाँव में नागर विप्रवंश में हुआ था। इस विषय मे आप लिखते हैं –

दुर देश गुजरात सुदामापुरी उजागर।
श्रुतिगत सुठिसद्धर्म विदित ब्राह्मण वर नागर॥
वालकेन वैराग सन्त गुरु पाय सहयोग।
सिय रघुनन्दन कृपा अवधपुर दरशन पायो॥
तहँ कनक भवन में भेट भई कृपा सिंधु गुरुपरम्परा।
उपदेशरामसिय तत्व कररसिक नाम धार्यो सुकर॥

इनके माता पिता भाई आदि का नाम तो नहीं मिलता परन्तु उनके विषय में आप यही कहते हैं कि –

मातु पिता गुरु सजन सगे मिलि दई तुम्हरे हाथ।
राखौं करि चरनन की चेरी गावौं जी गुणनाथ"
मोहि न विसरौ मेरे नाथ॥

आपने श्रीराघवशरण जी 'कृपा सिंधु' से दीक्षा ली। आप पहले कनक-भवन अयोध्या में निवास करते थे। वहीं पर रसिक- निवास नामक एक मन्दिर वनवाया था। जिसका प्रवन्ध आजकल रियासत टिकारी के हाथ है। वह स्थान संतसेवा के लिए प्रसिद्ध था। कहावत है- एक समय इन्होंने संतसेवा में मठ का सव धन खर्च कर दिया। जव रानी को यह वातें मालूम हुई, वह आकर हंसती हुई यह कही- कि आगे पिछे सोचकर धन खर्च होता तो यह दशा नही होती। वैसे तो रानी इनकी शिष्या थी। परन्तु बहुत दुःख हुआ और मिथिला चले आए। कुछ दिन सीताकुंड में रहकर भजन किया, फिर कुछ सेवकों के सहयोग से एक मन्दिर वना उसी में रहकर भजन करने लगे। आजकल वह- "श्रीरसिक निवास" नाम से प्रसिद्ध है-

"कहाँ अवध, कहाँ कनक-भवन, कहाँ कृपा सिंधु गुरु दियो साथ है।
सगुझिलियो हितमान तात हुँ को, देखि लई मिथिला की गाथ है॥
"रसिक"की सव विधि नीकी, गहयो हाथ जानकी नाथ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

आपने अपने ग्रन्थों में श्रीअवध और श्रीमिथिला युगलधाम युगलनाम और युगलउपासना की दृढता का पूर्ण समर्थन किया है, आपका सिद्धान्त है कि- रूपन के रूपी अवतारी अवतारन के दाशरथी रामचन्द्र अवधि अनादि है ।

आपकी उपासना रसराजश्रृंगारनिष्ठा थी। आपका भगवत्सम्बन्धी नाम श्री रसिक अली था । संस्कृत में अली (अलिन्) या अलिः द्विरेफेया भ्रमरों को कहते हैं। ये पुष्पों का हीं रसपान करते है । इसी लिए इनका नाम मधुव्रत भी है। सीता और राम के चरणचञ्चरिक होने के नाते इनका 'अलि' यह उपनाम रखा गया । मुसलमानों की दिवी अली' यह नहीं है । आपने अपने पदों मे प्रायः इसी नामका उल्लेख किया है । आपका देहावसान सं. १९०६ विक्रम के अग्रहण मास की पूर्णिमा के दिन हुआ था । आपने २४ ग्रन्थ रचे, आपके द्वारा रचित ग्रन्थ इस प्रकार हैं–

रहस्य ग्रन्थों को छोडकर अन्य– "जिज्ञासा पञ्चक", "वेदान्तसार श्रुति दीपिका", "आत्मसम्बन्धदर्शन", विवेकसार-चन्द्रिका-पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध, पदप्रबन्ध-अष्टयाम, होलिका-विनोद-दीपिका", तुलसीचरित्र, 'मिथिलाविलास, अनुरागरत्नमाला, सिद्धान्त-बत्तिसा, बार्षिकोत्सव पदावली, कवितावली, दोहावली, श्रीराम-रासदीपिका, आन्दोलनरहस्य दीपिका, ललितश्रृंगार-दीपिका, अनन्य-रसतरंगिणी, वेदान्तसार, श्रुति दीपिका, श्रीसीताराम रस चन्द्रोदय, श्रीरघुवर कर्णाभरण, श्री जानकी कर्णाभरण, अध्यायत्रयी, सिद्धान्त-मुक्तावली आदि ।

३७. श्रीरामदासजी (मूल)

वसि उलाव संतन सुखद रामदास लक्ष्मण धनी
मिथिला अवनि प्रवेश नगर प्रति विरद प्रकासी
कोविद गुणगण गेह नेह रस रीति उपासी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वालमीक की कथा सदा गंगातट भावै
बक्ता प्रबल प्रधान नाम रटि प्रीति वढावै ॥

टीका- रामदास लछिमन दास जो बखाने तेतो बडे साधु पंडित उलाव ग्राम वासी हैं । वालमीक रामायण पाठ के प्रभाव जात मिथिलाको जिन्हें दिव्य मिथिला प्रकाशी हैं ।

(दिव्य मिथिला प्रकाश) ।

३८. श्रीसाधूरामजी

मूल- विप्र एक भागवत लरतपुर रसिक सुजाना ।
मिथिलापुर संबन्ध भेद रसराज प्रधाना ॥

टीका :-

साधुराम रसिक सुजान वृन्दावन वासी । वडे साधु सेई
सीताराम कें उपासी हैं॥ जैपुर प्रसिद्ध राघौंदासजी
महान पद ललित बनाय । राज माधुरी प्रकाशी हैं ॥ वडे,
वडभागी सीताराम अनुरागी । विप्र चौवे कासी राम

लर्तपुर के निवासी हैं ॥ निज परिवार के समेत लेत प्रति दिन सन्त चरणामृत प्रसाद सुख राशी हैं ॥

(माधुरी प्रकाश तथा अन्य महान पद्य आदि) ।

३९. श्रीजगन्नाथदासजी

मूल – सिद्ध प्रचुर मिथिला अवनि जगन्नाथ विमला निकट सुखद ।
पताही वास जुक्त आसा नहि राख्यो जनक नन्दनी सुता ॥
भाव भाविक अभिलाष्यो राम श्याम जामात जथा ।
किशोर सुख पाये मनीराम जो रामंदास रसरसिक ॥
सोदाये जुगल रसिक श्रृंगार मति एक सिद्ध साधक प्रगट ।
सिद्ध प्रचुर मिथिला अवनि जगन्नाथ विमला निकट ॥

टीका- रूप हरि ग्राम में जे राम दास सिद्ध भये मनीराम साधक जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

छप्पै में गनाये हैं चारुसीला शरण प्रसिद्ध ज्ञान कूप ढिग छेत्रन्यास लिये मिथिला की छवि छाये हैं।

(जुगल रसिक श्रृंगार)।

४०. गुप्तरामजी महाराज रसिक-भवन रामकुंज-जनकपुर (अग्निकुंड)

आपका जन्म जिला गया मगह मे खंखटी ग्रामवासी श्री फलेघर के यहाँ वि.सं. १९३९ शुक्ल पक्ष चौंथ मास कार्तिक में गुरुवार मध्याह्न समय में हुआ था। आपके पिता फलघर जी के चार पुत्रों में आप सवसे छोटे पुत्र थे। आपका बचपनका नाम शिवरामजी था। आप वाल्यकाल से ही रामनाम तथा मानस रामायण के अनन्य भक्त थे। अवध जाकर रामघाट के श्रीमौजी जी के शिष्य हो गये। गुरुजी ने आपका नाम सीताराम शरणजी रखा था। विरक्त होने के समय १६ वर्ष की आयु थी। बहुत एकान्त में रहना पसन्द करते थे। अपना परिचय किसी को नहीं देते थे। गुप्त रुप में भजनकर सिद्धराज हो गये। इसी कारण सव सन्त आपको गुप्तराज जी कहकर पुकारते थे। रामरज मे रंगा हुआ बस्त्र पहनते थे। यहाँ से चित्रकूट गए, फिर मिथिला चले आए। यहाँ विहारकुण्ड में रहने लगे। जनकपुर से पाँच कोस पश्चिम कट्टी ग्राम है। वहीं के मुरली सिंह(क्षत्रिय) जी ने आपसे दीक्षा लेने की इच्छा की आपने अस्वीकार करदिया। वाद में उन्हें शिष्य बनाया और उनका नाम जानकीशरण रखा। कट्टी ग्राम के फोची सिंह ने कहा कि ये साधु सारे गाँव को वैष्णव वनाए देते हैं, इन्हें नेपाल सरकार से कहकर जेल दिलाना चाहिए। संयोगवश सातवें रोज फोची सिंह पर वारण्ट आया और गिरफ्तार होकर- ३ वर्ष के लिए जेल चले गये। परन्तु आपकी कृपा से १ साल में ही छूट गए। विहारकुण्ड पर भीड़ के कारण अग्नि कुण्ड पर महाराज सिया कुँवर शरण जी के यहाँ एकान्त कोठरो में रहने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

लगे ।

पीछे कट्टी के भक्तों के आग्रह से सं. १९७३ में एक कुटिया बनायी । इनके संचालन का भार कट्टी वालों ने अपने ऊपर ले लिया । कुटिया का नाम रसिकभवन रासकुंज रखा गया आप ऊपर या सामने कभी नही देखते थे । इसी कारण वर्षों से पास रहने वालों को भी वहुत कम पहिचान पाते थे । आपको कभी किसी ने नहीं देखा पेट भर खाते हुए । एक छटाक चावल और मूंग की दाल और पथ्यशाक के सिवा वे कुछ नही खाते थे । आप कभी-कभी सीतामढी सिद्ध बावा से मिलने जाया करते थे । विक्रम सं. १९८४ मे प्रातः काल साकेत वासी हो गये । आपकी लिखी हुई दो पुस्तकें अप्रकाशित ही कुटिया मे रखी है । वर्षोत्सव नामक ग्रन्थ के पद्यों का प्रतिनिधि उदाहरण ये हैं-

देखो सखि शरद भवन नृत्यति सिया सहित ।
खन छिटकी रही शरद चंद्र चंद्रिका सुहाई ॥
वाजत मृदंग वीणा सप्त स्वरन झीटापीन स्वरन ।
मरति अलि समाज साज के सजाई ॥
गान ताग श्रवण करन मोहे सुनि सिद्ध सदन चाहत ।
तिय रूप धरन मोद लतन भाई ॥

४१. "श्रीवैदेही शरणजी- श्रीजनकपुर, युगल किशोर कुंज"

इनका जन्म जिला मुजफ्फरपुर, सीतामढी से करीब अढाई कोश दक्षिण रसलपुर गोसांईपुर में हुआ था, जो १६ वर्ष की अवस्था में ही जनकपुर वासी हो गये । इनके पिता का नाम आत्मा मिश्र ज्योतिषी था । ये साधारण होते हुए भी मेधावी सन्त थे । जनकपुरस्थित प्राचीन कुण्ड तालाव आदि का परिचयात्मक पत्थर के स्तम्भ इन्होंनें ही गडवाया था । पादरी तथा आर्य समाज से भी पहले हरिहर क्षेत्र में सनातन धर्म सभाकी स्थापना की जिसके सहयोगी 'लंगट सिंह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MHRD

कालेज' के संस्थापक थे ।

इनकी रचनाएँ –

(१) मिथिला महात्म्य ।

(२) मिथिला-महंथ-परिचय हैं ।

४२. **स्वामी रामचरणदास (आचार्य जी महाराज)**

स्वामी राम चरण दास जी आचार्य स्वामी नृसिंह दास जी महाराज के मुख्य शिष्य थे । आपका जन्म चैत्र शुक्ला चतुर्दशी १४ वि.सं. १९४४ मे पण्डित शालिग्राम शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी के गर्भ से झीथड़ा ग्राम में ही हुआ था । अयोध्या, काशी होते हुए श्री कूवाद्वार की शाखा लौंठवा स्थान मिथिला के महंत स्वामी श्री युगल किशोर शरणजी इन्हें अपने यहाँ ले गये । इनका अतुलप्रेम प्रशंसनीय था । एकमील तक आचार्य श्रीजी की पालकी नही छोडी । परमहंस स्वामी वैदेही शरण जी महाराज नवाही स्थान मिथिला के दर्शन जनकपुर में ही कर चुके थे । श्रीविदेह नगर में आचार्य पाद रसिक निवास स्थान में उतरे और श्रीजानकी-महल, राम मन्दिर, विवाह मण्डप, स्वर्ण मण्डप, धनुषा, दूधमतीगंगा श्रीरामानन्दचरण पादुका और रामानन्दाश्रम, सिद्धकूप तिहत्तर (७३) सरोवरों के स्नान दर्शन आदि किए । श्री मिथिला जी में सब को राग द्वेष रहितं देख आचार्य जीका चित्त बहुत प्रसन्न हुआ था । यहाँ ११७ वर्ष के श्री वैष्णव परमहंस महात्मा मिले । ये इस अवस्था में भी आराम से चलफिर सकते थे । इस उमर में ये जनकपुर से चरौत-मुजफ्फरपुर विहार पधारे । वहाँ के वैष्णव भूषण महन्त स्वामी लखन नारायण दास जी "विदया विनोद" ने बहुत सम्मान किया । चरौत से सीतामढी पधारे । वहाँ भी रसिक निवास मठ में ठहराये गये । श्री महारानी अम्बा की अवतार भूमि तथा शिशु स्वरूपधारिणी-जगज्जननी जानकीजी का दर्शन और श्रीलक्ष्मण गंगा में स्नान किया । श्री जानकी मन्दिर के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MHRD

महन्त सियाराम दास जी और सिद्ध बाबा की कुटी के महन्त जी ने स्वागत किया। सीतामढी से अहिल्या स्थान पधारे वहाँ श्रीसम्प्रदाय के प्रसिद्ध वैदिक महात्मा परमहंस स्वामी ललित किशोरी शरण जी महाराज ने धूमधाम से स्वागत किया। श्रीगौतम कुण्ड का दूध सा निर्मल जल देखकर बहुत आहलादित हुए। अहल्या (अहिल्या) स्थान से चल कर दरभंगा नरेश के मेहमान हुए। दरभंगा से भागलपुर गये।

आपने श्रीमद्भागवद् गीता पर टिप्पणी सहित "सुधा" नामक हिन्दी टीका लिखी हैं। वह प्रकाशित हो चुकी है। सं. १९८९ में "उपदेशामृत" नामक ४८ पृष्ट की हिन्दी पुस्तिका प्रथम प्रकाशित हुई थी। वि.सं. १९९३ माघ शुक्ल १ प्रतिपदा को स्वामी रामचरण दासाचार्य जी महाराज अक्षर साकेत धाम की श्रीराम लीला में लीन हो गए।

(१६/१ जागृति वैष्णव धर्म के तारे)।

४३. स्वामी प्रेमदास महाराज जी "दूधमती" जनकपुरधाम

आपका जन्म महोत्तरी जिला के कट्टी नामक ग्राम में वि.सं. १९३४ के लगभग हुआ था जाति के ब्राह्मण थे। आपने महात्मा श्री विहारी दास जी महाराज सूरदास जी की कुटी पिपरा मुजफ्फरपुर में पंच संस्कार श्री तारक राम मन्त्र की दीक्षा ली। घरके सम्पन्न होते हुए भी सं. १९३३ से कट्टी में ही शाक-पात खाकर जीवन निर्वाह करने लगे। इस तरह ११ वर्ष विताए। इस प्रकार आप कट्टी के परम हंस जी के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

सं. १९७४ में श्री अयोध्या जी गये। खाने की सव चीजें एक साथ मिला दिया करते थे और कहते थे कि यह श्रीरामका प्रसाद है। इसका अलग-अलग स्वाद लेना ठीक नहीं। चौवीस घंटे में एकवार केवल ६ः छटाक अहार करते थे। अयोध्या के वाद श्रीमिथिला के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDR

जनकपुरधाम में दूधमती गंगा के किनारे भजन करने लगे। ११ वर्ष मे मिथिला में विहार कुण्ड तथा दूधमती के वर्तमान साधु सेवी सन्त स्वामी श्रीरामदास जी महाराज के प्रथम शिष्य हुए थे।

पदरचना- चित्रकूट में आपने कूछ पदों की रचना की थी। उन्हें पढकर शिष्यों नें इधर-उधर चर्चा कर दी। सुनते ही आपने सारे पद फाड़डाले। फिर प्रार्थना करने पर भी न लिखे आग्रह करने पर कहा कि मेरे श्रद्धालुओं से इनके पिछे सदग्रन्थों का स्वाध्याय छुट जाएगा। वि.सं. १९८९ कार्तिक शुक्ल ४ चतुर्थी को प्रातः काल ५ वजे शरीर त्याग किया।

स्मारक – एक छोटी सी फूस की कुटिया में आपका चित्र तथा चरण पादुका विराजमान है।

४४. श्रीमोदलताजी

आप मैथिल कायस्थ थे। आप के पिता स्व. रघुनाथ लाल जी तथा पितामह स्व.गणपति दास जी थे। आप विहार प्रान्त के जिला मुजफ्फरपुर अन्तर्गत के कटरा थाना स्थित हरिपुर नामक ग्राम के निवासी थे। धनधान्यपूर्ण होते हुए भी आप भोगशक्ति से दूर रहे। आप अपने संचित धन का सदुपयोग साधु, ब्राह्मण, अतिथि, अभ्यागत, दीन दुःखी प्राणियों की सेवा में किया करते थे। आप वारह वर्षों तक श्रीजनकपुरधाम में निवास किया। आप के पिता लालजी जनकपुरधाम रत्नसागर के सुयोग्य तथा सुप्रसिद्ध सिद्ध सन्त अजान बाहु बाबा नारायण दास जी के सुयोग्य शिष्य हुए आप भी उन्हीं से दीक्षा मन्त्र लेकर नैष्ठिक नाम जापक गृहस्थ सन्त निकले। मोदलता जी का आदि नाम लक्ष्मणलाल जी था सन् १८९५ में आप पाँच वर्ष के थे –

"विद्यावाँश्च शुचिर्धीरो दाता चैवोपकारकः।
राजभक्तः क्षमाशीलः कायस्थः सप्तलक्षणः॥ (स्कन्दपुराण)

कायस्थ जाति के लोग विद्याव्यसनी होते हैं। भीतर तथा वाहर से पवित्र रहना इनका जातीय स्वभाव होता हैं। ये होते है-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

धीर, उदार, परोपकारी, राजभक्त तथा क्षमाशील। उपर्युक्त श्लोक के सभी गुण और विशेषण श्रीलक्ष्मणलाल जी में नैसर्गिक रूप से देखे जाते थे।

एक रात स्वप्न में इन्हें यह महशूश हुआ कि मेरे घर एक सन्त आए थे मैनें उन्हें भोजन का थाल अर्पण किया, परन्तु वे सन्त विना भोजन किए चले गये। उनका कहना था कि वैष्णवी दीक्षा के अभाव में मेरे घर से विना खाये सन्त को जाना बड़ी ही दुःख की वात है। अतः वे तुरन्त अपने ग्राम से नजदीक के मैथिल ब्राह्मण श्रीअनन्त लाल झा से कृष्ण मन्त्र की दीक्षा ले ली। १९०६ में कृष्णमन्त्र से दीक्षित लाल जी राममंत्र की दीक्षा प्रति अति इच्छुक हुए। समस्या इस वात की थी कि एक वैष्णवमंत्र को त्यागकर दूसरा राममंत्र लिया जा सकता है या नहीं। इस शंका के समाधान के लिए वे १९१० में अयोध्या गये। वहाँ के सन्तों ने इस समस्या का समाधान इस तरह किया – महामुनि अगस्त अपने प्रिय शिष्य सुतीक्ष्ण से कहते है- वत्स मंत्रशास्त्रों मे वैष्णव मंत्र कहीं अन्य मन्त्रों से फल प्रसू है। अन्य मंत्रों के ग्रहण करने वाले भी चाहे तो वह सर्वश्रेष्ठ तारक श्रीराम मंत्रकी दीक्षा ले सकता है। इसप्रकार के समाधान से सन्तुष्ट होकर लक्ष्मणलालजी भी अयोध्या में ही परमहंस श्रीरामदास जी महाराज "सूर बाबा" के प्रसिद्ध शिष्य हो गये। वैठने के लिए एक गुफा बना ली। गुफा का द्वार लता पौंधो से आवृत्त रहता था। स्थान निर्जन था। दिन में भी सन्नाटा रहता था। लता आदि के सम्मोहक छटा से कोई भी व्यक्ति मोद प्राप्त कर सकता था। अतः श्रीलक्ष्मण शरणजी से श्रीमोदलता के नाम से प्रसिद्ध हुए। सन् १९२२ में या सन् १९२४ में महसौल ग्राम में स्थानीय कन्या-पाठशाला के अध्यापक पद पर नियुक्ति कर लिए गये। आपकी पत्नी का नाम श्रीमती चन्द्रवती था। इनके लड़का का नाम जानकीरमणशरण तथा सुदामा और श्यामा दो पुत्रियाँ थी

Nepal Sanskrit University, Balmiki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

चले आए। यहाँ आकर दूधमती तट पर श्री परम हंसजी के आश्रम पर रहने लगे। कई महिनों तक एकान्त भजन का लाभ उठाते रहे। जनकपुरधाम में दूधमती तट रमणीय तट है। परमहंस सियालालशरण जी महाराज स्वनामधन्य सिद्ध, सन्त श्रीप्रेमदास जी महाराज, श्रीसुतीक्ष्णजी, श्रीरामबाबा प्रभृति एक से एक सन्तरत्न यहाँ चमत्कार पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त कर चुके हैं।

श्रीमोदलता जी तथा परमहंस श्रीवैदेही शरण जी महाराज मे प्रगाढ आत्मीयता थी। श्रीमोदलता जी समय-समय पर खास करके परिक्रमा के अवसर पर जनकपुर अवश्य आते थे। आप का आसन दूधमती के तट पर रहता था। श्रीमोदलता जी संकल्प सिद्ध थे। जिस समय जिस वस्तु की चाह होती, वह अवश्य प्राप्त होती थी।

लश्कर ग्वालियर वाले श्रीसियाराम शरण (बाबूलाल) बन्सल जी भी श्रीमिथिलाजी के विशिष्ट विभूतिद्वय का सुयश का गान सुनकर दर्शनार्थ यहाँ आए। सीता मढीवाली स्वनाम धन्य वहन श्री चन्द्रकला सहचरी जी के साथ उनका यहाँ आना हुआ। श्री धनुषा में जाकर परिक्रमा समाज में सम्मिलित हुए। इसके वाद मोदलताजी के आसन पर पहुँचे।

एकवार इन्होंनें अष्टयाम तथा रामार्चा यज्ञ का आयोजन किया जिस में दूधमती वाले वैदेही शरण जी तथा मंजगत नारायण शास्त्री जी की स्वरूपों के साथ आमन्त्रित किया था।

श्री मोदलता जी द्वारा रचित ग्रन्थ तथा पदावली :-

(१) रमणासन।
(२) विश्रामधाम।
(३) रास मंडलभवन।
(४) मान थान।
(५) नित्य व्याह मन्दिर।
(६) पाक-भवन।
(७) सभासदन और।
(८) सेज भवन।

आपके पदों में नामोपदेशः –

सब सारन को सार, नाम रटन निर्धार है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MHRD

"मोद" कोटिधिक्कार, ओठपटापट ज़ो नकर ॥
अरे मन रट रट सियाराम रटिया ।
रटे विना सवही भठिया ॥

सीताराम-विवाह-पदावली भक्त-संसार सुप्रसिद्ध प्रकाशित पुस्तिकाएँ है । शादी ब्याह के अवसर पर महिलाएँ गा गाकर रश्म अदा करती है । मैथिली भाषा में होने के वावजूद इसकी लोकप्रियता इससे भी आँकी जाती है- कि यह हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्त के लोग भी गाते और सुनते हैं –

भाँवर पद की रचना –

चारो दुलहा देत भँवरिया ए
संगसोहति दुलही नागरिया ए ।
श्याम-गौर-श्याम चारो जोड़ जोडिया
हरे हरे होत चहुँ ओरिया ए ॥
नव रंग मनिन की सुपली सोहरिया
लावा छिरिया वै भरि भरिया ए ॥
उमगि उमगि गावै अलिगन गरिया
सुख सरसत वेसुमरिया ए ॥
जयति जयति जय जय होत सोरिया
सुर करें सुमन की झरिया ए ॥
फुली न समाति लाखि "मोदिया" किकरिया
ललि लाल लखनि लजोरिया ए ॥

भोजपुरी पद –

देखो प्यारे दुलहा कहर करेला,
जुलमी नजरिया जहर भरेला ।
मनियन मोर जगमग जरेला ।
छोरन की छवि विजुरीन छरेला ।
भृकुटी मरोड़ मोरा उर गरेला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDR

गालन पै मोतियन लर लरेला ॥
अरुन अघर में अमिय ढरेला,
मधुरी हंसनि 'मोद' मन हरेला

श्रीपुरी में श्री जगन्नाथ जी से विनय –

जगदीश यो जगदीस ।
कनै कमल नयन सौं करुना कय कै, हेरु हमरा दीस ॥
जगत जाल में जकरल जीवन, के सव दिन चलि गेल ॥
जानकी जीवन ज्यू, सौमन भरि, दरस परस नहि भेल ॥
चटपटी दिअ हिय में अति, छन छन पल वीस्वा वीस ॥
सीतापति कोठरी के ताला, खोलवैया अपने छी ॥
करु पूरन "मोद" मन काम दिअ इ मंजूल वकसीस ॥

तथा एक पद रचकर श्रीजगन्नाथ जी को गाली देने लगे। वह गाली इस प्रकार है –

जगदीस अहाँ अजब जुलम कैलौं यो ।
दुहू भाई दुहू दिसि भेलौं बीच में सुभद्रहि धय लेलौं ॥
कयो नहि कैलक से अहाँ कैलौं, लाजहुँके लजैलौं यो ॥
जौ ऊ वैसतथि अहाँक वाम, तौं जरिवरि जइतथि बलराम ॥
हिय में सोधि नफा परिनाम, भगिनिहि भाउज वनैलौं यो ॥२॥
घुरिघुरि घर-घर गोरस चोरैलों, सिकहर तोरलौं मटुकी फौरलौं ।
भरिसक अपन परार नै छारलौं, गली-गली "मोद" मचैलौं यो ॥३॥

परदोष दर्शन या श्रवण आपके लिए असह्य था –

"मोद न तोहि अधिकार ओगुन देखे और कें ।
निज हिय- सदन कहार, कुड़ा करकट भरि रहे ।"

पापियों पर भी दया क्यों नहीं करते ? यह प्रणय कथन आप ही के शब्दों में मननीय है सम कहकर भी आप जगत् में वैषम्य वरत रहे हैं –

पाहुन कहब त लागत छक सँ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MI

काज अहाँक अहमक सँ ॥
कहियो बरषा एतेक करइ छी ।
धान दहाइअ धक सँ ।
कहियो गुमार एतेक करै छी,
सब जरि जाइऐ भक सँ ॥
कहियो गुमार एतेक करै छी,
अजिज होइछी धमक सँ ।
कहियो आँधी आनि धरइ छी,
हिया कपइय अदक सँ ॥
ककरो-अन्न पर अन्न सरइ ऐ,
क्यो रहि जाइऐ ठक सँ ॥
क्यो खोवा नहिं खाय सकइ अ,
ककरो न रोटी नमक सँ ॥
दुखित देखि जग जन के हितु किछु,
कहल गेल निर्धरक सँ ॥
"मोद" अहाँ आव इहै चहैय,
लिखिते रहि एक टक सँ ॥

श्रीजनकपुरधाम के जानकी मन्दिर में उनकी आर्त्त प्रार्थना –

कनै करुणा के कोर सँ निहारु ये सिये ।
येइ दासीक कसूर के विसारु ये सिये ॥
वहु सहलौं विषम भव भार ये सिये ।
निस तारलौं बहुत अव निसतारु ये सिये ॥
छोनिजा छी छमा जनि छारु ये सिये ।
"मोद" पैं नैहर के नाता सँ निहारु ये सिये ॥

सन् १९६२ के आश्विन महिना के कृष्ण नवमी के काल कराल ने आप को अपने क्रूर अंक में सुला लिया ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४५. **स्वामी पं.रामरुप दासजी**

आपका जन्म स्थान गोनुचक वेगुसराय (विहार) में पड़ता है। माता-पिता की सही जानकारी नहीं होने पर भी श्रीविजय राघवकुंज (बोधायन आश्रम) विहार कुण्ड जनकपुरधाम के परम भक्त शिष्य थे। आपकी अनुपम कीर्ति श्रीवैष्णव व्रज भाष्कर का हस्त लिखित (अमुद्रित) संस्कृत भाष्य है।

दूसरा- श्रीविष्णु सहस्त्र नाम का संस्कृत भाष्य हैं जो अमुद्रित है। आपका साकेत वास वि.सं. १९९९ चैत्र कृष्ण त्रयोद्रशी को हुआ था। आप श्रीमिथिला जनकपुरधाम के गौरव थे। श्रीजनकराज लाडिली शरण जी महाराज– जनकपुर स्थित ज्ञानकूप पाठशाला से पश्चिम जो ऊँची सी जमीन टीला है वहीं पर वे विराजते थे। आज से १०० वर्ष पूर्व आप यहाँ विराजमान थे। आप महात्मा रसीक अलि जी के समकालीन थे। आप मधुर उपासना के संत थे। आप की पुरी जीवनी अप्राप्य है। इनकी रचना- श्रीमिथिला भाव भूषण ग्रन्थकी प्राचीन साधु भाषा है। श्रीमिथिला भावभूषणकार ने अपने पूर्व आचार्यो की भावनाओं को हृदयङ्गम करके अपने इस ग्रन्थ में श्रीमिथिला की महिमा, श्रीमिथिला निवासियों के रसमय दिव्यभावों का वर्णन, श्री निमिवंश वर्णन श्रीकिशोरी जी के सखियों के नाम, श्रीमिथिला के कुंज निकुंज तथा युगल विहार का वर्णन श्रीयुगल सरकार के शयन कुंज की छवि का वर्णन करते हुए प्रातः काल मंगल आरती, श्रृंगार आरती, जेवनार विश्राम सायंकाल का केलि कौतुक, होरी वसन्त झुलाराम आदि युगल सरकार के लीला-विहार का अष्टयाम ध्यान वर्णन अत्यन्त रसमयी भाषा में आपने वर्णन किया है। इस ग्रन्थ में श्रीमिथिला वासियों की भावना की झाँकी करायी गई है। इनका समय अठारहवीं शताव्दी से लेकर उन्नाइसवीं शताव्दी के आरम्भ तक माना जा सकता है। इनकी कविता की शैली निम्नप्रकार है –

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE

छप्पय – पूर्व द्वार शिलानाथ दक्षिण गिरिजा है ।
पश्चिम जलेश्वर नाथ उत्तर दिग धनुपुर्जा हैं ॥
द्वार-द्वार प्रति अमित देव गणदेव विराजै ।
श्रीकमलावर विमल धार पूर्व दिसि राजै ॥

दोहा – सीता भाव प्रभाव अलि
कवि नहीं सुकवि बखानी,
बरानि सकै नहि घरानिधर ।
महा भाव अनुमानि ॥

इनके पद्यों को पढ़ने से ऐसा लगता है कि- पुनः भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ही यहाँ आकर मिथिलावासी की तरह ही अपनी अनुभूति छोड़ते हैं ।

रे मन ! सीता सीता रटु रे ।
मिथिला अवध चित्र कुटादिक, प्रभुधामन में अटुरे ॥

श्रीमिथिला भाव भूषण पदावली से –

१. परमप्रिय पावन तिरहुत देश –
जहाँ जनमी विदेह तनया श्रीसीता मंजुल वेश ।
जासौ पावन भये 'रघुनन्दन' रघुकुलकमल दिनेश ॥
याज्ञवल्क्य गौतम कणाद मुनि कौशिककपिल द्विजेश ।
अष्टावक्र व्यास सुत शुक मुनि परम शांत शुचि वेश ॥
आय विदेह राज सो पायल ज्ञान तत्व अनिवेश ।
महामहिम बोधायन उदयन वाचस्पति गंगेश ॥
शंकर मंडन-गोकुल द्विज जहँ शिवसिंह सदृश नरेश ।
मंजुल चंचरीक "विद्यापति" गुंजत काव्य हमेश ॥

२. उक्त पदावली में गौरवपूर्ण श्रीमिथिला का चित्रण –
जखन जनकपुर जन्म हमर थिक,
तखन खुशामद उनका की ।
परमधाम जौं वुझि रहल छी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIBP

तखन करब हम चिंता की ।
जगदम्बा जगतारिणी सीता,
बहिन हमर छथि शंका की ।
नैहर ममता हैवे करतैन ।
यमदुत आविक करता की ।
जगतपति श्रीरामचन्द्र जी सासुरनजिक जैता की ।
सिया जू के नाते पाहुन हैता, अवगुण मन में लेताकी ।
"आनन्द लता" मिथिलापुर वासी,
कलियुग रहिक करता की ।
मिथिलावासी सुकृत राशि अनकर आशा करता की ।

३. कविका भावपूर्ण उद्‌गार –

मिथिला तजि कहिं अनत न वसिहौं,
जनकलली गुण गैहौं जी ।
श्रुतिकीरति उर्मिला माण्डवी, श्री जानकी दर्शन पै हौं जी ॥
राजन वाग कुसुम चुनि लै हौं, निजकर माल वनै हौं जी ।
कुँवरिन उर मालन पहिरैहौं जीवन सुफल करैहौं जी ॥
नर अरु नारि जनकपुर वासी, सकल सुकृति की मूरति जी ।
"दास जय राम" सिया पद पंकज, अचल भक्तिवर पैहौं जी ॥

४. कवि के शब्दों में श्रीधाम जनकपुर महिमा –

माइ मोहे लागे जनकपुर नीको ।
ठौर-ठौर पर मन्दिर राजै, दर्शन श्रीसिय पी को ॥
नित उठि साधु सन्त की सेवाः मञ्जन दूधमती को ।
सव के आँगन तुलसी पूजा, भोजन चूडा दही को ॥
जनक-लली की जन्म भूमि हैं, मिथिला तिलक मही को ।
दर्शन करि "शरण" कृतारथ, वहिनी श्रीजनक लली को ॥

४६. अनन्त श्रीविभूषित श्रीवल्लभाचार्य –

श्रीमहा प्रभु जी का वैठक के सम्वन्ध में श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE

जी ने भी अपने लेख में श्री जनकपुर भ्रमण के सिलसिला में अंकित किया है किन्तु उन्होंने भी इस महा प्रभु की वैठक के स्थान सम्बन्ध में निश्चित ठौर नहीं वताया है। किन्तुं कुछ आचार्यों का कहना है कि श्रीमहा प्रभु जी का बैठक श्रीप्रेमनिधि जी महाराज के द्वारा श्रीरामानन्द आश्रम में श्री प्रेम सरोवर के पश्चिम तट पर विद्यमान है । यहाँ गुजरात, दिल्ली, बम्बई आदि स्थानों से सैकडों तीर्थयात्री यहाँ आकर विधिवत पूजा करते हैं। प्रेम सरोवर से पानी भरकर चढाने के साथ ही चरणामृत पान कर अपने को धन्य मानते हैं ।

इस उक्तिका प्रमाणिक आधार प्राप्त नहीं होने पर भी जनश्रुति के आधार पर जीवित अवस्था में पं. श्री अवध किशोर दास जी (प्रेमनिधि) अपने स्वप्नों में हुई जानकारी अपने शिष्य वर्त्तमान पूजारी "श्री अनन्त रामशरण रसमोद निधि" से बरावर चर्चा किया करते थे। जिन्होंने सर्वसाधारण की जानकारी हेतु इसे प्रकाश में लाया हैं ।

४७. बाबा नारायणदासजी, रत्नसागर

जनकपुरधाम- आपका जन्म मिथिला प्रान्त के दरभंगा जिला अन्तर्गत मालीपुर ग्राम में वि.सं. १८६७ में ब्राह्मण वंश में हुआ। आप आजानुबाहु थे। आप के पिताने रत्नसागर स्थान के तत्कालीन महात्मा श्रीस्वामी हरिदास जी के चरणों में वि.सं. १८७४ में अर्पण किया। उस समय आपकी आयु केवल ७ वर्ष की थी। ऋषिकेश से वि.सं. १८९० में श्री मिथिला जनकपुर वापिस आए। यहाँ भी १२ वर्ष तक नाम जपते रहे।

आप काठमाडौ गए वहाँ युवराजधिराज श्री ५ त्रैलोक्यवीर विक्रम शाह से दर्शन भेंट हुआ। राजा ने बहुत सा धन तथा जागीर अर्पण करना चाहा किन्तु उन्होंने लेने से इन्कार कर दिया। आप भ्रमण के सिलसिला में टीकमगढ राज्य में पहुँचे। टीकमगढ के राजा ने १० लाख रुपया तक का एक मन्दिर बनवाने की ईच्छा जाहिर की और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

रानी ने सेवा में उपस्थित होकर मन्दिर वनवाने हेतु जमीन की याचना की। उस समय रत्नसागर स्थान केवल तृणकुटीर ही था। फिर भी उन्होंने स्वीकार नही किया। रानी के साथ श्रीजानकी मन्दिर के महंतजी के पास गए और उन्होंने मन्दिर बनवाना स्वीकार कर लिया।

सिद्धनाथ के रूपमें वि.सं. १९४२ में एक भण्डारा किया। जिसमें भारत भर के साधुओं को बुलाया। इसमें साढे आठ लाख रुपये लगे थे। इसी भण्डारा में एक नाथ संत आए और कोठार पर कमंडल भर भिक्षा माँगी। चौदह मन चिउडा (चूडा; देने पर भी कमण्डल नही भरा। यह सूचना जव आपको मिली तो आपकी आज्ञा से एक अंजुली भर चिउडा (चूडा) से कमंल भर गया। पिछला चिउडा (चूडा) बाहर निकल गया। वि.सं. १९६१ माघ कृष्ण पंचमी को साकेतधाम सिधार गये। आप के शिष्य स्वामी भगवान दास जी महन्त हुए।

(१७/३० धर्मलोक तारे)।

४८. पं.श्रीरामदुलारी-शरण 'रूपलता' सुन्दर सदन अग्निकुण्ड, जनकपुर

इनका जन्म महोत्तरी जिला कट्टी नाम के ग्राम में वि.सं. १९६१ में हुआ था। इनके पिताका नाम शोभित सिंह तथा माताका नाम श्रीमती गेंदावती था। आप का निवास जनकपुरधाम में सदा रहा। ये श्रीसीताराम शरण जी (वावा गुप्तरामजी) के शिष्य थे। इनका साकेत वास २०४६ साल फागुन, श्रीमिथिला परिक्रमा करते समय सतोखर पडावपर हुआ था।

इनकी रचनाएँ निम्नाङ्कित हैं–

(१) रूपरस तरंगणी।

(२) रूपरस-मालिका।

...Kathmand...

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MHRD

(३) सखेश्वरी चन्द्रकला ।

(४) सवेसरी चन्द्रकला ।

(५) परत्वप्रकाशिका ।

(६) श्रीसम्बन्धपत्रम् ।

इन्होंनें मिथिला महात्म्य को हिन्दी में पद्यानुवाद किया है ।

४९. पं. अवधकिशोरदासजी

आपने रामानन्द आश्रम की स्थापना कर हिन्दी सन्त-साहित्य के विकास में अद्वितीय योगदान दे चुके हैं । उनके २००४ साल में जनकपुर की झाँकी सहित दो दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित है ।

रामानन्दीय-वैष्णव-संघ के अध्यक्ष ६५ वर्षीय अवधकिशोर दास उमंग हिन्दी के अच्छे साहित्यकार हैं । इनकी कविताएँ अयोध्या आदि तीर्थ स्थलों से प्रकाशित धार्मिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं । इनके दो अप्रकाशित कवितासंग्रह हैं । पिछले चार दशक से रागानन्दीय-वैष्णव-संघ से सम्वद्ध 'उमंग' जी हिन्दी साहित्य के विकास में तन-मन से लगे हुए हैं । नेपाल मे प्रजातान्त्रिक आन्दोलन से सम्बद्ध श्रीउमंग जी हिन्दी के सजग प्रहरी हैं ।

सन् १९२८ जनवरी मे महाकवि अज्ञेय जी जानकी-जीवन यात्रा क्रममे जनकपुरधाम पधारे । उनके सम्मान में सन्त तुलसी- स्मारक-सदन में आयोजित बृहत्-कवि-सम्मेलन की श्री 'उमंग' ने अध्यक्षता की ।

५०. वेदान्ती वैदिक पं. स्वामी श्रीरामसेवक दास (अवधेश कवि)

श्रीराम सेवक दास का जन्म जिला मुजफ्फरपुर चन्द्रसैना ग्राम में हुआ था । इनके पिता का नाम श्रीउदयनारायण ठाकुर और श्रीमाताका नाम श्रीमती गिरीजादेवी था । कुल के भूमिहार तथा इनके गुरु विररख निवासी श्रीसुदर्शन जी थे । इनका अधिकांश समय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

...0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

जनकपुर जानकी मन्दिर में ही समाप्त हुआ । इनकी निम्नाङ्कित पाण्डुलिपियाँ पाए गए हैं, जो मुद्रित नहीं हैं –

(१) श्रीवस्तु देवार्चनम् तथा संक्षेपतः नूतन मन्दिर प्रतिष्ठामुच्येते श्री जानकी मन्दिर ।
(२) एकादशी तथा जयन्ति निर्णय ।
(३) श्रीभगवत् प्रतिष्ठा दर्शन ।
(४) अथ श्रीवैष्णवी अपराजिता विद्या प्रारम्भ ।
(५) अग्निस्थापनम् ।
(६) पुनः प्रतिष्ठा जीर्णोधार विवरण ।
(७) संक्षिप्त होम विधि ।
(८) वैष्णव वास्तु पूजन ।
(९) अथ नवाह मास परायण विधि ।
(१०) अथ महासंकल्प ।
(११) प्रतिष्ठा प्रदीप ।
(१२) झुलन विनोद ।
(१३) अथ विनय पचिसी (हिन्दी) ।

५१. कथाकार संत रामटहल शरण 'शास्त्री'

आपने धनुषा जिला के हाथी लेट ग्राम के ब्राह्मणवंश में वि.सं. १९९७ में एक सम्पन्न परिवार मे जन्म लिया । ४ वर्ष की अवस्था में पिता बालकिशोर सापकोटा की मृत्यु के थोडे ही दिनों के वाद माता कालिका देवी का स्वर्गवास हो गया । बाल्यावस्था में ही माता-पिता के शैशव स्नेह छिन जाने के कारण विश्व की नश्वरता समझ एक सिद्ध सन्त के साथ श्री अवध चले गये ।

वहाँ जानकी घाटस्थित चारुशीला मन्दिर में पंच संस्कार की दीक्षा ली । हाईस्कूल के अध्ययन के वाद गुरु महाराज से अधिक शिक्षा-दीक्षा का आदेश होने पर वनारस जाकर वेदान्ताचार्य तथा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE.

व्याकरणाचार्य की उपाधि हासिल की। मेधावी होने के कारण मठमन्दिरों के दैनिक कार्य तथा रसोई कार्य सम्पादन करते हुए अनेक कठिनाइयों के वावजूद संस्कृत की उच्च शिक्षा प्राप्त की।

एकवार काठमाण्डू पशुपतिदर्शन के अवसर पर केन्द्रीय गूठी के हाकिम वद्रीविक्रम के अनुरोध तथा गुरु महाराज के जनकपुर में स्थानाभाव का सांकेतिक निर्देशन पाकर जनकपुर मे रहने की इच्छा हुई और वि.सं. २०३४ चैत्र ४ गतेको श्रीलक्ष्मण मन्दिर के महंथ पद पर नियुक्त हुए। वि.सं. २०३५ में श्री जानकी मन्दिर जीर्णोद्धार समिति से जानकीमन्दिर के महंथ नवकिशोर दास द्वारा मडवा निर्माण संकल्पित होने से निर्मित मण्डप में सीता जी के चारुशीला तथा चन्द्रकला सखियों के स्थान सम्बन्धित विवाद में शास्त्रसम्मत वात कहे जानेपर जनकपुर के विद्वान् तथा संतो ने श्रीशास्त्री का घोर विरोध किया। इस हालत मे श्री शास्त्री काठमाण्डू जाकर श्री ५ महाराजाधिराज से शास्त्रसम्मत सारी बातों का निवेदन किया और श्री ५ ने छानवीन करते हुए प्रतिष्ठापन को स्थागित कर सिर्फ मण्डप का उद्घाटन किया। वाद में जनकपुरवासी विद्वानों तथा संतो का भी चित्त भरा और फिर विरोधी सन्तों ने आपकी पाण्डित्य को समझकर उचित आदर करना शुरु किया।

वि.सं. २०४३ साल में काठमाण्डू में हुए विश्व हिन्दू संघ द्वारा आयोजित सम्मेलन में श्रीशास्त्री का प्रवचन प्रभावोत्पादक होनेपर जगद्गुरु शिवरामाचार्यने इन्हें "महा-मंडलेश्वर तथा शस्त्रार्थमहारथी" के प्रमाणपत्र द्वारा विभूषित किया। वि.सं. २०४३ साल में ही जनकपुर में परमहंस वालयुगेश्वर के साथ वेद शास्त्रानुसार शास्त्रार्थ करने पर उन्हें भी पराजित किया और रामानन्दीय सम्प्रदाय के सहयोगियों का हाथ मजबूत किया। जनकपुर के विद्वान् सन्तों में रामानन्द आश्रम के पं. उर्मिलाशरण तथा लक्ष्मणमन्दिर के महंथ रामटहल शरण की अभी भी जानकारियों मे गिनती होती है। आपका ग्रन्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीहनुमद् वैभवकी टीका के साथ अन्य ग्रन्थ अप्रकाशित है ।

५२. महन्थ गोकुल गिरि

महन्थ गोकुल गिरि का जन्म वि.सं. १९४५ में मुजफ्फरपुर जिला के औरा सोनवर्षा ग्राम में हुआ था । आपके पिता दो भाई थे । जिनमें एक की संतति आज भी समृद्धिशाली है । परन्तु आप पैतृक और मातृक दोनों तरफ से संपत्ति विहीन होने से आप अपने मामा के साथ नेपाल अन्तर्गत जनकपुर में पूर्व कपिलेश्वर गूठी विर्ता में घर बनाकर रहने लगे । छोटी अवस्था में ही सम्बत् १९५१ में अपने मामा के द्वारा कूआ महंथ जी के शिष्य वनवा दिए गये ।

संस्कृत व्याकरण की शिक्षा पा रहे । आप इसी अवस्था में ही १२ वर्ष की अवस्था में गुरु की आज्ञा विना ही साधु समाज के साथ तीर्थादि पर्यटन के लिए चले गये । पाँच-छ वर्ष के वाद पुनः लौटकर गुरुसेवा में उपस्थित हुए । सं. १९६७ में श्री ३ चन्द्र शमशेरने उन्हें महंथ के रूप में प्रमाणित किया आपकी प्रथम रचना "मिथिला में राम" है । इनकी दूसरी रचना श्रीरामवाल विलास" है, जहाँ श्रीराम का वालपन चरित्र का चित्रण किया गया है ।

५३. परमहंस श्रीरामशरण जी महाराज

नवाही (मिथिला) निवासी परमहंस श्रीरामशरण जी महाराज श्रीअयोध्या से दक्षिण तिलोई नामक राज्य में परम पवित्र तमसा नदी के तट से पाँच कोस उत्तर पंडितपुरवा नामक ग्राम है । वहाँ के निवासी सरयूपारीण दैवज्ञ पं. श्री रामस्वरूपमिश्र के यहाँ आषाढ शुक्ल द्वितीया सं. १८६४ में इनका जन्म हुआ था । आप अनेक तीर्थो से घूमते हुए पचाढी स्थान पहुँचे, वहाँ से मगरौनी और फिर सुरसंड, तव फिर नवाही में निवास हुआ । आपकी विद्वता सर्वोपरि थी । आप सख्य रसके उपासक थे, किन्तु अन्य किसी भी रसका उपहास,

Balmiki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE.

उपेक्षा या नीचा-ऊँचापन का भेद नहीं रखते थे । श्रीपरमहंस जी द्वारा निर्मित कुछ श्रीयुगल सरकार के दिव्य गुणरूप माधुरी एवं उत्सव विहार के पद भी मिलते हैं । जिनका स्वयं आपने ही संग्रह कर लिया था और पीछे "श्रीमैथिली रहस्य-पदावली" के नाम से प्रकाशित भी हो चुका है । आपकी जैसी प्रखर विद्वत्ता थी, वैसी ही वाक्यसिद्धि भी थी । आपने ११९ वर्ष की आयुप्राप्त कर वैशाख कृष्णा ४ सं. १९८३ को सीताराम का स्मरण करते हुए कालकवलित हो गये । इनका अन्तिम संस्कार मढानदी के तट पर किया गया ।

५४. सन्त तस्मैया बाबा

सन्त एकान्त बासी और सत्संग प्रेमी होते हैं । ईश्वर ही उनका सब कुछ होता है। वे प्रकृति के प्रेमी और रक्षक होते हैं । भगवतकृपा से सिद्धि प्राप्त कर अपरिचित जगहों में जाकर मानव सेवा करते हैं इसी उद्देश्य को लेकर सूर किशोर दास जी के आस-पास एक सन्त घूमते फिरते चरौत और फिर मटिहानी आए । मटिहानी में स्थित फकीर बाबा से राय-सल्लाह अनुसार तपस्या स्थल के खोज मे निकले, दोपहर का समय था बर की छाया में आराम कर रहे थे कि कुछ हलचलें हुई । देखने पर आश्चर्य चकित रह गये : एक चूहा ने एक विल्लीको पछाड़ दिया था । अव क्या था इस अद्भुत जगह को देख अपनी तपस्या की प्रथम त्रिशूल या खन्ती यहीं गाड़ दिए और तपः लीन रहने लगे । कुछ दिन बाद मकवान पुरके सेन राजा शिकार के हेतु यहाँ आए और इनकी साधना तथा इनके द्वारा अर्पण किया गया तस्मै (दूधका खीर) से सन्तुष्ट होकर बहुत सा जमीन दान देकर अपनी राजधानी लौट गए । तस्मैया बाबा के जन्म स्थान, नामं पता के सम्बन्ध मे सही जानकारी नहीं मिल पा रही है । उनके प्रयास से मटिहानी मठ विकसित हुआ था परन्तु आज वह मठ आस्था हीन लोगों के वीच पड़कर पतन की ओर जा रहा है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

इति

"मन को जितने वाला सर्वजयी होता है"

द्वितीय-पराग

५५. श्रीस्वामी सियाराम दासजी महाराज

(सीतामढी के सिद्ध बाबा)

सिद्ध बाबा के जन्म वि.सं. १८२९ में हुआ। इनका जन्म स्थान व्रजमंडल संयुक्त प्रदेश के किसी ग्राम में हुआ था। जाति के गौड ब्राह्मण थे। वसन्त पञ्चमी से १८४१ वि.सं.मे ज्ञान गुदरी स्थान वृदावन के महन्त स्वामी वृंदावनदास जी से श्रीसम्प्रदाय अनुसार षडकाक्षर मंत्रराज की टीका ग्रहण की। श्रीमिथिला की कबडी परिक्रमा के लिए प्रोत्साहन देने में आप का वड़ा हाथ था। सं. १९१७ वि. में जानकी स्थान के पूर्व में लक्ष्मण गंगा के तट पर कुटी बना ली इस का खर्च भिक्षावृत्ति से चलता था। सं. १९५५ में बाजार वालों ने भी कुछ अन्न चुंगी के स्वरूप कुटी के लिए नियत कर दिया। साधु सेवा में अधिक प्रसिद्धि पाने वाले सन्तों को आग्रह कर के रखते थे। पूजा, रसोई, चौका, वर्त्तन आदि प्रायः अपने हाथ से करते थे। प्रसिद्ध सन्त स्वामी सियालाल शरण जी आपके साथ १९ वर्ष तक रहे। सिद्ध बाबा के वाणी में अद्‌भुत आकर्षण था। कुटिया के कोठार में ताला नहीं लगता था। संत इच्छानुकूल वस्तु लेकर भोग लगा लेते थे। आपकी वाणी सिद्ध होने के नाते आपको लोग सिद्ध बाबा के नाम से जानते थे। सं. १९६७ में आप साकेत धामको प्रयाण किये। सं. १९८९ वि. में सिद्ध बाबा का पाषाणविग्रह मन्दिर से पृथक कराया गया। यह सेवा भक्त लक्ष्मीप्रसाद जी ने तीन हजार रुपये की लागत से की। अब सिद्ध बाबा के शिष्य स्वामी जनकनन्दिनी शरण जी और स्वामी राम दुलारी जी ने कुटी का संचालन कर रहे हैं। सन्त सेवा समयानुसार अच्छी होती है।

Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

(१७/३० धर्मलोक तारे)
संत नं. १८/१४ वर्ष ६ अंक ६ नं. १९४५ ई. कार्तिक सं. २००२ वि. ।

५६. श्रीनवलकिशोरशरणजी "फूलबाबा" श्रीपरमहंस आश्रम सीतामढी

आपका जन्म भोपाल शहर में हुआ है । जो मध्यप्रदेश की राजधानी है । आप राजपूत वंश के हैं । आपका गोत्र काश्यप है । आप के जन्म तिथि, तथा माता-पिताके नाम अज्ञात है । कारण, शैशवकाल में ही माता-पिताका देहावसान हो जाने के कारण आप विभिन्न पवित्र तीर्थ स्थालों मे घूमते रहे । इलाहावाद के कुंभ मेला में एक त्यागी रामायणी बाबा श्यामदास जी से दीक्षा-मंत्र लिया । इसके वाद वनारस, वृन्दावन, जनकपुर आदि क्षेत्रों में घूमते हुए हरिक्षेत्र मेला स्नान करके सीतामढी में पधारे । यहाँ महारानी की कृपा से यही सीतामढी में विश्राम लिए । कुछ दिन रहने के वाद (रामानन्द आश्रम से) अपने द्वारा कियागया निर्माण परमहंस आश्रम में साधु सेवा करने लगे । इसके वाद हनुमान् जी का मन्दिर बनाकर वहीं जप, तप करने लगे ।

श्रीफूलबाबा रसोपासक सन्त है । श्रीसीताराम के एकनिष्ठ अनन्य उपासक हैं । सुन्दर-सुन्दर पदों तथा स्तोत्रों से आपको वडा प्रेम है । भजन, साधना के अतिरिक्त इन्होंने कुछ अन्य पुस्तकों की रचना की है, जो निम्न प्रकार के हैं–

(१) श्रीमिथिला माधुरी ।
(२) "रसमोद अष्टयाम (पदावली) ।
(३) "सीतारामसंत्र-जपविधि ।
(४) सीताराम-प्रपत्ति-प्रार्थना ।
(५) सीतामही-रहस्यम् ।

श्रीरसमोद अष्टयाम पदावली से कलेवा कुंज की छविका पद-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करत कलेऊ संग दोउ प्यारे ।
जनक नन्दिनी अवध दुलारे ॥
वरफी मोदक तपत जलेवी खाजा घेवर अति रुचि कारे ।
बीज पाक रसगुल्ला खुरमा मोहन भोगपूप रसदारे ॥
पुड़ी कचौड़ी मठरी पापरि गुझिया गोभ्या मिसरी डारे ।
और अनेक भाँति व्यंजन कनककटोरन "अग्र" सुधारे" ॥

उक्त पदावली से दूसरा शयन छवि की छटा का पद–

महल में शोर करो जनि कोई ।
कछुक रहसवश कछु आलसवश, अवहि मैथिली सोई ॥
नुपुर दावि चलो मोरी सजनी, तनक झनक नही होई ।
पहरेवारी सजग होई रहियो, आवागमन न होई ॥
श्रीअग्रअलीज्यू, के प्राण जीवन धन, सियवर मैथिली सोई"

परिशिष्ट पदावली से :-

परम धन सीता नाम उदार ।
आगम निगम पुराण वरवानता कोऊ न पायो पार ॥
जोई पावत सो अति सुख छावत, बहत न पुनि भवधार ।
जाके जपत मिलत रघुपति प्रभु हित सों भुजा पसार ॥
परम सुखद माधुरी लला की प्रगटत हिय सुख सार ।
"मधुप अली" याहीको निशिदिन, रटिए बारम्बार ॥

श्रीसीता नाम उदार से–

"सी" कहते सुख ऊपजे, "ता" कहते तम नाश ।
तुलसी "सीता" जो कहै, राम न छाँडे पास ॥
जनकलली के पद कमल, जव लागि हिय नहि वास ।
राम भ्रमर आवत नही, तव लगि ताके पास ॥

५७. सियाराम सरूपशरण "सुहागलता" जी महाराज सदुगुरु निवास सीतामढी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

आप श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के विद्वान् महात्मा हैं । शील, स्वभाव और साधन परायणता तथा साहित्यप्रेम अतुलनीय हैं । आपकी लिखी हुई कुछ पुस्तकें ये हैं–

(१) कल्याण की साधना ।
(२) श्रीवैष्णव धर्म प्रश्नोत्तरी ।
(३) चतुष्टय गुटका ।
(४) श्रीहनुमंत प्रार्थना ।
(५) वैश्यकुल दिवाकर आदि से इन्होंने हिन्दीका काम किया है तथा साहित्यका भंडार भर रहे हैं ।

५८. **मौनी बाबा** *(आप कुछ जानना चाहते हैं तो अपने कर्तव्यकों को जानें)*

ये पूज्य श्रीकरपात्री जी श्रद्धेय स्वामी श्रीसरयूदास जी महाराज के कृपापात्र हैं । इनका स्थान मध्य प्रदेशान्तर्गत इतिहास महिधर में है । ये आनन्द कन्द परब्रह्म श्रीरामजी प्रियसखा, कविकूल- प्रदीप, श्रीराम सखे श्रीमहाराज की शिष्य परम्परा में से हैं । श्रीमौनी जी जनक मिथिला निवासी परम हंस श्रीस्वामी अवध विहारी दास जी महाराज के सम्पर्क में अधिक रहे हैं । आप के त्याग तथा भजन एवं साधना प्रभाव से परिचित नेपाल राष्ट्र एवं अमावा आदि राज्यों ने इनका बहुत सम्मान किया है । विद्वान् तथा महात्माओं के आग्रह से आपने भगवन्नाम के कीर्त्तन प्रचार तथा विद्यादान की अपनी वृत्ति को अग्रसर किया और रंगभूमि से ही जनकपुर में व्यासजी के तत्त्वावधान में रामलीला का सूत्रपात हुआ । जो बहुत दिनों तक चलने के वाद संयोजक की मृत्यु होने से वह दैनिक रामलीला बन्द हो गई । यदा कदा जनकपुर में रामलीला पार्टी आती भी है, तो अपना कार्य कर पुनः अपने स्थान को लौट जाती है ।

जनकपुर रंगभूमि में कवीन्द्र सर के तट पर श्रीमौनी बाबा करपात्री जी महाराज ने विशाल स्थान तथा मन्दिर बनवाया । उसमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान् श्रीमणिपर्वताधीश साकेत विहारी नामक सीताराम जी की प्रतिष्ठा कराई । उक्त श्रीठाकुर के नाम से कुछ भूमि भी लगा दी । इस मठका संचालनकार्य आपने गुरुस्थान महियर निवासी महन्त श्री स्वामी रामरंगीले शरण जी को सौंप दिया हैं । मौनी विद्यालय नामक संस्कृत विद्यालय स्थापित किया । इसमें अव अन्य विद्याकी पढाई होती है । श्रीकरपात्री जी महाराज ने नेपाल नरेशको प्रेरित करके जनकपुरधाम की पंचकोशी परिक्रमा की सड़क का निर्माण कराया, सड़क के दोनों ओर मधुर फल देने वाले आम जामून आदि वृक्ष लगवाये । ज्ञानकूप, विद्याकूप, सदानन्दकूप इत्यादि तीर्थोंका उद्धार कराया । आज उसी पंचकोशी मिथिला परिक्रमा सड़क को भारत सरकार के सहयोग से चक्रपथ बनाए जाने की संभावना है । कीर्तनजगत में श्रीमौनीजी महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा है । कीर्त्तन भी एक प्रकार की स्तुति ही है । भगवान् राम विष्णुस्वरूप होनें से उन्हें स्तुति प्रिय होती है– 'स्तुतिप्रियो महाविष्णुः' इसीलिए स्मृति कहती है । स्तुति भगवान् के गुणों का वखान है ।

५९. श्रीमत्परमहंस परिब्राजकाचार्य वेदोपनिषद्भाष्कर श्रीब्रह्मनिष्ठ स्वामी श्रीभगवदाचार्यजी महाराज

आपका जन्म सन् १८८२ ई. के लगभग पञ्जाब प्रान्त के स्यालकोट नगर में कान्यकुब्ज ब्राह्मण वंश मे हुआ था । आपके पिताजी का नाम पं. श्री गंगादत्त जी त्रिवेदी और माताजी का नाम श्रीमती माराक्षीदेवी था । सन् १८५७ के गदर के कारण आप लोग पञ्जाव चले गये थे । वाल्यकाल में ही इनके माता-पिताका साकेतवास हो गया था । काशी में संस्कृत पढे थे । आप अंग्रेजी के साथ ही उर्दू भी जानते थे । कुछ दिनोंतक दरभंगा नगर के राजकीय संस्कृत महाविद्यालय में साहित्य और दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया । वेदों के अद्वितीय विद्वान् श्रीसामश्रमी जी से वेद तथा वंग भाषाका ज्ञान प्राप्त किया ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID.

आपका अध्ययन, व्याख्यान, लेखन और शास्त्रार्थ कलाओं पर मुग्ध होकर बराही और नवाही स्थान- मिथिला के विद्याप्रेमी महान्त श्रीरामसुन्दर दास जी और श्रीपरमहंस जी महाराज ने अपनी-अपनी पाठशालाओं में अध्यापन के लिए आमन्त्रित किया । यह आमंत्रण आपने विल्कुल वेतन न लेने की शर्त पर स्वीकार किया । विद्यार्थी आपसे बहुत ही सन्तुष्ट रहते थे ।

कुछ ही समय में भारतव्यापी असहयोग आन्दोलन ने आपको आकर्षित किया । तत्काल ही आपने सरकारी डिगरियाँ- (उपाधियाँ) छोड़ दीं और देशोद्धार के कार्य में लग गए । हरिद्वार से वडी जगह अयोध्या के महंथ श्रीराम मनोहर के साथ अयोध्या जी चले आए । और यहीं इन्हीं महंथ जी महाराज से पंच संस्कार पूर्वक दीक्षा ग्रहण की । अनेक ग्रन्थोंका निर्माण किया । टीका और भाष्य लिखे जिनमें कुछ इस प्रकार हैं–

(१) श्रीरामानन्द दिग्विजय तथा उसकी हिन्दी टीका ।
(२) श्रीआनन्दभाष्य की प्रभा टीका (हिन्दी टीका) ।
(३) श्रीवैष्णव मताब्जभाष्कर पर हिन्दी टीका ।
(४) श्रीराम-पटल पर हिन्दी टीका ।
(५) श्रीयतीन्द्र विंशति ।
(६) श्रीयतिराज स्तव ।
(७) सप्तश्लोकी ।
(८) यतिराज मंगल ।
(९) श्रीरामानन्द दिग्विजय (महाकाव्य)
(१०) आश्रम करारको द्वार ।
(११) भक्त-कल्पद्रुम ।
(१२) प्रपन्नकल्पद्रूम ।
(१३) भक्तिभागीरथि ।
(१४) श्रीसम्प्रदाय रक्षा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

(१५) परम्परापरित्राण ।
(१६) विभूतिधारणा विचार ।
(१७) तत्वेब्दो दोधन मीमांसा ।
(१८) पुष्पाञ्जलि ।
(१९) दिव्यदर्शन ।
(२०) ईशावास्योपनिषद्-भाष्य ।
(२१) केनोपनिषद् भाष्य ।
(२२) आनन्दभाष्य की प्रभाटीका ।
(२३) कठोपनिषद्भाष्य ।
(२४) त्रिरत्नी (तत्वतपनिरूपण)
(२५) श्रुत्यादिवाक्य विवृति (केवल चतुर्थ अध्याय पर) ।
(२६) श्रीवैष्णव माता की "भास्कर" पर प्रकाश नामक टीका ।
(२७) अथर्ववेद में अयोध्या जी ।
(२८) प्रस्तुत प्रसंगभंग ।
(२९) श्रीदशरथमोक्ष ।
(३०) सामवेदका भगवद्भाष्य (अप्रकाशित) ।
(३१) मारुतिस्तव ।
(३२) लकोतराम्बाचरणाश्रयणम् ।
(३३) प्रश्नोपनिषद् भाष्य ।
(३४) मुराडकोपनिषद् भाष्य ।
(३५) माणाडूक्योपनिषद् भाष्य ।
(३६) तैतरीयोपनिषद् भाष्य ।
(३७) एतरेयोपनिषद् भाष्य ।

इत्यादि अनेक पुस्तकें इनकी प्रकाशित हो चुकी हैं । आपके सम्प्रदायिक और असम्प्रदायिक भिन्न-भिन्न पत्रों में प्रकाशित लेखों का एक सुन्दर संग्रह भगदाचार्य लेखरत्न गंजूषा के नाम से प्रकाशित हो चुका है ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE-IKS

आप जनकपुर से इतने प्रभावित थे कि- वाहर से अनेक बुलावा आने पर भी नहीं जाते थे । आपने जनकपुर को अपना साधनाक्षेत्र बनाया था ।

(जागृति महात्मा १६/३ श्रीरामानन्दआश्रम जनकपुर)

६०. रामकृपालु शरण जी

ये एक चमत्कारी सन्त, थे जिन्होंने राम भक्ति धाराको बढाया और जनकपुरधाम में ६ दशक पूर्व से 'सन्त तुलसी जयन्ती' का आयोजनकर एक नयाँ कार्य का प्रारम्भ किया ।

६१. पं.राम स्नेही दास

'जानकी-चरितामृत संस्कृत' महाकव्य । यह महाकाव्य जनकपुरधामका धरोहर है । इसमें जानकी जी की महिमाका सुन्दर वर्णन किया गया है । ये महात्मा भजनानन्दी साहित्यानुरागी मर्मज्ञ तथा कर्मनीष्ठ थे ।

६२. भजनानंदी स्वामी रामशरणदास

श्री महावीर स्थान (वस स्टैण्ड) समीप, श्रृंगारकुञ्ज अखण्ड ज्योति" कथवनिया कुटी हैं । जहाँ नाम जापी स्वामी राम शरण दास थे । आप धनुषा जिला के कुम्हरौरा ग्राम निवासी थे । वचपन में ही माता-पिता के स्वर्गवास हो जाने से आपका लालन-पालन ननिहाल में ही हुआ । रत्नसागर के प्रसिद्ध संत श्रीनारायण दास जी के आप शिष्य थे । १२ वर्षों तक कंचन वन में भजन करने के बाद १२ वर्षों तक चारोधाम का पैदल भ्रमण किया और सभी प्रमुख तीर्थों के भ्रमण के वाद १९३९ ई. में जनकपुरधाम में एक कुटी स्थापना की जो "श्रृगार कुंज अखण्ड ज्योति" कथ बनिया कुटी से प्रसिद्ध हैं ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDP

रहते थे। प्रत्येक अमावास्या, पूर्णिमा, एकादशी, संक्रान्ति जव कभी अपनी इच्छानुसार पंचकोशी मिथिला अन्तरगृह-परिक्रमा किया करते थे। कुटी में ज़मीन की आयस्ता नहीं होने पर भी भजन के प्रभाव से प्रत्येक साल पच्चीसों हजार का अन्न दान क्रिया जाता था। इनके शिष्यों में एक राम स्वरूप दास जी हैं, जो हनुमान्जी के परमभक्त हैं। आप अखण्ड ज्योति श्रीहनुमान्जी के सामने ३१ वर्षो से जलाते है। जिसमें प्रत्येक माह का खर्च १० के.जी. तौल पदार्थ हैं। यह सव भजन के प्रभाव से ही परमार्थ से चलता है। इसी कारण, एक कहावत प्रसिद्ध है- 'रामधनीको क्या कमी'।

६३. **स्वामी श्रीराम गुलाम दास मधुकर (नारद)**

आप का जन्म गया जिला अन्तर्गत देवकुण्डधाम के विरई नाम की जगह में हुआ। आपके पिता का नाम कुवेरनाथ सिंह और माताका नाम सोनशीला था। आप का बचपन का नाम सिद्धनाथ सिंह था, वाद में वैष्णवी दीक्षा के वाद स्वामी राम गुलाम दास जी पड़ा। आप धनुषधारी श्रीहनुमंत लाल के उपासक रहे। जनसम्पर्क से अधिक दूर रहकर भगवद्भजन किया करते थे। गाँव-घरों मे बालकों को संगठन कर रामनाम की फेरी किया करते थे। आप रामानन्दी सम्प्रदाय के प्रचारकों में एक थे। मान, सम्मान तथा अपमान ने आपको कभी भी प्रभावित नही किया। वि.सं. २००४ में अवध सरिस मिथिलाको मानकर मिथिला की राजधानी जनकपुर के दक्षिण द्वार पर रहे कल्याणेश्वर सिद्धपीठ विमाण्डके ऋषिसिद्ध अन्तर्गत वासोपट्टी में रहने लगे। आप एक पत्रकार के रूप में रहने लगे। और जनकपुर से सम्पर्क वढता रहा। आप एक पत्रकार के रूप मे "परम हंस प्रभा" नाम की पत्रिका और लेखक की हैसियत से धार्मिक साहित्य की रचना किया करते थे।

आपका ग्रन्थ दिव्य श्रीसाकेतधाम की झाँकी (२) परम सिद्धबाबा

Nepal Sanskrit University, Valmiki Campus, Kathmandu

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

परमहंस चरितामृत चालिसा । (३) सद्‌गुरु चरितमृत चालिसा (४) मानसप्रेमयज्ञ षोडशी, और प्रतिद्वन्द्व मिमांसा चालिसा प्रकाशित हैं, तथा परमहंस रामायण, मिथिला चालिसा आदि अनेकों ग्रन्थ अप्रकाशित है ।

६४. भालु खोला के श्री नागा बाबा

श्रीनागा बाबा वि.सं. १९०१ में उत्तर प्रदेश के राय वरेली जिला अन्तर्गत "जनई" ग्राम में पैदा हुए । माता रंजनी देवी तथा पिता वैद्यनाथ सिंह था । इनका बचपन का नाम बदरी सिंह था । वैष्णवी दीक्षा के वाद का नाम स्वामी प्रमोदशरण हुआ । बाबा जन्म से ही संस्कारी थे । प्रयागस्थित वदनपुर में नौ वर्ष की अवस्था में चूडाकरण मुण्डन के वाद गंगास्नान करते समय पानी में ही गुम हो गये । और करीब तीन दिनों के वाद जल से वाहर प्रेतों ने लाया । कारण, मन्दिरसमीप के पेडों पर प्रेतों का निवास था । भीक्षाटन कर के लौट रहे परमसिद्ध रामदास बावा को प्रेतों ने घेर कर मृतक वालक को जिलाने की बात कही । सिद्ध बावा ने मृतक नागा बावा को पहचान कर जीवित कर दिया और नागा बाबा उन्हीं के शिष्य वन गये । वि.सं. १९१२ में माता-पिताके स्वर्गवासी हो जाने से स्वतंत्र हो गये और स्वछंद से घूमने-फिरने लगे । अयोध्या में बहुत दिन रहे । वहीं नागा बावा अयोध्या जानकीघाट स्थित वदनपुर स्थान मधुकर कुंज के परम संत स्वामी सियाशरण से उपासना प्राप्त की । वि.सं. १९४७ में श्री सरयूजीने उन्हें मिथिला में आकर भजन करने का आदेश दिया । नागा बावा मिथिला में जाकर मिथिलास्थित जनकपुरधाम के कमला नदी के उस पार "नन्द महरी" नामक पर्वत के नीचे त्रिमुंहान के वीच भालु खोला चल पड़े । ब‌ावा के भजन का मार्ग विचित्र था । कभी लंगोटी, कभी साड़ी-चूड़ी और कभी दिगम्वर (नागा) रूप में यत्र-तत्र घूमा करते थे । जड़ी-वूटी सेवन कर २८ वर्ष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विताए यानी वि.सं. १९७० तक इन्होनें वहाँ भजन किया । भालु खोला में बहुत दिनों तक रह जाने पर बाघ (नरसिंह) हिरन (श्रृंगी ऋषि) भालु (जामवंत) व्यास (गिदड़) भैरव (कुत्ता) काग-कौआ आदि पशुपक्षियों को एक साथ भोजन कराते रहे । इतना ही नहीं सर्प की शैय्या पर सोते थे । एक रोज सर्प पर सोते समय सर्प बाबा के केहुनी से दब जाने के कारण सर्पका दंत उन्हे चुभ जाने से विष व्याप्त किया और मरणासन्न की अवस्था हुई और उन्हें जलाने की तैयारी की गई । मुख में अग्निवत्ती देने के लिए ।

गोदार निवासी युवक रघुनाथ राम तैयार हुए और इसी बीच नागा बाबा राम-राम कहते- उठकर बैठ गए । यह आश्चर्यजनक दृश्य देख सभी भाग खड़े हुए फिर बाबा के बुलाने पर कुछ लौटे और अधिकांश लोग पुनः उनके सामने नहीं आए । इसके वाद भुतही में मृगसर पुरन्दाहा में परशुराम तलाव खुदवाया और इसी क्रम में जनकपुर पधारे । इसी बीच कल्याणेश्वर के सिद्ध महापुरुष (वूढा सरकार) से सम्पर्क कर योगक्रिया को प्राप्त किया ।

जनकपुर रहने धके क्रममें रामस्वरूप बी.ए. से भी अच्छा सम्पर्क रहा । नेपाल के पूर्व प्रधानमन्त्री टंकप्रसाद आचार्य सपत्नी से भी वावा का निकटतम सम्बन्ध रहा । वे दिन मे साथ रहते और अर्द्धरात्रि में गंगासागर के श्मशानघाट पर चले जाते थे । वे बहुत दयालु स्वभाव के थे : जनकपुर में एकदिन लाला श्रीपति लाल के दो पुत्रीको अपनी बहन समझकर शादी करवादिए थे । तथा उन्हें कुछ जमीन भी उपलब्ध कराया था । एक गरीब खतविनी की भी अच्छा सहयोग किया । एक पगली को सही हालत में पहुँचा दिया । ददुआ (फैजावादी) नरेश की स्त्री भैरव से आक्रान्त हो जाने से नरेश के आग्रह पर फैजावाद जाकर इन्होंनें उनकी स्त्री की हालत ठीक की । इस प्रकार उनके जीवन की अनेक चमत्कारी घटनाएँ प्रसिद्ध हैं ।

साकेतधाम जाने से पहले इन्होनें भविष्यवाणी की थी- कि मैं

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MoE

गिरुंगा, हाथ पैर में चोट आएगी और दर्द से बेचैन होकर २-३ दिनों के वाद मेरी मृत्यु होगी और अपने भविष्यवाणी के मुताविक ही जनकपुर में ही उनकी मृत्यु हुई। जिनके स्मरण में गंगा सागर के पश्चिम तथा धनुष सर के पूर्व डील पर पं. केशवद्धारा मन्दिर निर्माण किया गया है।

६५. परमसिद्ध पुरुष कलना के "परमहंस बाबा"

मिथिला की राजधानी जनकपुरधाम से पूर्व में शिलानाथ पश्चिम में जलेश्वर नाथ, उत्तर में क्षीरेश्वर नाथ तथा पिनाकेश्वर नाथ और दक्षिण में कल्याणेश्वर नाथ महादेव हैं। कल्याणेश्वर को बोल-चाल में कलना कहते हैं। जो भारत के मधुवनी जिला में पड़ता है। आज कलना एक सिद्धपीठ के रूप में समझा जाता है। यहाँ एक परम सिद्ध परमहंस वावा थे। जो अब हमारे बीच नहीं हैं। किन्तु उनकी ख्याति जनमानस में अभी तक विद्यमान है। आप वाणी के सिद्ध पुरुष थे। आपका रहना साधारणतः अटपटा सा था। बोलते कम थे। आप जिसे कुछ कह देते थे वे सभी फलीभूत होती थी। इन्हीं कारणों से नेपाल तथा भारत के आरत जनता आपको हमेशा घेरे रहती थी।

बाबा का जन्म सं. १९५८ साल में अग्रहण अष्टमी बुधवार के दिन एक उज्ज्वल वंश में गोपाल गंज जिला के अमही ग्राम में हुआ था। इनके पिताका नाम प्रयाग शुक्ल तथा माताका नाम जशोधरा था। इनका नाम ठाकुर शुक्ल था। वावा शुरु से ही भक्ति मार्ग का अनुसरण कर शिव पार्वती और सीता राम के भक्त थे। जहाँ तहाँ कीर्तन कर गोसेवा में इनकी प्रवृति अधिक देखी जाती थी। उपवीत (व्रतवन्ध) हो जाने पर तीर्थाटन के लिए निकले। काशी तथा अयोध्या जैसे पवित्र स्थानों में घूमते हुए तिरहुत के विशौल कलना आए और असाधारण रूप से रहने और खाने लगे। माता-पिता की मृत्यु के वाद

Nepal Sanskrit University, Balmiki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आप स्वतंत्र होकर खेत, चौरी, और ऊँख के खेतों में विचरते रहते थे। मिर्चा, इमली और वेल तथा वेलपात आदि खाकर भगवत भजन में लीन रहा करते थे। रात में सव के सो जाने पर बौलाहा (बाबला) की भाँति गाँव से बाहर खेत चौरी में घूमा करते। जाडों के दिनों में भींगा कपडा पहन लेते। जिन लक्षणों को देख साधारण लोग इन्हें पगला ही समझा करते थे। परन्तु आप एक सही संत थे। अहर्निश निराहार तथा फलाहार कर के भगवद्भजन किया करते थे। आपका वचन कभी खाली नही जाता था। जिसे जो आशीष देते थे वह फलीभूत होती थी। किन्तु आप बोलते बहुत कम थे, और लोगों की वातों को सुनते हुए भी अनसूनी कर देते थे। आपकी विलक्षण शक्ति देखकर लोग अर्चना किया करते थे। कारण ऊख की खेत में जाकर २-३ कट्ठा के ऊँख, ४-५ कदिमा, १० के जी इमली, १-२ टोकरी तुलसी और वेलपात तथा २-३ कट्ठा का चनाका साग एक सांस में खा डालते थे। यही इस सन्त की असाधारणता एवं विशेषता थी। यह विशेषता सभी सन्तों में असम्भव है। इसी कारण, जनता सन्तों के प्रति आकृष्ट होती है- श्रद्धा करती है।

६६. १०८ स्वामी श्रीवासुदेवाचार्य जी महाराज (दार्शनिक सार्वभौम)

आपका जन्म मिथिला प्रदेश के वाजपट्टी ग्राम में राठौर क्षत्रीय वंश मे सं. १९५३ वि.सं. में हुआ था। आप के पिता श्रीसम्प्रदाय मे दीक्षित थे। उन्होंने बद्रिकाश्रम के बनों मे पाँच वर्ष तक घोर तपस्या की उसी के फलस्वरूप श्रीसम्प्रदाय के गौरव स्वामी जी ने जन्म लिया। बाल्यावस्था मे माता जी की साकेतयात्रा देख उन्हें शरीर की नश्वरताका ज्ञान हुआ। कुछ दिन के वाद अयोध्याजी में वयोवृद्ध विद्वान श्रीमथुरादास जी के शिष्य हुए। आपने श्रीराम जी की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE

उपासना का रहस्य बतलाया। वैष्णव- समाज की उन्नतिको ध्यान में रखकर संस्कृतका अध्ययन आरम्भ कराया। न्याय, व्याकरण, वेदान्त, मीमांसा आदि दर्शनों में पारंगत होकर सिन्ध, पंजाब, यू.पी., विहार और राजपूताना आदि भारत के विभिन्न प्रान्तों में धर्मध्वजा फहरा रहे हैं। आपने श्रीमद्भागवतगीता का समन्वयभाष्य वाल्मीकीय-रहस्य-सिद्धान्त पदावली समन्वय सिद्धान्त, राम समन्वय भाष्य है। जो अभी अप्रकाशित है। आपकी विरक्तता अनुकरणीय है। श्रीसम्प्रदाय में आप का बहुत ऊँचा स्थान है। आपके स्थान दार्शनिक आश्रम अयोध्या में एक विशाल पुस्तकालय है। जिसका वि.सं. १९८८ में उद्घाटन हुआ। इस पुस्तकालय का नाम दार्शनिक पुस्तकालय है। इसमें जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य जी के लिखे हुए बहुत से ग्रन्थ सुरक्षित हैं।

६७. १०८ श्रीमान् महन्त लषण नारायण दास जी महाराज ('विद्याविनोद' वैष्णव भूषण)

आपका जन्म मुजफ्फरपुर जिले के कफेन ग्राम मे सन १८८२ ई. के लगभग ब्राह्मणवंश में हुआ था। बाल्यावस्था में ही आप चरौत मटिहानी स्थान के तत्कालीन महन्थ श्रीदेव दास जी महाराज के शिष्य हुए। कुछ काल वाद ही आप पर स्थान सम्भालने का भार आया। दरभंगा और नेपाल मे आपका अच्छा सम्मान होता है। श्रीमिथिला जी के आप वर्त्तमान विदेही थें। आप के दान, सदाचार, सहिष्णुता, गम्भीरता और शीलस्वभाव सम्बन्धी अनेक मनोरंजक अद्भुत कथा साधुओं द्वारा सुनी जाती है। सन् १९२५ ई. के लग-भग श्री लक्ष्मीनाराय्यण संस्कृत विद्यालय की स्थापना की। जिसमें व्याकरण और साहित्य की अच्छी पढाई होती हैं। १९४१ ई. में एक अंग्रेजी स्कुल की स्थापना की और भी अनेक विद्यालयों, स्कूलों और औषधालयों को पर्याप्त सहायता देते थें। बहुत से बगींचे लगवाये मिथिला के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

आप स्वतंत्र होकर खेत, चौरी, और ऊँख के खेतों में विचरते रहते थे । मिर्चा, इमली और वेल तथा वेलपात आदि खाकर भगवत भजन में लीन रहा करते थे । रात में सव के सो जाने पर बौलाहा (बाबला) की भाँति गाँव से बाहर खेत चौरी में घूमा करते । जाडों के दिनों में भींगा कपडा पहन लेते । जिन लक्षणों को देख साधारण लोग इन्हें पगला ही समझा करते थे । परन्तु आप एक सही संत थे । अहर्निश निराहार तथा फलाहार कर के भगवद्भजन किया करते थे । आपका वचन कभी खाली नही जाता था । जिसे जो आशीष देते थे वह फलीभूत होती थी । किन्तु आप बोलते बहुत कम थे, और लोगों की वातों को सुनते हुए भी अनसूनी कर देते थे । आपकी विलक्षण शक्ति देखकर लोग अर्चना किया करते थे । कारण ऊख की खेत में जाकर २-३ कट्ठा के ऊँख, ४-५ कदिमा, १० के जी इमली, १-२ टोकरी तुलसी और वेलपात तथा २-३ कट्ठा का चनाका साग एक सांस में खा डालते थे । यही इस सन्त की असाधारणता एवं विशेषता थी । यह विशेषता सभी सन्तों में असम्भव है । इसी कारण, जनता सन्तों के प्रति आकृष्ट होती है- श्रद्धा करती है ।

६६. १०८ स्वामी श्रीवासुदेवाचार्य जी महाराज (दार्शनिक सार्वभौम)

आपका जन्म मिथिला प्रदेश के वाजपट्टी ग्राम में राठौर क्षत्रीय वंश मे सं. १९५३ वि.सं. में हुआ था । आप के पिता श्रीसम्प्रदाय मे दीक्षित थे । उन्होंने बद्रिकाश्रम के बनों मे पाँच वर्ष तक घोर तपस्या की उसी के फलस्वरूप श्रीसम्प्रदाय के गौरव स्वामी जी ने जन्म लिया । बाल्यावस्था मे माता जी की साकेतयात्रा देख उन्हें शरीर की नश्वरताका ज्ञान हुआ । कुछ दिन के वाद अयोध्याजी में वयोवृद्ध विद्वान श्रीमथुरादास जी के शिष्य हुए । आपने श्रीराम जी की

Nepal Sanskrit University, Balmandir Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

उपासना का रहस्य बतलाया। वैष्णव- समाज की उन्नतिको ध्यान में रखकर संस्कृतका अध्ययन आरम्भ कराया। न्याय, व्याकरण, वेदान्त, मीमांसा आदि दर्शनों में पारंगत होकर सिन्ध, पंजाब, यू.पी., विहार और राजपूताना आदि भारत के विभिन्न प्रान्तों में धर्मध्वजा फहरा रहे हैं। आपने श्रीमद्भागवतगीता का समन्वयभाष्य वाल्मीकीय-रहस्य-सिद्धान्त पदावली समन्वय सिद्धान्त, राम समन्वय भाष्य है। जो अभी अप्रकाशित है। आपकी विरक्तता अनुकरणीय है। श्रीसम्प्रदाय में आप का बहुत ऊँचा स्थान है। आपके स्थान दार्शनिक आश्रम अयोध्या में एक विशाल पुस्तकालय है। जिसका वि.सं. १९८८ में उद्घाटन हुआ। इस पुस्तकालय का नाम दार्शनिक पुस्तकालय है। इसमें जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य जी के लिखे हुए बहुत से ग्रन्थ सुरक्षित हैं।

६७. १०८ श्रीमान् महन्त लषण नारायण दास जी महाराज ('विद्याविनोद' वैष्णव भूषण)

आपका जन्म मुजफ्फरपुर जिले के कफेन ग्राम मे सन १८८२ ई. के लगभग ब्राह्मणवंश में हुआ था। बाल्यावस्था में ही आप चरौत मटिहानी स्थान के तत्कालीन महन्थ श्रीदेव दास जी महाराज के शिष्य हुए। कुछ काल वाद ही आप पर स्थान सम्भालने का भार आया। दरभंगा और नेपाल मे आपका अच्छा सम्मान होता है। श्रीमिथिला जी के आप वर्त्तमान विदेही थें। आप के दान, सदाचार, सहिष्णुता, गम्भीरता और शीलस्वभाव सम्बन्धी अनेक मनोरंजक अद्भुत कथा साधुओं द्वारा सुनी जाती है। सन् १९२५ ई. के लग-भग श्री लक्ष्मीनारायण संस्कृत विद्यालय की स्थापना की। जिसमें व्याकरण और साहित्य की अच्छी पढाई होती हैं। १९४१ ई. में एक अंग्रेजी स्कुल की स्थापना की और भी अनेक विद्यालयों, स्कूलों और औषधालयों को पर्याप्त सहायता देते थें। बहुत से बगींचे लगवाये मिथिला के

Nepal Sanskrit ... Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDE

महन्तों में आपका सर्वोच्च स्थान है। संस्कृत एशोसियशन (विहार) ने इनके विद्याप्रेम पर मुग्ध होकर इन्हें 'विद्याविनोद' की उपाधि से विभूषित किया, श्रीमहन्थ ज़ी के वैराग्य और वैभव का सहसा स्मरण हो उठता है। ऐसे महात्मा संसार में विरले है। ऐसे महामानवों के प्रति श्रद्धावनत होना चाहिए। उनका अनुकरण करना चाहिए।

६८. १०८ श्री स्वामी परमहंस रामहृदय दासजी

आप विहार प्रान्त के मुजफ्फरपुर जिले के पुर्खरौली स्थान के श्रीरामानन्दीय श्रीवैष्णव महात्मा हैं। आप वैष्णवतन्त्र शास्त्र के मर्मज्ञ और अष्टाङ्ग में परमप्रवीण हैं। ये विद्यार्थीयों की सहायता के लिये अपने शरीरके वस्त्र तक उतार देने में सङ्कोच नहीं करते हैं। आपने जनकपुरधाम मिथिला में एक कुटिया बनाई है। वे विद्यार्थियों के सुविधा के जनक माने जाते हैं। "श्रीरामानन्द-वैष्णव-सेवा-संघ" के आप संरक्षक हैं। वैष्णव सम्प्रदाय की प्रत्येक संस्थाओं में हाथ रखते हैं। ऐसे सद्भावुक महात्मा संसार मे बहुत कम होते हैं। ऐसी उदात्त भाव और व्यवहार से समाज और राष्ट्र समुन्नत होता है। जीवनको परिष्कृत रूप में चलानें में ऐसे सन्तों का सदा हाथ होता है। इसी लिए तो वे पूजनीय हैं, सम्माननीय हैं और आदर्श हैं। परोपकार, त्याग और 'वसुधैव कुटुम्बंकम्' की भावना मानव-दिनचर्या और मानव-जीवनकलाको अवश्य ही परिष्कृत सभ्य, सम्मानित एवं उदात्त करेगी इसीलिए सन्त ओर सन्त साहित्य समाज की उन्नति एवं शालीनता के लिए अत्यावश्यक हैं- पठनीय हैं- व्यवहरणीय हैं।

६९. स्वामी वजरंगदास जी महाराज

श्रीचन्द्रदास जी महाराज काठिया के शिष्य श्रीभगवान् दासजी,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

उनके श्रीराम गोपाल दास जी, उनके श्रीनृसिंह दासजी, उनके कमलदासजी और उनके शिष्य श्रीखाकी महाराज हुए। आपका जन्म १९३५ के लग-भग अयोध्या जी से उत्तर १८ कोष पर किसी गाँव में हुआ था। आप दीर्घायु होकर १९६५ माघ ब.दी. तीज (गुजराती पौषवदी) को श्री साकेतधाम पधारे। आप श्रीराम मन्त्र के उत्कट जापी थे। ३० वर्ष की उमर में अकस्मात् देहान्त होकर स्वर्गलोक गये और पुनः जीवित हो गये और उसी दिन से अहर्निश नाम जप एवं मन्त्र जप के सिवा खान-पान सोना भी छोड दिया। स्नान करके भजन मे बैठ जाते, केवल जल और दूध पीकर भजन करते थे। रात मे नींद आती तो रात रात भर परिक्रमा करते भजन करते थक जाते तो अपनी जटा को इमली के पेड में बाँध कर खड़े हो जाते और भजन करते, नींद का झोंका आते ही जटा खींचती और आप जग जाते। इस प्रकार आपने भूख, नींद और मृत्यु को जीता। आपका वचन कभी मिथ्या नही होती थी। रामबाणवत् अमोध था, जिसको जो कहते तुरुन्त हो जाता। आपने अपना जीवन घर के बाहर जंगलों में ही विताया। वे अहिंसक थे। जनकपुर आपको वड़ा प्रिय था, आपने अपनी इन्हीं आँखों से श्रीशिवजी, श्रीहनुमान्जी, और परब्रह्म प्रभु श्रीसीतारामजी को कई वार प्रत्यक्ष दर्शन पाए और दूसरों को भी भगवान के दर्शन कराये थे। आपकी चरणपादुका पूजकर आज भी जन-समाज अपनी मनःकामना सिद्ध कर सुखी होते हैं।

उत्तर गुजरात के प्रायः सभी रियासतदार हिन्दू राजा और नवाव भी आप के चरणों में पूर्ण श्रद्धा रखते थे। त्याग तो इतना भारी था कि राजा लोग प्रार्थना कर हार गये, परन्तु आपने जमीन, जागीर कुछ भी लेना स्वीकार अन्त तक नही किया।

आपके शिष्यों मे श्रीसीतारामीय श्रीमथुरादास जी महाराज श्रीरामानन्द सम्प्रदाय के सम्माननीय महापुरुष हैं। साहित्य प्रचार तथा कीर्तन द्वारा खूब सेवा की है। कटाव का श्री राघवेन्द्र मन्दिर आपकी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDP

कीर्ति-स्मारक है। सम्प्रदाय के होनहार संत विद्वानों को आप सदा से प्रोत्साहित कर उनका कार्यपथ प्रशस्त बनाते आए हैं। आपने बीस से अधिक पुस्तकें लिखी हैं, और छपाये तथा मुफत बाँटे है। जनकपुरधाम में श्रीरामानन्द आश्रम जो आज भी श्री सम्प्रदाय में प्रसिद्ध हो रहा है वह आपकी कृपाका मधुर फल है।

(१६/१जागृति वैष्णवांक पृष्ठ ४२४) ।

७०. श्रीसद्‌गुरुशरण "मधुरलता" सीतामढी जनकपुर

आपका जन्म कान्यकुब्ज ब्राह्मण के घर जिला हरदोई (उ.प्र.) में हुआ। आपने निन्यानव्बे करोड नौ लाख, नौ हजार, नौ सौ, निन्यानव्बे राम नाम अपने सतगुरु भगवान् की असीम कृपा से जपा। उसके प्रभाव द्वारा आपको असीम सामर्थ्य और सुखप्राप्त हुआ। श्रीगुरु की सेवा आपने निरन्तर ३० वर्ष तक की, जिसके फलस्वरूप आपको अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला, उडिया, उर्दू आदि अनेकों भाषाओं का ज्ञान था। आपकी कविताएँ चुटकीली और प्रभावपूर्ण होती थीं। आप हर समय प्रसन्न रहते थे। वर्त्तमान श्री सद्‌गुरु निवास सीतामढी के महन्त आपकी, रचना का एक नमूना के रूप में यहाँ प्रस्तुत है –

"भक्ती का डंका भारत में, वजवादिया प्रेमलता जूने।
वर्षाय राम नाम मेघनको, वजवादिया प्रेमलता जूने॥
रटवाय 'मधुर' सियाराम नाम, लाखन की भव बाधा नासी।
प्रस्तर अनेक दुःख दीनन के, भजवादिया प्रेमलता जूने॥

इसी प्रकार की अनेकों कविताएँ आपने रची हैं।

एक कविता आपकी कंठी चन्दन के विषय मे है –

भारत का अति उपकार किया इन कंठी चन्दन वालों ने।
लाखों संकट सिरधार किया इन कंठी चन्दन वालों ने।
पर अवता ठग-वेकूफ-धूर्त-वेकारों की टाइटल पाई।
गए भूलि जो काम अपार किया इन कंठी चन्दन वालों ने॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MoE

है आँधि प्रवल उठी भाई चहुँदिसि ते वचना मुसिकिल है ।
वस केवल प्रभु आधार लिया इन कंठी चन्दन वालों ने ॥
कह मधुर- कभी सुख शान्ति नही भक्तों की निन्दा करने से ।
सिद्ध धर्म हेतु अवतार लिया इन कंठी चन्दन वालों ने ॥

आपकी कविता अति रोचक होती है ।

७१. श्रीभारतेन्दु-बाबु की जनकपुर यात्रा

भारतेन्दु वावू श्रीहरिश्चन्द्र जी मुजफ्फरपुर से दरभंगा और मधुवनी होकर सीधे जनकपुर की राह यात्रा किए । सड़क अच्छी न होने के कारण कंहीं धान की क्यारियों से कहीं नालों से और कहीं टीलोंपर चलना पड़ता था । हरिश्चन्द्र जी के शव्दों में- कहीं गाड़ी पर चलिये तो चरखी पर औ पालकी पर रहिये तो झुलेपर झुलने का मजा आता है । ऐसी राह में थोड़ी सी झोल-झाल और धूप ओसका कष्ट छोड़ वाँकी सव वातों का सुख है पर हाथीपर जाने पर आराम है । इस प्रदेश में हाथी दुर्लभ नहीं । राह में जहाँ देखो यानी धान या सरसों । यहाँ के लोग कहते हैं कि जव श्रीजानकीजी महारानी विदा होकर जाने लगीं सब लक्ष्मी उनके साथ थी । यहाँ के लोगों को दुःखी देख वह अपने आँचल का धान यहाँ छींट दी । यही कारण है कि यहाँ धान प्रचुर मात्रा में पाया जाता है । सरसों की भी वड़ी बहार है । जहाँ तक दृष्टि जाती है सरसों ही सरसों का खिले कित्ता पिला गुद-गुदेजी वालों पर एक अदव होता है । सरसों फूली देखिये । एजू मोहन मीत शिशिर विरह मानहुँ भयो, तन वसन्त को पीत गेंदा है खिला वाग में, खेतों में भी सरसों । हराभरा जो वस्ती है तो गुलजार वसन्तो ।

आखिर हिन्दू राजा रणजीत सिंह जी भी अजब तवीयत के व्यक्ति थे । कहते है कि- सरसों की ऋतु में वड़े वड़े चार-चार पाँच-पाँच कोस के सरसों के खेत वह तैयार करते थे । और जब फूलने की खबर आवे तव अकेले घोड़े पर उस खेत के बीच में जाकर खड़े होते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

और जिसका खेत गफिन होता उसको बहुत कुछ इनाम देते । सचमुच कैसा उनको आनन्द होता होगा । खैर थोड़ा बहुत वह आनन्द हम लोगों ने भी ले लिया । औरअन्नों के खेत बहुत कम देखने में आये, हाँ अरहर के खेत मिले, वहाँ के अरहर के पेड़ ऊँचे होते हैं और बहुत घने, खेत के बीच खड़े रहिये तो जी दुसरा हो जाता है । लगता है आदमी ख्याल के पुलाव पकाने । सचमुच ही स्वाभाविक शोभा है । वह कारीगरी कितनी भी वघारिये कभी इस वनावटी चीजों में नहीं । उस अनूठे उस्ताद के खेल में अकल की दाल ही नही गलती, जो आँखों को सुख और दिलको चैन इन खेतोकें देखने मे मिलता है, और चित्त में भावों के जैसे तरंग वातों में उठते है । कृष्टल पैलेस में भी वह आनन्द नही । नगर निवास छोडकर ग्राम्य जीवन की ओर वेतहाशा जी दौडता है । गाँव में नयाँ अन्न, अच्छा, गोरस, शुद्ध, हवा, हलका पानी का वहारी और सव स्वाभाविक शोभा ही शोभा और सिधे लोग और उनके सच्चे सहज और मधुर व्यवहार ।

किसी कवि ने कहा है –

तरुणं सर्सयशाकं नवोदनं विच्छिलानि दधीनि ।
अल्पव्यचेन सुंदरि ! ग्राम्यजने मिष्टमश्नाति ॥

उसमें उस देश के आदमियों की कौन कहे जनावर तक सीधे । एक दिन सवेरे मैं पालकी पर और मेरे साथ के लोग गाड़ी पर चले जाते थे । एक गाँव के पास गौओं का झुण्ड मिला कम से कम दश हजार गावें होगीं । हम लोग इनके बीच में से चलते थे ।

मैने यह श्लोक पढा –

अग्रतस्सन्तु में गावों गावो में सन्तु पृष्टतः ।
गावो में हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥

इन गौओं का अंग वरावर पालकी के आदमी से छु जाता था पर मारना या भागना कौन कहे हटती भी नहीं थी । धिक्कार है उनको जो एसे सीधे जीवों पर भी दया नही करते । मैनें तो समझा कि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

निश्चय ही मैं गो लोक में गया। और भी अनेक पशु देखने में आए। सफेद किस्म के ऊँचे-ऊँचे मन हरने वोलने वाली मैना, कलहंस, मुरगावी और सारस भी कहीं-कहीं दिखलाई पड़े। मछलियों की तो मिथिला भूमि खान है। तव ही तो मैथिलों ने मत्स्य की ध्वजा गाड़ी थी।

मगर जनकपुर के भीतर मत्स्य मांस किसी का प्रचार नहीं महाराज जंग बहादुर की आज्ञा काठपर खुदी हुई लगी है कि कोई भी क्षेत्र के भीतर शिकार न खेले, मछली न मारे, मांस न वेचे। किन्तु वाहर तो सभी मछली खाते हैं। पानी अब तक चारों और भरा है। इसी से यहाँ के लोगो का स्वभाव भी मृदु है। वंगाल की सारी छटा इस देश में मिलती है। बोली भी जैसी प्राचीन वंगाली, चाल मध्य देशी, नेपाली और वंगला मिली हुई। मगर स्त्री-पुरुष सव सिधेसादे। कवि कालिदास ने शाकुन्तल नाटक में दुष्यन्त की उक्ति में बहुत ही ठीक कहा है- कि "वनवासिनियों के सिधे-साधे कटाक्ष में जो सौन्दर्य है, वह नागरिकों के बनावटी चञ्चल चितवन में नही है। रूप यहाँ ऊँची जाति में है। नेत्र यहाँ वालों के स्वच्छ लजीले और चितवन चञ्चल है। तभी तो कोई रसिक कह गया- जनक जनपदस्थायिनीनां कटाक्षे।" भोजन भात चूडा का है। आँटा तो दर्शन को भी नहीं मिलता (२) यहाँ के यात्रियों को सीधा सामान साथ ले जाना चाहिए नहीं तो कष्ट होता है। हाँडिया पुरवा कहीं नहीं मिलते। वृक्ष आम सखुआ और केले बहुत है। बाँकी और हरियाली भी अच्छी है।

खास जनकपुर एक गाँव है। मन्दिर एक श्रीजानकीजी का दुसरा श्रीरामजी का, तीसरा श्रीलक्ष्मणजी का ये तीन मन्दिर प्रसिद्ध हैं। इनमें पहले दो मुख्य हैं। एक मन्दिर दशरथ जी का भी छोटा सा है। (३) श्रीमहाप्रभु जी की बाँकी भी कहीं है। मन्दिर नेपाली चाल के वने हुए है। कहते हैं एक महात्मा सूर किशोर जी पहले पैदल यहाँ आए। यद्यपि यहाँ वालों का तो विश्वास है, नौ सौ वर्ष पहले वे आए

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

थे। परन्तु उनकी भाषा से वह उतने पुराने नहीं मालूम होते। इन महात्मा को जानकी जी में पुत्री भाव था। इन्होंने शास्त्रानुसार गंगाजी के किनारे से पृथ्वी नाप कर मिथिलापुरी का पता लगाया और यहाँ के तीर्थो को देखकर क्षेत्र निश्चय करके दशरथ कुण्ड पर निवास किया। स्वप्न में इनको दर्शन हुए और वहाँ जो अद्यापि एक प्राचीन वृक्ष विद्यमान है। उसमें से प्राचीन मूर्तियाँ भी मिली। मुख्य मूर्ति श्याम पाषाण की श्रीराम-जानकी-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न पाँचो एकमें है। दो तीन मूर्ति श्रीराम जानकी जी की और है, दो शेषशायी दो तीन चतुर्भुज और चार पाँच प्राचीन शिखर खण्ड है। ये सब मूर्तियाँ अत्यन्त प्राचीन है उस समय माल्यवान राजा का वहाँ राज्य था।

उनकी आज्ञा लेकर सूरकिशोर जी ने एक छोटा सा मन्दिर यहाँ वनवाया। उनके शिष्य अमर गिरि थे और सूर किशोर जी उनके भाई थे। (४) वैष्णव कहते हैं कि सूर किशोर जी के प्रशिष्य विशंभर दास जी से चतुर्भुज गिरि जी को मित्रता थी। इसी से आधा हिस्सा हो गया। जो हो इन वातों से यह निश्चय होता है कि यह सब महात्मा एक समय के थे और सेवा भाव के लिए आपस में वाँट ली अव आधी जमीन्दारी और रामजी का मन्दिर तथा राज देवी मन्दिर का भार चतुर्भुज गिरि के जिम्मे रहा और आधी जमीन्दारी और श्रीजानकीजी का मन्दिर का सेवा भार विसम्भर दास जी यानी वैष्णवों के अधिकार में रहा।

श्रीसूर किशोर जी को काव्य में अच्छी शक्ति थी। उनकी वाणी के परिचय में उनकी दो कविताएँ यहाँ प्रस्तुत की जाती हैं –

(१) "पुरातन पूरण पुणय सुधाम, पुरी सोइ वेद पुराण विशेषी।
सुधुनि संगम साठ हजार, स्नान किये पाल वास निमेखी॥
उद्ययातेन प्रेम कि सूरकिशोर, उपासक संतन की भुवि पेखी।
का बहुकाल जिये जग में धिक् जीवन जो मिथिला नहीं देखी॥

(२) नृप के घर वाल विलास किये, सिय की पदरेणु वहाँ लहिये।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

मुनिवृन्द उपासक रामविवाह, सोइनित ठौर सदा गहिये ॥
कह सूर किशोर उपाय भलो, हिम आतप औ वर्षा सहिये ।
चुरबौ चविके फलवौ भखि के, मिथिला महै वाँधि कुटी रहिये ॥

इन के शिष्य विश्वम्भर दास जी थे । यहाँ पच्चास साधुओं की कुटी है । कुटी सव सघन वृक्षों की छाँह में कच्ची और कहीं पक्की बनी है । बहत्तर तीर्थकुण्ड हैं । कहते है जब अग्निकुण्ड खोदा गया था तव नौ हाथ नीचे से एक लकड़ी की नाव, मिट्टी के वर्तन, प्राचीन शकल की टुटी हुई मूरतें, ऐसी ही बहुत सी चीजें मिली थीं । मिट्टी के कसोरे, छिछले खूब मोटे किनारे मुड़ा हुआ और एक एक मूर्ति उन में वनी हुई । मैं भी दो एक ले आया हूँ । ऐसा अनुमान होता है कि इधर उधर खोदा जाय तो अनेक प्राचीन चिह्न यहाँ मिलें । साधु यहाँ के सव शान्त हैं । क्योंकि केवल उदासीन चित्तवाले ही यहाँ रह सकते हैं । हजार रुपये में अच्छा तलाव और तीस रुपये में कुंआ वन सकता था क्योंकि मजदूरी सस्ती थी ।

यहाँ सव से आश्चर्य वस्तु धनुषा है । जैसा लोहे का मैल होता है वा जैसा गेरुवा पत्थर होता है ऐसी ही कोई वस्तु एक में लगी हुई, उठी-उठी एक डेढ हाथ पर्वताकार ऊँची, वीस हाथ लम्बी, छ हाथ चौड़ी पड़ी है, बीच में एक जगह बहुत नीची है, आस-पास जंगल है धनुष घटता बढता भी है । इस प्रकार श्रीजनकपुरकी यात्रा अति पवित्र पर अतिदुरुह है । जिसका वर्णन श्रीजानकी जी की स्तुति पर वहाँ समाप्त करते हैं –

(१) अरे मन ! भजले सिय पद कंज ।
कयों इत उत भरमत भव भोगत, सहत अनेकन रंज ॥
सबहि छाड़ि विनु विषय वासना, पथ में मानहुँ खंज ।
युगल प्रेम रस मय समुद्र में, है आनन्द मन मंज ॥
छाड़ि अनेक आस विश्वासन करम जाल सव भंज ।
"हरि चंद" सीता पद रति करु, जौन परम फल गंज ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

(२) अरे मन ! सीता सीता रटु रे ।
क्यों यह अमृत छाँडि रसना कहाँ, नितहि चखावत कटु रे ॥
मिथिला-चित्रकूट-अवधादिक, पुण्यथलन मह अटुरे ।
युहूँ जग नाशक विषय वासना, तासें चटपट नटु रे ॥
विनु सिय राम चरण जुग पंकज, रस चाखन में मटु रे ।
"हरी चन्द" सव जनम सिरान्यो, अब तो जग से हटु रे ॥

७२. विद्यापति (मैथिल कोकिल)

मिथिला के सपूत, मैथिली के कण्ठहार कवि, विद्यापति अनेकों उपनाम से प्रसिद्ध हैं- मैथिलकोकिल, अभिनव जयदेव, कविशेखर, कवि-कण्ठहार, कविरंजन, दशावधान, पंचानन, चम्पति, चम्पई, कविकोकिल । आप मिथिला के ही नही वंगभाषी तथा हिन्दी भाषी भी गर्व करते हैं आप पर । आप तीन तीन प्रान्तों में समान भाव से समाहृत हैं । यह सौभाग्य सायद किसी भी कवि को प्राप्त नहीं हो सका है ।

विद्यापतिका जन्म दरभंगा जिला के वेनीपट्टी थाना अन्तर्गत 'विसपी' गाँव में हुआ था । यह गाँव इनके आश्रय दाता राजा शिव सिंह की ओर से उपहार स्वरूप मिला था । इस दान का ताम्रपत्र भी प्राप्त हुआ है । इनके पिता का नाम गणपति ठाकुर था । उन्होंने गंगाभक्तितरंगिणी नामक एक पुस्तक की रचना की थी । ये मैथिल ब्राह्मण थे । इनकी माता का नाम हाँसिनी देवी था ।

(१) प्रथम रचना –

कीर्तिलता, जो नेपाल के राजपुस्तकालय में है ।

(२) दूसरी रचना – भूपरिक्रमा ।

(३) तीसरी रचना –

लिखनावली, इन्होंने अपने हाथ से भागवत लिखे थे ।

(४) चौथी रचना –

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुरुषपरीक्षा- इसमे श्रृंगाररस के परदे में राजनीति तथा धर्मकी शिक्षा दी गई है।

(५) पाँचवी रचना –

कीर्तिपताका, मैथिली भाषा में लिखी है।

(६) छठी रचना –

शैव-सर्वस्व-सार" शिवकी पूजा-विधि लिखी गयी है।

(७) सातवीं रचना –

गंगावाक्यावली, है जो विश्वासदेवी के लिए लिखी गई है।

(८) आठवीं रचना –

दान वाक्यावली है। यह नरसिंह देव की स्त्री धीरमती के प्रति समर्पित है।

(९) नवमी पुस्तक –

दुर्गाभक्ति तरंगिणी, है इसके अतिरिक्त- विभागसार (स्मृति-ग्रन्थ) वर्षकृत्य और गयापतलक संस्कृत में हैं। इनके जनप्रियताका आधार मैथिली कवितावली है।

इन्होंनें शैव धर्म के पक्षधर होते हुए भी शाक्त, वैष्णव आदि देव देवताओं से सम्बन्धित कविता निःसंकोच लिखी है। ये सर्वदेवभक्तिभाव के पक्षधर थे। श्रृंगारिक कवि के साथ-साथ भक्त कवि के रूप में ये प्रसिद्ध हैं। ये शिव के परम भक्त थे। महादेव स्वयं इनके यहाँ गुप्तवास से रह रहे थे। भेद खुल जाने पर वे अन्तर्ध्यान हो गये। इनके विलाप मे- विद्यापति गाने लगे।

उगना रे मोर कतए गेलाह,
कतए गेला शिव की दह भेला।

विद्यापति पदावली, पृष्ठ १९।

ये शिव और विष्णुको एक ही रूप की कला मानते थे - भल हरि भलहर भल तुअ कला। विद्यापति ठाकुर गृहत्यागी और वैरागी नहीं सद्गृहस्थ थे। यह तथ्य विद्यापति पदावली पृष्ठ १९ से भी ज्ञात

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

होता है । विद्यापति शिवभक्तों के परम आत्मीय, अनन्य स्वजन है । उनके गीतों और नचारियों में विद्यापति की प्रतिभा, संवेदनशीलता और काव्यकौशल का चमत्कार है–

जोगिया हमर जगत सुख दायक दुःख ककरहु नहि देल ।
यहि जोगिया के भांग पिआ के धुतुर खुआ धन लेथि ॥

इनके विचार में हरि और हर में कोई पार्थक्य नही है–

भल हर भल हरि भल तु कला ।
खन पित वसन खनहि वघ छाला ॥

पदावली पृष्ठ १९ ।

शिव के प्रति विद्यापति की भक्ति सर्वथा अकृत्रिम और सम्पूर्णतः निष्कपट है ।

कखन हरव दुःख मोर हे भोलानाथ .... ।

जप प्रदक्षिणा, प्रणाम, ध्यान आदि का प्रशिक्षण दिया गया है ।

इनके भक्तिभाव से 'द्रवित होकर' गंगा भी इन तक चली आई थी ।

कत सुखसार पाओ तुअ तिरे ।
छाडइते निकट नयन वह नीरे ॥

विद्यापतिकी पदावली गंगा स्तुति २५० ।

भारत के एक अवतारी पुरुष श्री चैतन्य महाप्रभु जी वंगाल में जन्मे थे । ये विद्यापतिके पदध्वनिको सुनते ही मंत्र मुग्ध होजाते थे । विद्यापतिके अनुकरण पर कृष्णदास, नरोत्तमदास, गोविन्ददास, ज्ञानदास, श्रीनिवास तथा नरहरि दास आदि वंगीय कवियों ने कविताएँ आरम्भ किया । जनकपुर से सम्वन्धित कुछ पद यहाँ अंकित है ।

जानकी वन्दना

रे नरनाह सतत भजु ताहि ।
जाहि नहि जननि जनक नहि जाही ॥२॥
वसु नइहरा ससुरा के नाम ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जननिक शिर चढि गेलि ओही गाम ॥४॥
सासुक कोर में सुतल जमाए ।
समधि विलह तँ विलहल जाए ॥६॥
जाहि उदर सँ बाहर भेलि ।
से पुनि पलटि ततहि चलि गेलि ॥८॥
भन विद्यापति सुकवि सुजान ।
कविक मरम कें कवि पहिचान ॥१०॥

देवी वन्दना

जय जय भैरवि असुर-भयाउनि, पसुपति-भामिनी माया ॥
सहज सुमति वर दिअ हे गोसाउनि, अनुगति गति लुअ पाया ॥२॥
वासर रैनि सबासन सोभित चरन, चन्द्रमणि...... चूडा ।
कत ओक दैत्य मारि मुँह मेलल कतेक उगलि करु कूडा ॥४॥
सामर वरन, नयन अनु रंजित, जलद-जोग फुल कोका ।
कट कट विकट ओठ-पुट पाँडरि, लिधुर-फेन उठ फोका ॥६॥
घन घन घनन घुघुर कत वाजए, हन हन कर तुअ काता ।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक, पुत्र विसरु जनि माता ॥८॥

७३. मंडनमिश्र

महामहोपाध्याय मीमांसक, मंडन मिश्र मिथिला के प्राचीन पंडितों में सर्वश्रेष्ठ एवं न्याय और मीमांसाके अद्वितीय विद्वान् थे। आपने शंकराचार्य से शास्त्रार्थ किया था। आपकी धर्मपत्नी शारदा देवी (भारती) साक्षात् सरस्वती की अवतार थी। उन्होंने शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया था।

मंडनमिश्र के द्वारा रचित ग्रन्थों में विधिविवेक, भावना- विवेक, व्रह्मसिद्धि, नैष्कर्म्यसिद्धि वेदान्तवार्तिक और मंडनत्रिशती विशेष प्रसिद्ध हैं। नवीं विक्रम शताब्दी में आपका अस्तित्व पाया जाता है। जव भगवान् शंकराचार्य आपकी खोजी में निकले तो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपके गाँव मे पहुँच गये, तव एक पनिहारिन से आपके घरका पता पुँछा उसने उत्तर में दो श्लोक सुनाये :-

"स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं शुकाङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति ।
शिष्योपशिष्यै रूपगीयमानमवेहि तन्मण्डनमिश्रधाम ॥
जगद् ध्रुवस्थाजगद ध्रुवंवा कीराङ्गना यत्रगिर्रोगिरन्ति ।
द्वारस्थ नीडाङ्गणसन्तिरुद्धा जानीहि तन्मण्डनमिश्रधाम ॥

इसी से उस समय की मिथिला की विद्या-वैभव का पता लग जाता है। जव यहाँ की साधारण स्त्रियाँ भी संस्कृत भाषा में पारंगत थी। भार ो न बाधते राजन् यथा-बाधति बाधते अर्थात् एक भरिया भार लेकर जा रहा था उस समय राजा ने उससे कहा- भारो बाधते? तव भरिया ने कहा भारो न बाधते राजन तथा बाधति बाधते। अर्थात हे राजा आप ने बाधति अशुद्ध शव्द प्रयोग कर जितना कष्ट पहुँचाया है उतना कष्ट भार भी नहीं देता है। यह भी किवदन्ती है कि- जव स्वामी शंकराचार्य उनकी भारती से परास्त हो गये, तव 'अमरु'- राजा के शरीर में योगवल से प्रवेशकर उन्होंने "अमरुशतक" नामक महाकाव्य की रचना की।

७४. पं.रमाकान्त झा

इनकी वनकन्या खण्ड काव्य- सन् १९४१ ई. में प्रकाशित हुआ, तो "व्यथा" मैथिली महाकाव्य वि.सं.२०३८ साल में प्रकाशित हुआ। जो रामकथा का एक सुन्दर काव्य है। इन्होंने इस काव्य में कैकेयी के चरित को उठाया है। साथ- ही माण्डवी-और श्रुतकीर्ति के वारे में रामायण में खास चर्चा नहीं हो पायी है परन्तु व्यथा में वनवास के समय में माण्डवी और श्रुतिकीर्ति के मनोदशा का वहुत ही मार्मिक ढग से उठाया गया है। उर्मिला को त्याग की मूर्ति के रूप में उपस्थित किया गया है। इसप्रकार, व्यथा के द्वारा नारीपात्र के प्रति पं. रमाकान्त झा जी का ध्यान मुख्य रूप में जाना उचित ही है। क्योंकि नारियाँ नेपाल और पूरे विश्व के आधा आकाश की प्रतिनिधि हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE

अवला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ।
आँचल में है दुध और आँखो मे पानी ॥

इस प्रकार सन्त-साहित्य-कड़ी में राम स्वरूप वी.ए का जनकपुर महिमा, जीवनाथ झा का जनकपुर परिचय, राम स्वार्थ ठाकुरका 'नव तुलसीदल' आदि पुस्तके भी उल्लेखनीय हैं । सन्त रसिक अलि जी रचित कई पुस्तके हस्तलिखित अवस्था में है । कल्याणेश्वर राम गुलाम दास मधुकर एक अच्छे अनुसन्धाता हैं । उनकी 'मिथिला-दिव्य-झाँकी' सहित कई पुस्तकें प्रकाशित हैं । इसी तरह अवधकुमार दास 'उमंग' की काव्यधारा वहुत ही आकर्षक है, जो छिटफुट मात्र प्रकाशित है । सिया राघवशरण की काव्यधारा मनमोहक है । पं. उर्मिलाकान्त शरण, पं.शालिग्राम शरण आदि साहित्य के धरोहर है । इसी क्रम में जनकपुर का सन्त-सहित्य के अन्वेषकों में राजेश्वर नेपाली को कभी नहीं भुलाया जा सकता है । उनकी प्रवल इच्छा है कि जनकपुर के सन्त साहित्य का अलग से विशेष रूप से उसका अनुसन्धान हो । इस के लिए जनकपुर वासियों को ध्यान देना पडेगा ।

७५. जनकपुर के कुटियों की जनसंख्या तथा साधुसन्त

जनकपुर के कुटियों की संख्या दिन प्रतिदिन वढती ही जा रही है । औद्योगिक संस्थाननें इसमें अत्यधिक योगदान दे रहा है । कुछ वष पहले जनकपुर में ५२ प्रसिद्ध कुटियाँ थी । अव कुटियों की संख्या अनगिनत है । जनकपुर में सभी जातियों की कुटियाँ है जिनमें वैष्णवों की कुटियाँ अधिक मात्रा में है । सन्यासियों, शैव, और शाक्तों की संख्या अल्प है । वैसे तो धार्मिक और व्यवसायिक होने के नाते इसकी संख्या दिनप्रतिदिन वढती ही जा रही है ।

७६. श्रीजनकपुरधाम के प्रमुख मेले

यहाँ कभी पूर्णमासी की भीड़ रहती हैं तो कभी ग्रहणों का,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

कभी परिक्रमा का तो कभी मलमास का इस प्रकार महीना में कुछ कम ही दिन ऐसे होतें हैं जिसमें हिन्दू धर्म और संस्कृति के अनुसार यहाँ लोग नही आते हां। नेपाल के आन्तरिक पर्यटन की दृष्टि से भी ऐसे मेलों का सुप्रबन्धन और प्रोत्साहन होना आवश्यक हैं।

७७. रामनवमी

राम नवमी का मेला प्रधान मेलाओं में से एक है। ऐसे अवसर पर देश विदेश के विभिन्न सम्प्रदाय के लोग- सन्यासी, उदासी, त्यागी, तपस्वी, नागा एवं वैरागी और अतिथि अभ्यागत के साथ गृहस्थ लोग भी काफी संख्या में आते हैं।

उन सभी को यथाशक्ति श्रीराम मन्दिर और श्रीजानकी मन्दिर से आदर सत्कार किया जाता है। अन्य जगह में साधु गाछी में भी साधु लोग रहते थे। देश विदेश के आगन्तुक के साथ-साथ मिथिला के तिरहुतियों (मैथिलब्राह्मण) लोगों को माघी में खास भीड़ होती थी। वे इतनी भारी संख्या में आते थे कि उन्हें भी मकान का आश्रय छोड़ पेड़ के नीचे ही रहना पड़ता था। वह स्थान आज भी कायम ही है, और वह तिरहुतिया गाछी के नाम से प्रसिद्ध है। पहाड़ के लोग भी काफी संख्या में यहाँ आते थे उनके लिए रहने का जो स्थान है वह पर्वतिया (पहाड़िया) गाछी के नाम से प्रसिद्ध है। रामनवमी के अवसर पर रत्न सागर में स्नान करने से विशेष पुण्य और फल प्राप्त होता है। यह मेला राम के जन्मोत्सव के रूप में चैत शुक्ल नवमी को मनाया जाता है।

७८. श्रीजानकी नवमी

महारानी सुनयना जी तथा शतानन्द जी के सहयोग से राजा शिरध्वज ने लाङ्गल-यज्ञ (हल जोतने) का आयोजन किया। किसी विद्वान् का मत है कि इस यज्ञ को 'वराह' नाम का यज्ञ भी कहते है

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

। यह यज्ञ वैशाख शु.दि. नवमी के दिन शुरु हुआ। और उसी तिथि को जानकी जी हल के सिरावर से उत्पन्न हुई। श्रीकिशोरीजी सर्वेश्वरी होती हुई भी श्रीजनक की पुत्री बन गयी और श्री जानकीजी के नाम से तीनों लोकों में प्रसिद्ध हुई। श्रीकिशोरीजी अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष रूपी पुरुषार्थ को देने वाली है। पुरुष और स्त्री दोनों के द्वारा इनकी आवश्यकता महसूस करने के कारण इन्हें पुरुषार्थ कहते हैं। भक्ति को पञ्चम पुरुषार्थ माना जाता है। धर्माविरुद्ध अर्थ और काम भी व्यक्तिद्वारा सेवनीय हैं। नहीं तो संसार और उसका व्यवहार कैसे चलेगा ? काम क्षणिक और आशक्तिप्रद होता है, तो मोक्षसुख स्थायी और निरतिशय सुखरूप होता हैं। इसीलिए इन सभीको लोग चाहते हैं, चाह होना चाहिए भी।

यह जन्मोत्सव विशेष रूप से श्रीजानकी मन्दिर, श्रीरामानन्द आश्रम और विहारकुण्ड आदि स्थानों मे मनाया जाता है।

७९. विवाह-पञ्चमी

यह मेला अगहण शु.दि. पंचमी को काफी धूम-धाम से बनाया जाता है। इस अवसर पर देश विदेश के भक्तगण, नर-नारी के रूप में असंख्य रूप में यहाँ श्रद्धा-भक्ति अर्पण करते हैं। रंगभूमि में उस दिन खासी भीड़ होती है। उपर्युक्त तिथि में मध्याह्न में राम मन्दिर तथा जानकी मन्दिर से सजधज्ज कर दोनों मण्डपों के पीछे-पीछे नर-नारियों की भी अपार भीड रंगभूमि आती है। फिर भक्तिभाव से राम और सीता एक दूसरे के गले में वरमाला अर्पण करते हैं तथा करतल ध्वनि के साथ सीताराम के जयजयकार से यह क्षेत्र गुञ्जायमान हो जाता है। इस मेले में भी देश विदेश के काफी संख्या में सन्यासी, उदासी, नागा और वैरागी के साथ अन्य धार्मिक पर्यटक काफी संख्या में आते हैं। और सवों का इन्तजाम् और स्वागत श्रीराम मन्दिर और श्री जानकी मन्दिर से किया जाता है।

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८०. झूला

झूला समारोह श्रावण मास के शुक्ल प्रतिपदा से लेकर पूर्णमासी तक मनाया जाता है । वैसे तो झूला शुरु होने के वाद दर्शक और श्रद्धालु जनकपुर आने लगते हैं । किन्तु एकादशी से दर्शकों की भीड अधिक हो जाती है । जनकपुर के प्रत्येक कुटी में यह समारोह मनाया जाता है । परन्तु राममन्दिर का झूलाघर, जानकी मन्दिर, विहार-कुण्ड तथा रत्नसागर का झूला-सजावट दर्शनीय तथा सर्वोत्कृष्ट लगता है । परम्परागत झूला भगवद्भक्तों के लिए मनोरञ्जनपूर्ण श्रद्धाभिव्यक्ति का एकप्रकार है । संस्कृत में झूला को 'दोला' कहते हैं । अत इसे दोलोत्सव या देवतनोत्सव कहना चहिए ।

८१. मध्यम तथा अन्तर्गृही परिक्रमा

मिथिला परिक्रमा तीन प्रकार से की जाती हैं । बृहत्, मध्यम तथा अन्तर्गृही । माध्यमिक मिथिला परिक्रमा फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा से शुरु होकर पूर्णमासी को समाप्त हो जाती है । यह माध्यमिक परिक्रमा जनकपुर से शुरु होकर हनुमाननगर, कल्याणेश्वर (कलना), गिरिजास्थान, मटिहानी (मतृखनी), जलेश्वर, मडई (माण्डव ऋषिका आश्रम), ध्रुवकुण्ड, कंचनवन (सीताराम विहार स्थल), पर्वता, धनुषा, सतोखर, कुरुसाय (करुना), विसौल तथा पुनः कल्याणेश्वर (कलना) होते हुए, जनकपुर लौट आती है । पूर्णिमा के दिन सवेरे भक्तजन गंगासागर में स्नान कर मिथिलाविहारी, किशोरीजी तथा अन्य डोला-डोली के साथ जनकपुर की अन्तर्गृही परिक्रमा किया करते है । इस परिक्रमा में देश और विदेश के संभ्रान्त लोग भी काफी मात्रा मे श्रद्धापूर्वक परिक्रमा करते हैं । इसमें बहुत सारे लोग नीजी खर्च पर घूमते हैं । तो खैरात (सदावर्त) खानेवाले भी कम नहीं होते हैं । उक्त तिथि को जनकपुर में काफी भीड़ जमा हो जाती है । कीर्त्तन मंडलियों का जुटाव सीताराम संकीर्त्तन झाँकी माहात्माओं का धार्मिक

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MoE

उपदेश दिनरात होता ही रहता है। परिक्रमा भ्रमण काफी मनोरंजक और आनन्ददायक होता है। इस धार्मिक अनुष्ठान में सदाचार का पालन करते हुए मन में मिथिला के दुल्हा तथा दुलहिन सीताराम (मिथिलाविहारी) को डोले में वैठाकर श्रद्धापूर्वक पैदल ही घूमा जाता है। परिक्रमा भगवान् श्रीराम, भगवती सीता और उनकी जन्मभूमि मिथिला का सर्वाङ्गीण दर्शन का एक शिष्ट सम्मत धार्मिक अनुष्ठान हैं। कुछ लोगों का मानना है- कि अपने नगरवासियों को सीताराम का दर्शन कराने हेतु यह आयोजन राजा जनक ने ही शुरु कराया था।

तृतीय-पराग

सन्मार्ग ही बुद्धत्व प्राप्त कराता है।

८२. श्रीजनक मन्दिर

यह मन्दिर श्रीराम मन्दिर के बाहर ईशान कोण तथा धनुष सर के उत्तर कोण में अवस्थित है। यह स्थल राजा जनक का एकान्त साधना, शिवधनु पूजा करने का स्थल था। यहीं शिरहीन राजा जनक, महारानी सुनयना तथा गंगासागर से प्राप्त सीता जी की भव्य प्रतिमाएँ दर्शनीय हैं।

८३. जानकी मन्दिर

जानकी मन्दिर के प्रथम पुजारी तथा सन्त महन्थ श्रीसूरकिशोर दासजी सन्यासी चतुर्भुज गिरीजी के सहोदर भाई थे। इनका जन्म जयपुर में हुआ था। ये सनाढय ब्राह्मण वंश के थे। इन्होंने रामभक्त हनुमान् जी की कृपा से दिव्य धाम का दर्शन पाया। ये वात्सल्य रस के उपासक श्रीजनकजी को अपना भाई और सीता जी को अपनी पुत्री मानते थे। सूरकिशोर दासजी जनकपुर में तपस्या कर रहे थे- कि एक दिन जानकी जी ने इन्हें स्वप्न में दर्शन देकर यह कहा कि मेरी सोने की मूर्ति यहीं कहीं मिल जाएगी जहाँ से पाओ वहीं रखकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

मेरी पूजा अर्चना करना। कुछ दिन के वाद प्रयत्न स्वरूप वह सोने की मूर्ति मिली और उसे वहीं झोपड़ी बनाकर उसमें उसे रखकर पूजा करने लगे। कुछ दिनवाद गाय के थनों से दूध नित्य दिन गिरता देख वहाँ की भूमिको खनकर सोने की प्रतिमा मिली उसी जगह पर वि.सं. १९५५ में टिकमगढ ओरछा नरेश महाराज प्रताप नारायणसिंह अपनी स्त्री वृषभानु कुंवरि के साथ यहाँ आकर जानकी मन्दिर का नींव डाला। महन्थ रामकृष्ण दास के सुप्रयासस्वरूप १९६७ साल माघ शु.दि. ११ को स्वयं प्रताप सिंह अपनी दुसरी रानी गणेश कुँवरि के साथ इसको पूर्ण किया। इस भव्य मन्दिर मे कुल १५ लाख रूपये लगे थे। आज यह मन्दिर नौलखा, जानकी महल एवं शीश महल के नाम से प्रसिद्ध है। शिष्यपरम्परा के सातवीं पीढी के विश्वम्भर दास के समय में आपस-आपस में श्रीराममन्दिर की वँटवारा कर ली गयी। श्रीराममन्दिर के प्रबन्धक सन्यासी तथा श्रीजानकी मन्दिर के महन्थ वैष्णव होने लगे।

एक वार किसी भक्त ने आकार सोने की सवाभर नथ अर्पण की पुजारी ने उसे सीता जी को धारण करा दी। जव यह सूर किशोरजी को मालूम हुआ। तो वे वड़े ही दुःखी हुए। सुकोमल सीताजी ने उतनी भारी गहना कैसे पहनी होगी वह हमेशा यही सोचते हुए चकित थे। जव मन्दिर में दौड़े आए तो उन्होंने देखा कि उनके नाक से खून वह रहा है। और नथिया नीचे गिर पडी थी। श्रीसूरकिशोरजी मूर्छित हो गए उसी अवस्था में यह वाणी सुनाई पड़ी कि पिता जी आप दुःखी न होवें मैं अव अच्छी तरह से हूँ। वाणी सुनते ही उनकी आँखे खुली और उन्हें सचमुच में ही उसीप्रकार से पाया। श्री जानकी मन्दिर में अभी भी वही विग्रह प्रधान सरकार के रूप में पूजीत हो रहा है। भग्न नासिका भव्य भावका स्मरण कराकर आज भी प्रेमियों के हृदयभाव विह्वल हो उठता है। मन्दिर के उत्तर मे तेल दीर्घिका सर तथा अरगजा सर है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE-IKS

८४. **श्रीसुनयना मन्दिर**

श्रीजानकी जी के मन्दिर के पश्चिम भाग में यह मन्दिर स्थित है । श्रीवशिष्टजी सतानन्दजी सुनयना जी तथा चारों भाइयों की प्रतिमा के साथ जानकी जी की प्राचीन मूर्ति है । यह प्रतिमा अरगजा सर से प्राप्त हुआ था ।

८५. **विवाह-मडवा (मण्डप)**

श्रीजानकी मन्दिर से उत्तरपश्चिम भाग में एक मडवा (मण्डप) था जो वि.सं. १९९० में तथा १९३४ के भूकम्प में ध्वंस हो गया । नवल किशोर दास के अथक प्रयास स्वरूप वह पुनः वनाया गया ।

८६. **श्रीराम मन्दिर**

जगद्गुरु आचार्य श्री शंकराचार्य के तृतीय शिष्य आनन्दगिरी जी ज्योतिर्मठाधीश थे । उनके सन्यासी आश्रम के शिष्य श्रीदुर्गानाथ गिरिजी हुए । दुर्गानाथ गिरि के शिष्य १०८ चतुर्भुज नाथ गिरि महाराज थे भगवान् राम के प्रेरणास्वरूप वे इस विरान जन पद में विचरण करते हुए आए शास्त्रानुसार गण्डकी गंगा और कौशिकी गंगा के मध्य में मिथिला प्रान्त था । इसी स्थल को तपोभूमि वनाया । इस मन्दिर में भगवान राम-सीतासहित विराजमान हैं ।

८७. **श्रीलक्ष्मण मन्दिर**

यह मन्दिर जानकी मन्दिर के उत्तर पूर्व में अवस्थित है । श्री ५ गीर्वाणयुद्ध विक्रम शाहदेव के समय में १८६७ में कुछ जमीन भोगराग के लिए अर्पण की गई थी । इसी मन्दिर के प्रांगण में लव-कुश मन्दिर है, जिसकी मूर्तियाँ अति प्राचीन हैं ।

८८. **देवीमन्दिर (राजदेवी)**

श्रीराम मन्दिर के उत्तर भाग में यह मन्दिर है । यह मन्दिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDP

बहुत ही पुराना है । राजा जनक की कुलदेवी के रूप में अवस्थित देवी राजा जनक के वंशज द्वारा पूजित होती आरही हैं ।

८९. सङ्कट मोचन

यह मन्दिर रंगभूमि के उत्तर भाग मे स्थित है । इस मन्दिर में विराजमान हनुमान् जी आशीर्वाद मुद्रा में हैं । यहाँ संकटमोचन हनुमान् जी के मन्दिर में मंगल और शनिवार को भक्तों की अच्छी खासी भीड़ होती है ।

९०. श्रीरत्नसागर मन्दिर

यह मन्दिर जानकी मन्दिर से लगभग १ मील पश्चिमोत्तर में स्थित है । पिडारी टोल से दक्षिण में हैं । यह मन्दिर राजा जनक को रत्नभण्डार तथा सीताजी के विवाह के समय रत्न लुटाया गया तथा राजा जनक का रनिवास यहीं था । ऐसा अनुमान किया जाता है । यहाँ रत्न सागर सर बहुत भव्य तथा अनेकानेक वाग वगीचों एवं मन्दिरों से सुसज्जित है ।

९१. श्रीदशरथ मन्दिर (महाराज सर)

यह मन्दिर विशाल सरोवर महाराज- सागर के पश्चिम तट पर है । यह ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत चर्चित है- कहा जाता है कि इस तलाव में एकवार सोने की जंजीर पानी में तैरती सी निकली थी । लोगों की भीड़ लग गई लोग पकड्ने को दौड़े जो व्यक्ति पहले उस सोने के जंजीर को पहले पकड़ा वह जंज़ीर के साथ ही विलीन हो गया ।

पौराणिक कथा है कि एक वार ब्रह्मा सरस्वती पर मोहित हो गये । कामान्ध ब्रह्मा का एक मस्तक क्रोधित शिव जी ने अपने त्रिशूल से काट दिया था । उन्हें ब्रह्महत्या लगी तथा ब्रह्माका वह

Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: M...

कपाल (सिर) उनके हाथ में चिपक गया । शिवजी इस पाप के मोचन के लिए अनेक तीर्थादि में गये परन्तु कहीं भी उस का मोचन नहीं हुआ । पति के कष्ट से पार्वती बहुत दुःखी हुई । नारद जी उसी समय वहाँ पहुँचे और शिव-शिवा के पूछने पर वताया कि समस्त ब्रह्माण्ड तीर्थोका सविधि स्नान करने से जो फल प्राप्त होता है उससे कोटि गुणाधिक फल 'महाराज सर' के दर्शन से प्राप्त होता है । जहाँ स्नान कर पूर्व कल्प में परशुराम जी मातृहत्या से मुक्त हुए और जहाँ प्रभु का श्रीजानकी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ था । जहाँ के मत्स्य भी सच्चिदानन्द स्वरूप हैं । यह सुनकर शिवशिवा दोनों मिथिला के जनकपुर आए । महाराज सागर का दर्शन से ही हाथ से कपाल छूटगया तथा स्नान करने से उन्हें परमानन्द स्वरूप की प्राप्ति हुई । उसी दिन से इस तलाव का नाम कपाल मोचन सर पड गया । इस सर के पश्चिम किनारे पर मन्दिर है । उसमे कौशलेन्द्र चक्रवर्ती राजा दशरथ और श्रीजनकजी के सम्धी सम्बन्धी महाराज दशरथजी की जानकीसहित अपने पुत्रों की मूर्तियाँ है ।

९२. रामानन्द आश्रम

यह आश्रम रामानन्द चौक से पश्चिम मधुकर कुण्ड से पूर्व अवस्थित है । इस मन्दिर को दुल्हा, दुल्हन के नाम से भी जाना जाता है । इस में हनुमान्‌जी के साथ-साथ रामानन्दाचार्य जी का भव्यप्रतिमा स्थापित है । श्रीसम्प्रदाय का यह मन्दिर जनकपुर तो क्या मिथिलाभर में प्रसिद्ध है । मिथिला का कनक भवन के नाम से भी यह प्रसिद्ध है । साहित्यकार अवधकिशोर दास जी इसी मठ के मठाधीश रह चुके हैं । ये सन्त साहित्य के प्रसिद्ध व्याख्याता और लेखक रहे हैं । रामानन्द जी रामानुजाचार्य की तरह ही श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य है ।

९३. **रामानन्दद्वार :** इसी आश्रम के कुछ ही दुरी पर स्थित श्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ामानन्दद्वार है । यह द्वार जलेश्वर महेन्द्रनगर जाने बाली सड़क पर बनाया गया है । इसकी भव्यताको देखते हुए ऐसा लगता है की यह द्वार एसिया महादेश में अद्वितीय है । इसका शिलान्यास जानकी मन्दिर के महन्थ श्री राम शरण दास जी द्वारा हुआ तो इसका निर्माण कार्य वर्तमान जानकी मन्दिर के महंथ श्री राम तपेश्वर दास जी के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ । इस तरहके निर्माण कार्य से जनकपुर की सोभा और गरिमा बढेगी ऐसी जनधारणा है ।

९४. ब्रह्मचर्याश्रम

"मुरली सर" से कुछ आगे बढ़ने पर थोड़ी दूर पर परिक्रमा की सड़क के भीतर । श्रीमारुति मन्दिर है उस से उत्तर अलखेश्वर महादेव और अलखिया बाबा का आश्रम है । उसके वाद गायत्री ब्रह्मचर्याश्रम हैं, इस में विप्रवटु ही वेदाध्ययन किया करते हैं ।

९५. श्रीरसिक और कृपा निवास

यह स्थान विहार कुण्ड से दक्षिण तथा वलवा टोल से पूर्व में है । यहाँ श्रीरसिक अलि (भ्रमर) जी नाम से प्रसिद्ध सन्त हो गये हैं । वे वड़े कर्मठ कवि, विद्वान एवं भजनानन्दी थे । इनके रचे २४ ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं । उनमें कई प्रकाशित भी हैं । सुना जाता हैं कि- इनकी दिव्य लोकयात्रा के समय मिथिला पुरी भर में अन्तरिक्ष दुंदभीनाद सुन पड़ी थी ।

कृपा का जन्म द्रविड देश (दक्षिण भारत) में हुआ था । इनके पिता का नाम सीत निवास एवं माताका नाम गुणशीला था । नाम संस्कार के समय इनका नाम श्री निवास रखा गया था । तीर्थों में विचरण करते हुए मिथिला पहूँचे और वहाँ रसिक सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये । किसके द्वारा ? यह पता नहीं चलता है । मिथिला में प्रसाद सखि के रूप में हनुमानजी ने दर्शन देकर इन्हें वहाँ की विहार लीला

Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MoE

की झाँकी दिखाई। इन्होंने तभी से हनुमानजी को अपना गुरु मान लिया और यहाँ १२ वर्ष तक निवास करने के पश्चात् चारोधाम की यात्रा के लिए प्रस्थान किया।

९६. रंगभूमि

श्रीजानकी मन्दिर के पश्चिमोत्तरकोण में तथा श्रीमहाराज सागर से उत्तर थोड़ी ही दूरी पर एक बहुत वड़ी पड़ती जमीन है जो 'वारह वीघा' के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है- कि सीता स्वयंवर तथा धनुर्भङ्ग इसी स्थान पर हुआ था। कुछ विद्वान कहते हैं कि यह रमणीयभूमि श्रीजानकीजी का क्रीडा स्थल था। विवाह पंचमी के सुअवसर पर असंख्य नर-नारी यहाँ सीता स्वयंवर को देख दृष्टि लाभ लेते है। नाना प्रकार के वाजे गाजे के साथ लोग घोड़दौड़ का भी अवलोकन करते है। राममन्दिर से रामलक्ष्मण की मूर्ति तथा जानकी-मन्दिर से जानकी जी की चल मूर्तियाँ सजधजकर लाया जाता है तथा एक दूसरे के गले मे वरमाला डाल दी जाती है। श्रावण में यहाँ स्थित जानकी वाग में झुलन मेला भी लगता है। दक्षिण तरफ अमृतवाग है जहाँ अमृतकुण्ड था अव तो नाम मात्र है। यहीं मौनीवावा का भी आश्रम है। मौनी वावा ने पंचकोशी परिक्रमा सड़क के साथ संस्कृत विद्यालय का भी उद्धार करवाया जिसका नाम ज्ञानकूप संस्कृत विद्यालय हैं।

९७. जनकपुर का राममन्दिर, महंथ परम्परा और नामावली

१०८ चतुर्भुज गिरि, रेवा गिरि, अम्वर गिरि, अभिलाख गिरि, वसन्त गिरि, विशेश्वर गिरि इन्हीं के समय में १८३९ में फाल्गुन कृष्ण द्वितीया वुधवार को भीमसेन थापा के सुपत्र सरदार अम्मरसिंह थापा ने मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। विशेश्वर गिरि के वाद ईश्वर गिरि, विश्वनाथ, गिरि रामलोचन गिरि, रमानन्द गिरि, विश्वनाथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गिरि, अमरनाथ गिरि हुए । चतुर्भुज गिरि तथा सूरकिशोर दोनों सहोदर भाई थे । इनका समय वि.सं. १७ सौं जाना जाता हैं । सूरकिशोरजी द्वारा रचित "रसिक-प्रकाश भक्तमाला" से सम्बद्ध ।

९८. **जानकी मन्दिर महान्त(महन्त) परम्परागत नामावली**

(१) श्रीसूरकिशोर दास (२) श्री प्रयाग दास (३) श्री जनक वैदेही दास (४) श्री हरिनारायण दास (५) श्री वलराम दास (६) श्री सुवर्ण दास (७) श्री विश्वम्भर दास (८) श्री राम गुलेला दास (९) श्री नरहरि दास (१०) श्री हरिभजन दास (११) श्री राम कृष्ण दास (१२) श्री नवल किशोर दास (१३) श्री रामशरण दास (१४) वर्त्तमान महन्थ श्री राम तपेश्वर दास ॥ श्री राम तपेश्वर दास जी द्वारा मन्दिर के वाहिरी प्राङ्गण में सत्संग और प्रवचनादि कार्यक्रम समय-समय पर होते रहते है । इससे श्रद्धालुओं में राम कथामृत के प्रति रुचि वढती जारही है ।

९९. **गंगासागर**

गंगा सागर जनकपुर के सभी सागरों सें प्राचीन एवं प्रधान है । यहाँ आने वाले भक्तजन पहले इसी में स्नान करते हैं । इसके वाद दर्शन और पूजा-पाठ । इस सागर की चर्चा विष्णुपुराण में भी की गयी है । महाराज निमि का कोई पुत्र नहीं था इसी सोच में इन्होंने प्राण त्याग दिये । याज्ञवल्क्य और विश्वामित्र आदि अन्य महामुनियों ने तान्त्रिक विधि से निमि के मृत शरीर को मथा जिस से मिथि नामक वालक का जन्म हुआ । इसी अवसर पर गंगा यमुना आदि नदियों के अतिरिक्त समुद्रदेव भी उपस्थित थे। उन्हीं के जल से एक महाजलाशय वन गया जो गंगासागर के नाम से विख्यात हुआ । राजा मिथि के द्वारा वसाया गया यह नगरी मिथिला है । इस सागर के पश्चिम तथा उत्तर तट पर वढियाँ धर्मशाला एवं घाट है । पूर्वी

Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MoE

मुहारपर लक्ष्मण दास जी का सुन्दर आश्रम है । दक्षिण मुहार पर मणिकर्णिका घाट है । जहाँ दूर-दूर के शव लाकर जलाये जाते हैं । इस गंगासागर को वाण गंगा सागर के नाम से भी जाना जाता है । राजा जनक प्रतिदिन गंगा स्नान करने जाते थे जब सीतराम अयोध्या जाने लगे तो राम ने अपने ससुर की सुविधा हेतु अपने बाण के प्रहार से पताल गंगाका निर्माण किया था । (लोकोक्ति)

१००. **धनुष सर**

यह सर राम मन्दिर से पूर्व तथा गंगासागर से पश्चिम में पडता है । इस स्थान पर धनुष रहने के कारण ही इस स्थान का नाम धनुष सर पड़ा है । इस सर के पश्चिम मुहार पर कलात्मक भवन बना है, जो दार्शनिक दृष्टिकोण से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । दक्षिण मुहार पर कलकुत्ता निवासी श्रीबलदेवदास रामेश्वर दूधवाला का सुन्दर धर्मशाला स्थित है ।

१०१. **अरगजासर**

यह तलाव श्रीजानकी मन्दिर के ठीक उत्तर में स्थित है । पौराणिक चर्चा है कि श्रीजानकीजी इसी तलाव में उबटन लगा कर स्नान किया करती थीं । इसलिए इसका दूसरा नाम अंगराज सर भी है । कुछ विद्वानों का मत है कि श्रीरामचन्द्रजी को विवाह के समय यही उबटन लगाकर सुगन्धित निर्मल जल से स्नान करवाया गया था । इसमें स्नान करने से चर्मरोग दूर हो जातें हैं, यह जनविश्वास है ।

१०२. **महाराजसर**

यह सर जानकी मन्दिर से पशिचम में है । मिथिलामहात्म्य में इसका विशिष्ट महिमा वर्णित है । पौराणिक कथानुसार इसमे स्नान करने से ब्रह्महत्या जैसा पाप भी दूर हो जाता है जैसा कि शिवजी

Nepal Sanskrit University, Baljyoti Campus ... Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का ब्रह्महत्या का पाप तथा परशुराम जी का मातृहत्या का पाप इसी में स्नान करने पर छुटा था। पाप पापकर्त्ता को पी देता है- खा देता है। व्युत्पत्यन्तर में पाप का अर्थ जिस दुष्कर्म से अपने को बचाया जाना चाहिए। वह दुष्कर्म पाप है। उसका प्रशलन आवश्यक है।

१०३. **रत्न सागर**

यह स्थान रंगभूमि से पशिमोत्तर कोण में अवस्थित है। सीताजी के विवाह के समय यहाँ काफी रत्न लुटाया गया था। यह सागर रत्न का कोष था। रामनवमी के दिन यहाँ स्नान करने से विशेष फल प्राप्त होता है, ऐसा जनविश्वास है।

इस के अतिरिक्त मुरलीसर, अमृतसर, भार्गवसर, जनकसर, लक्ष्मणसर, ध्रुवसर, जानकीसर, कष्टहरीसर, धातृसर, सप्तवेधसर, मन्मथसर, सनकादिसर, मण्डनसर, ऋक्षसर, विडालसर, रुक्मिणी सर, विघ्नहारिणीसर, मत्स्योदरीसर, व्याघ्रहरीसर, गोपालसर, विचित्रासर, वह्निकसण्डसर, मध्यमासर, धौतपापासर, गुणवतीसर, पापमोचनीसर, पयस्विनीसर, लोमशसर, रामसागरसर, कुम्भोदक-सर, वरुणसर, सारस्वतसर, गौतमसर, सुनैनासर, अनुरागसर, कपालमोचनीसर, मण्डलसर, के अतिरिक्त कई अनेकसर हैं।

१०४. **दीर्घिकासर**

यह सर गंगा सागर से पूर्व मे पड़ता है। आषाढी पूर्णिमा (गुरुपूर्णिमा) के दिन इसका विशेष महत्त्व है। इसके पूर्वी मुहार पर शतानन्द आश्रम है। और भरत मण्डप भी है। अन्तर्गृही परिक्रमा इसी जगह चौमुहानी पर से शुरु होती है। सर के उस पार श्रीराम कुञ्ज है।

१०५. **विषहरा सर**

दीर्घिकासर के पास परिक्रमा वाली सड़क से थ़ोड़ा ही दक्षिण

...Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MoE

विषहरासर है । इसमें स्नान और इसका पान करने से विषधर का अवतार नही लेना पड़ता है । इसी सर के पश्चिम मे मुरलीसर है । सुना जाता है जव भगवान् कृष्ण यहाँ आए तो वृन्दावन की मधुर यादें आ जाने पर मुरली वजाने लगे थे । इसी स्मरण के लिए इसका नाम मुरलीसर पड़ा ।

विषहरा सर के पश्चिम किनारेपर एक सुन्दर विषहरा मन्दिर है । इस विषहरा मन्दिर के संरक्षण समिति के अध्यक्ष श्री भोगेन्द्र झा जी है । इन्होंनें इस क्षेत्रका उत्तम संरक्षण किया है । यहाँ मैना पञ्चमी के दिन भव्य रुपसे मेला लगता है जिस में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ होती है ।

१०६. पदप्रक्षालन तीर्थ (गोरधोई पोखरी)

यह ब्रह्मचर्याश्रम से दक्षिण में ही सटा हुआ है । अग्रहण (मार्ग) महिना के शुक्ल पंचमी के दिन पुरुषोत्तम दुलहा भगवान श्रीराम के चरणों को राजर्षि श्रीजनकजी ने महारानी श्रीसुनैना जी के सहित वड़े प्रेम से धोये थे । जिस का चित्रण नीचे के पद्यों से स्पष्ट होगा :–

कनक कलसमनि कोपर रुरे ।
सुचि सुगन्ध मंगल जल पूरे ॥
निजकर मुदित रायँ अरुरानी ।
धरे राम के आगें आनी ॥
पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी ।
गगन सुमन झरि अवसरु जानी ॥
वरु विलोकि दम्पत्ति अनुरागे ।
पाय पुनीत पखारन लागे ॥

इसके पश्चिम में ही जानकी नगर नामका एक टोल है ।

Digitized by eGangotri. Funding: MIDF

१०७. पुरन्दरसर

जानकी नगर के पास जो हाट लगती है उसके उत्तर में पुरन्दरसर है। इसके पश्चिमोत्तर कोण में दो एक सन्तों का निवास हैं किन्तु यह धोबियों के कपड़े धोने के सिवा अन्य किसी काम में आया नहीं दीख पड़ता है। माघ-शुक्ल-पंचमी के दिन इसका विशेष महत्त्व है। कारण —

जो सम्पदा नीच गृह सोहा।
सो विलोकि सुर नायक मोहा॥
रामहि चितव सुरेश सुजाना।
गौतम श्रापु परम हित माना॥
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं।
आज पुरन्दर सम कोऊ नाहीं॥

(रामचरित-मानस)।

१०८. मुरली सर

विषहरा सर के पश्चिम में मुरली सर है सुना जाता है कि भगवान कृष्ण यहाँ आए तो वृन्दावन की मधुरयाद आ जाने पर मुरली वजाने लगे। इसी स्मरण के लिए इसका नाम मुरली सर पड़ा।

१०९. अग्निकुण्ड

यह कुण्ड रत्नसागर और ज्ञानकूप के बीच में पडता है। महाराज विदेह के समय में यज्ञीय पावक (अग्नि) यहाँ रहता था। इस कुण्ड पर भी सन्तों का निवास और देवमन्दिर है। इसी के पास युगलकिशोर कुञ्ज है। जहाँ परमहंस वैदेही शरण जी हुए। वे कवि तथा लेखक थे। अग्निकुण्ड में कभी कभी इन्द्र धनुष की भाँति धनुषका उदय होता है। कभी-कभी दिन में कई वार देखा गया है। दश वर्ष के अन्तराल में यह अवश्य ही दिखाई पड़ता है। जिसे जन साधारण भी देखा करते हैं। मिथिला महात्म्य के अनुवादक पं.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रामदुलारी शरण यहीं रहते थे । कथन है कि राजा जनक यहीं अग्नि में आहुति दिया करते थे और अग्निदेव प्रत्यक्ष रूप से ग्रहण करते थे ।

११०. विहारकुण्ड (श्रीजानकी ह्रद)

यह कुण्ड ज्ञान कूप से पूर्व में पड़ता है । यह विहार कुण्ड श्रीजनकपुरधाम का एक प्रसिद्ध सरोवर है । इसका जल सदा निर्मल और सुस्वादु वना रहता है । इसके चारों तरफ सन्तों के आश्रम और मन्दिर हैं । यहाँ की दृश्य अत्यन्त ही सुन्दर और रमणीय है । श्रीमिथिलेश राजनन्दिनीजी अपनी अन्तरंग सखियों के साथ यहाँ जलविहार के लिंए पधारती थीं । इसीलिए यह विहार कुण्ड तथा जानकी ह्रद के नाम से प्रसिद्ध हैं । इसके जलपान से कुष्ठादि असाध्य चर्मरोग नाश हो जाते हैं । इस कुण्ड के चारों तरफ अनेक सिद्ध सन्तों का मठ-मन्दिर हैं ।

१११. ज्ञानकूप (विद्याकूप)

यह कूप विहार कुण्ड से पशिचम में है । यहाँ पर विदेह महाराज की ज्ञान सभा लगती थी और विदेहवंशी राजकुमारों का विद्यालय (ऋषिकुल) था यहाँ वैठकर भजन करने वालों को अनेकों प्रकार के दिव्य अनुभव प्राप्त होते हैं । स्वर्गवासी परमहंस श्री सियालाल शरणजी को यहाँ ऐसे दिव्य सुख मिले थे कि –

विद्याकूप जले स्नानात्पानाद्विद्यानिधिर्भवेत् ।
ज्ञानकूपं समाश्रित्य त्रिकालज्ञो भवेन्नरः ॥

मौनी संस्कृत विद्यालय यहीं है । निमि और नव योगेश्वरों का श्रीमद्भागवत प्रसिद्ध पुण्यसंवाद यहीं हुआ था । राजा विदेह के विषय में कथन है- कि एकवार ऋषिगण माया के वशीभूत होकर विदेह पर शंका कर वैठे कि हम चार गण साधना करते समय वीता दिए, परन्तु माया ने साथ नहीं छोड़ा । राज सुख से लिप्त राजा विदेह माया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

...-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

से मुक्त कैसे हो सकते हैं यह तो इनका शब्दाडम्बर मात्र है। संयोगवश उसी समय मिथिला मे आग लगी। आग इतनी प्रचण्ड थी कि किसी का कुछ न बचा ऋषिमुनियोंका बल्कल वस्त्र, तुम्वादि सव जलकर राख होगये। आग थमने के वाद जव लोग विदेह को देखने आए तव वे निश्चल भाव से वैठे हुए पाए गये उनका कुछ न विगड़ा था –

मिथिलायां प्रदग्धायां न मे किंचित् प्रदहयति। यहीं पर याज्ञवल्क्य को ब्रह्मतत्व के परमोपदेश के रूप में गायें उपहार मिली थी। इसके पास शतानन्दकूप भी यहीँ है। इसके अतिरिक्त यहाँ सीरध्वज कूप अक्रूर कूप और समन्तक कूप आदि है। ज्ञान कूप, वही पुनीत, शान्त एवं रमणीय स्थल हैं जहाँ राजा जनकजी का दैनिक दार्शनिक, वौद्धिक एवं धार्मिक उपदेश हुआ करता था।

११२. दूधमती गंगा

ज्ञानकूप से दक्षिण सीताकुण्ड स्थान है। पहले यह स्थान सन्त सेवा के लिए प्रसिद्ध था यहीँ काशी नरेश की राजमाता तक भी तीर्थ निवास के लिए आकर निवास करती थी। तीर्थ निवास के लिए बना हुआ एक मकान है। ज्ञान कूप से पश्चिम सीधी एक पगडण्डी दूधमती तट पर गई है। यह सन्तों का भजन के लिए उपयुक्त स्थान है। यहाँ श्रीस्वामी प्रेमदास जी महाराज और श्रीराम बाबा नाम के दो सन्त हो गये हैं। दूधमती सरस्वती का अवतार है। यह अन्तः प्रवाह रहती हैं। कहीं गुप्त और कहीं प्रगट हो जाती है। इसका पौराणिक महत्त्व है। पौराणिक महत्त्व यह है कि जव सीता जी पृथ्वी से वाहर आयी तो देवगण सव दर्शन करने आए। उसी क्रम में उनके दर्शनार्थ कामधेनु भी आयी थी। श्रीजानकी माता को देखते ही प्रेम विभोर हो, कामधेनु नें अपने स्तनों को उनके मुँह में डाल दी। जो दूध मुँह से वाहर पृथ्वी पर गिरा वह नदी के रूप में बहने लगी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

। यही नदी आज दूधमती के नाम से प्रसिद्ध है । इसमें स्नान करने से अनेक जन्म का पाप नष्ट होता है ।

११३. **अक्रूरकूप**

इस कूप का तो नाम निशान देखने या सुनने में नहीं आता । केवल महात्म्य में नामोल्लेख है ।

११४. **सतानन्दकूप**

यह विहार कुण्ड से पश्चिम ज्ञान कूप संस्कृत विद्यालय के हाते में सुरक्षित है । इसका उद्धार मौनी बाबा ने करवाया था ।

११५. **जनक कूप**

यह धनुषा जाने के रास्ते में पड़नेवाला पुरन्दरा ग्राम के पूर्वोत्तर जनकपुर सरोवर के पास था । बाद में डाकूओं ने धन वचाने के ख्याल से उस कूप को पटरी डालकर धन गाड़दिया और कूप को पाटदिया । यहीं 'सुनैना सर' को भी खेत वना लिया गया । सरकार चाहे तो दोनों का उद्धार हो सकता है । सरकारको ऐसे राट्रिय धरोहरको अतिक्रान्त और नष्ट नहीं होने देना चाहिए ।

स्नात्वा च पीत्वा च पुनर्जन्म न विधते ।
तेषां स्नानेन पानेन महापुण्यफलं लभते ॥

११६. **रामानन्द साहित्य-माला द्वारा प्रकाशित पुस्तकें**

जनकपुरधाम स्थित रामानन्द आश्रम के संस्थापक पं.अवध किशोर दास द्वारा रामानन्द साहित्यमाला का प्रकाशन कर हिन्दी सन्त साहित्य के विकास में अद्वितीय योगदान दिया है । रामानन्द साहित्य माला के प्रकाशन को जारी रखा गया है और अभी १४२ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की जा चूकी हैं ।

परमपूज्य प्रातः स्मरणीय आचार्य चरण श्रीसीतारामीय अनन्त

Nepal Sanskrit University, Balmiki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri. Funding: MIDF

श्रीस्वामी मथुरा दास जी महाराज प्रणीत पुस्तकें –

१. गीतागुह्यतमोपदेश (गीता का शरणागति योग)
२. पञ्च संस्कार (श्री वैष्णवों के पञ्च संस्कारों की महिमा)
३. सुमन संचय (पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों का संग्रह)
४. श्रीरामानन्द- संकीर्तन ।
५. श्रीवैष्णवी- दीक्षा ।
६. मोक्ष के अधिकारी ।
७. श्रीराममन्त्र राजपरम्परा ।
८. साचुं- तप (गुजराती) ।
९. भारतीय महापुरुष (गुजराती)
१०. दुर्व्यसनो थी बचो (गुजराती)
११. आदर्श योगी
(अनन्त श्री खाँकी जी महाराज का दिव्य जीवन चरित्र) ।
१२. भक्ति- मकरन्द (मूल) ।
१३. कल्याण कल्प द्रुम (यथा तथा गुणवाली पोथी) ।
१४. मन प्रबोध माला (यथा तथा गुणवाली पोथी) ।
१५. विनय शतक- (यथा तथा गुणवाली पोथी) ।
१६. प्रातः कालीन प्रार्थना (हिन्दी संस्कृत) ।
१७. प्रातः कालीन प्रार्थना (गुजराती) ।
१८. अर्थपञ्चक-प्रदीप (सरल भाषा में तत्व ज्ञान)
१९. श्री वैष्णवजन (गुजराती) ।
२०. उपदेश-मंदाकिनी गुजराती प्रथम भाग ।
२१. उपदेश-मंदाकिनी गुजराती द्वितीय भाग ।
२२. भक्ति मकरन्द गुजराती (मकरन्द माधुरी टीका सहित) ।

मिथिला जनकपुरधामस्थ आचार्यपीठ, श्री रामानन्दाश्रम संस्थापक अनन्त श्री विभूषित आचार्य प्रवर स्वामी पं.श्री अवध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किशोर दास प्रेमनिधि प्रणीत- प्रकाशित पुस्तकों की नामावली –

२३. आचार्य लीलामृतम् (हिन्दी महाकाव्यं) ।
२४. श्रीरामानन्द नाटक ।
२५. श्रीरामानन्दाचार्य (धर्मलोक के सितारे) ।
२६. आचार्य बन्दना (कविता संकलन) ।
२७. आचार्य परिचर्या (प्रथमभाग) ।
२८. जगत् गुरु श्री रामानन्दाचार्य (गुजराती) ।
२९. "श्री रामानन्द ग्रन्थमाला" का श्री रामानन्दोङ्क (सचित्र) ।
३०. जनकपुर की झाँकी (श्रीधामका सचित्र एवं सम्पूर्ण परिचय) ।
३१. श्रीराम चरित मानस में मिथिला धाम ।
३२. श्रीराम चरित मानस में महाराज जनक ।
३३. हमारी धार्मिक मार्यादा ।
३४. हमारी दिनचर्या ।
३५. हमारा धर्म और उसका वैज्ञानिक विवेचन ।
३६. दिव्यधाम के पथ पर ।
३७. उपदेश वल्लरी (श्री जानकी प्रपत्तिसार स्तोत्र सहित) ।
(आचार्य श्री खोजीजी महाराज प्रणीत) ।
३८. परमार्थ वचनावली ।
(श्री सीतारामीय जी महाराज के दिव्य उपदेश) ।
३९. श्री राम नाम लेखन विधि ।
४०. तिलक-माला संकीर्त्तन ।
४१. प्रेम संकीर्तन (प्रथम भाग) ।
४२. प्रेम संकीर्तन (द्वितीय भाग) ।
४३. प्रेम संकीर्तन (तृतीय भाग) ।
४४. आरती स्तुति संग्रह ।
४५. प्रार्थना रत्नावली ।
४६. विनय चालिसा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Digitized by eGangotri. Funding: MIDF

४७. श्री साकेत-महिमा
(हिन्दी काव्य, पद्य में श्री साकेत सप्तावरण परिचय)।
४८. दिव्यधाम- साकेत (त्रिपाद महाविभूति)
४९. दीक्षापद्धति (श्री वैष्णवी दीक्षा का शास्त्रीय विधान)।
५०. दशनामापराध (नाम जापकों के लिए अवश्यमेव पठनीय)।
५१. महात्मा- श्रीजनकदुलारी शरणजी (जीवनी)।
५२. युगद्रष्टा संत- (श्रीसीतारामीय जी महाराजका परिचय)।
५३. जयगुरुदेव (श्री सीतारामीय चरितामृतम् (गुजराती)।
५४. आचार्य स्मृति ग्रन्थ (श्री सीतारामीय चरितामृतम् गुजराती)।
५५. खांकी महाराज का जीवन चरित्र (गुजराती)।
५६. श्री लोमस संहिता (संत प्रिया, व्याख्या सहित)।
५७. श्री रामाचार्य माहात्म्य (हिन्दी भाषा टीका सहित)।

परमपूज्य श्री वेदान्ती जी महाराज प्रणीत अर्थ वोधि टीका –

५८. भजन प्रेम लहरी (गुजराती गीत संग्रह)।
५९. भजन प्रेम पुष्पाञ्जलि (गुजराती गीत संग्रह)।
६०. प्रेम गीत गंगा (गुजराती गीत संग्रह)।
६१. भजन गीत मञ्जरी (गुजराती गीत संग्रह)।
६२. श्री सीता मंत्रार्थ (संक्षिप्त)।
६३. श्री मिथिला नवरत्न स्तोत्रम्।
(सटीक दोनों एक में)।
६४. आचार्य षोडशी स्तोत्रम्।
६५. श्री सीतामही रहस्यम्- (सटीक)।
६६. श्री सीताराम प्रपति प्रार्थना (नित्य पठनीय)।
६७. सम्वन्ध पत्रम्।
६८. रसमोद अष्टयाम पदावली।
६९. श्री मिथिला महात्म्यम्
(मिथिला भाववोधिनी भाषा टीका तथा प्रेम टिप्पणीसहित)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७०. श्री वैष्णव मताब्ज भास्कर (प्रेमामृत वर्षिणी टीका) ।
७१. अवध प्रकाश (श्री शीलमणि महाराज कृत) ।
७२. श्री सीता मंत्रार्थ रहस्यम् (श्री सीता मन्त्र की विस्तृत व्याख्या) ।
७३. श्री जानकी नवमी व्रत कथा
(प्रेमामृत वर्षिणी भाषा टीका सहित) ।
७४. श्री सीता स्तोत्र सुधा सागर (पूर्वार्द्ध) ।
७५. श्री सीता स्तोत्र सुधा सागर
(श्री सीता स्तोत्रों का विशाल संग्रह हिन्दी भाषा टीका सहित) ।

उपरोक्त प्रकाशित ग्रन्थ अप्राप्य है ।

७६. श्रीसीता तत्वमुपास्महे (श्री सीता तत्व पर विवेचन) ।
७७. श्रीवैदेही वन्दना बल्लरी (नित्य पठनीय स्तोत्र) ।
७८. प्रेम रस माधुरी (प्रेम रस भरे मधुर पद्यों का सुन्दर संग्रह) ।
७९. रस प्रेम भरी आरती (रसभरी आरतियों का संग्रह) ।
८०. श्रीजानकी चालिसा (नित्य पठनीय) ।
८१. श्री मिथिला चालिसा (नित्य पठनीय) ।
८२. श्री जानकी चालिसा ।
८३. श्री मिथिला चालिसा (गुजराती अक्षर में) ।
८४. श्री मिथिला भावभूषण (मिथिला महिमा मण्डित) ।
८५. श्री साकेतोत्सव विधानम् (वैष्णव श्राद्ध पद्धति) ।
८६. श्री रामपरत्वम् (प्रेमामृत वर्षिणी भाषा टीका सहित० ।
८७. आत्माराम की अरजी (विनय) ।

उपर्युक्त प्रकाशित सभी ग्रन्थ पुनः प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं ।

पं.उर्मिला कान्त शरण जी (श्री ज्योतिषी की पुस्तके –

८८. श्री सीता सूक्तम (लघु व्याख्या सहित) ।
८९. श्री राम चरित मानस माहात्म्य (सटीक) ।
(महाकाल संहिता तथा वृहद् ब्रह्म रामायणोक्त) ।
९०. श्री राम मंत्रार्थ (संक्षिप्त) ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

९१. श्री सीताराम युगल मंत्रार्थ (संक्षेप) ।
९२. शुभविवाह (नवयुवक युवतियों के लिए पठनीय) ।
९३. अथ संक्षिप्त रामायण ।
९४. गोला गोकर्ण नाथ की यात्रा ।
९५. श्री सीता राम विवाह पदावली (मिथिला पद्धति) ।
९६. श्री रामार्चा माहात्म्य (हिन्दी भाषा टीका सहित) ।
(वृहत्तर पूजा पद्धति समेत) ।
९७. श्री रामानन्द सम्प्रदाय का सिद्धान्त ।
९८. श्री वैष्णवधर्म सनातन धर्म ।
९९. संक्षिप्त- रामायण एवं सत्संग महिमा ।
१००. श्री युगल मंत्रराज जप विधिः (संक्षिप्त) ।
१०१. श्री हनुमत ध्वज दान विधिः ।
१०२. श्री जानकी मधुर षोड्सी (सटीक) ।
१०३. श्री सीता जन्म कथा ।
१०४. श्री सीता जन्म कथा ।
१०५. श्री भगवत सम्बन्ध पत्रम् ।
१०६. जप यज्ञ एवं मंत्रराज महिमा ।
१०७. श्री राम चरित मानस में जनकपुरधाम और महाराज जनक ।
१०८. अथ प्रश्नोत्तरी एवं साधन पञ्चकम् ।

उपर्युक्त प्रकाशित पुस्तकें अप्राप्य हैं ।

श्रीवैदेही कान्त शरण जी ('दर्शनकेशरी' प्रणीत) –

१०९. श्रीसीता सूक्तम्
(अथर्ववेदोक्त) विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित)

श्री रामेश्वर प्रसाद गुप्त (श्रीराम प्रियाशरण जी की पुस्तकें)-

११०. श्रीं रांम रक्षां स्तोत्रम् (हिन्दी पद्यानुवाद) ।
१११. श्री सिया रघुवीर चालिसा ।
११२. योगी राम की जीवन लीला (जीवनी) ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by ...

११३. श्री युग द्रष्टा सन्त (जीवन चरित्र)।
११४. रसमोद माधुरी (प्रेम रस भरे मधुर भजनों का संग्रह)।
११५. श्री जानकी विवाह पदावली (मैथिली गीत संग्रह)।
११६. श्री जानकी विवाह रस माधुरी (मैथिली गीत संग्रह)।
११७. श्री सद्गुरु चालिसा ।
११८. आचार्य परम्परा चालिसा ।
११९. श्री रामानन्दाचार्य चालिसा एवं
१२०. आचार्य परिचर्चा ।
१२१. श्री रामानन्दाचार्य चालिसा एवं
१२२. आचार्य परिचर्चा (गुजराती अक्षरों में)।
१२३. श्री मिथिला रहस्य माधुरी ।
१२४. श्री मिथिला माधुरी एवं
१२५. श्री धाम वंशावली ।
१२६. श्री जनकपुर चालिसा ।
१२७. श्री सीतामढी चालिसा ।
१२८. श्री प्रेमनिधि चालिसा ।
१२९. आचार्य श्री प्रेमनिधि स्मृति पुष्प ।
१३०. श्री राघव चालिसा ।
१३१. श्री मैथिली चालिसा ।
१३२. आचार्य श्रीप्रेमनिधि चालिसा-
(रचयिता पं.श्री शालीग्राम शरण जी)।
१३३. श्रीप्रेमनिधिये मङ्गलम् (पं.श्री जानकी रामाचार्य प्रणीत)।
१३४. श्री कटावधाम की स्तुति प्रार्थना
(गुजराती, साधु श्री भगवान दास महाराज)।
१३५. प्रभु विनय (पं.अयोध्या प्रसाद शास्त्री)।
श्रीचन्द्रकला शरणजी (वैष्णव डा.सी. सोनीकृत पुस्तकें –
१३६. श्रीप्रेमनिधि कृपा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

आयुर्वेदिक अनुभूत् योगावली (भाग-१ गुजराती)।

१३७. श्री राम मंत्रराज (भाव अर्थ के साथ जपविधि, गुजराती)।

१३८. श्री प्रेमनिधि कृपा ना अद्‌भुत त्रणम् (कल्प वृक्षों- गुजराती)।

१३९. श्री प्रेमनिधि श्री सद्‌गुरु भगवान की अन्तिम दिव्य वाणी (जीवन चरित गुजराती)।

१४०. श्री राम रक्षा स्तोत्र का (गुजराती भाषा में पद्यानुवाद)।

१४१. आरती स्तुति कीर्त्तन माधुरी (रसमोदनिधि)।

१४२. चाय विज्ञान
(गुजराती में अनुवादक- श्री भानुप्रसाद त्रिवेदी, आयुर्वेद रत्न)।

११७. **लेखक की कविताएँ (स्वरचित)**

प्रतिभा- नेपाली में

अर्थको लोलुपता प्रतिभालाई धपाउँछ।
सुख सयलको मानसिकता संकीर्णता बढाउँछ॥
पेटको अजीर्णता उत्पात लाई निम्त्याउँछ।
शिक्षा को अनियमितता विकृतिलाई जन्माउँछ॥
अर्थको लोलुपता...........॥

राजनीतिक अस्थिरता देशलाई डुबाउँछ।
अकासिदै गएको भ्रष्टाचार युवावर्गलाई गुम्स्याउँछ॥
गाउँले प्रतिभा गाउँमा नै हराउँछ।
शहरी प्रतिभा अमेरिका छिर्न पुग्छ॥
अर्थको लोलुपता...........॥

नेपाली सभ्यता नाक त गह्नाउँछ।
युरोपेली सभ्यता नाक हुन पुग्छ॥
निशाचरी वृत्ति घर जम हुन पुग्छ।
सोझा किसान विचरा नाङ्गो भोको वस्छ॥
अर्थको लोलुपता...........॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri

– **मैथिली में**

सीते ! नैहर उजडल तोर,
अत्याचार बढल मिथिला में ।
सब ठाम अछि घनघोर,
सीते ! नैहर उजडल तोर ॥
परोपकार सेवाक मिथिला ई,
ज्ञानक ज्योति जरै.... छल ।
भूमि पुत्री भूमिजा सँ कि अछि छिपल-
से त कहू, हे सीते ॥ नैहर उजडल तोर ।
मिथिलाक संस्कृति हिनक सभ्यता-
विश्व में कहाँ नै जनैछल ।
तेहन विनाश भेल मिथिला कें,
सिरधुनि सब पछताई छथि ॥ सीते नैहर उजडल तोर ।
पद दलित शोषक वर्ग सँ इ मिथिला,
अहर्निश शोषित भए रहल अछि ।
जननी जन्मभूमि सँ बढि कय,
नहि किछु अछि अनमोल ॥ सीते नैहर उजडल तोर ।
लंका विनाशिनी सुनु हे सीते !
कर जोड़ि कान्त कहैत छथि ।
व्यथा सँ व्यथित अपन भूमि कें ।
पुनः उद्धार करु ई सीते ॥ नैहर उजडल तोर ।

----

११८. समापनोक्ति

विश्व में आज अशान्ति वढ़ रही हैं । मर्यादा के सभी रास्ते वन्द किए जा चुकें है । राष्ट्रों में प्रभुता की होड़ लगी है और विनाश के सारे उपकरणों की बृद्धि हो रही है । हत्त्या, हिंसा, राहजनी, अपहरण, लूट, खसोट, वेइमानी-शैतानी जनित अपराध दिन दुगुना,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Digitized by ... Gangotri. Funding: MIDF

रात चौगुना वढ रहा है । अश्लील साहित्यों से सामाजिक मूल्य-मान्यता नष्ट प्रायः होती जा रही हैं । रक्षक ही भक्षक बन गये हैं । राक्षसी वृत्ति सर्वत्र व्याप्त है और साक्षर ही 'राक्षस' हो रहे हैं। (साक्षर ाः विपरिताच्चेत राक्षसाः एव केवलम् ।) नारी समाज अपमानित हो रही है। माता-पिता अपहेलित हो रहे हैं। साधु, सन्तों की अवमाननाएँ वढ रही हैं। जीना दुर्भर हो गया है । सर्वत्र त्राहि-त्राहि मची है। कोई किसी पर भरोसा नहीं कर पा रहा है। ऐसी संकटपूर्ण स्थिति में सन्त शिक्षा एवं प्रभुशरण के अलावा मुझे कोई और उपाय नहीं सूझता था । वहुत तर्क-वितर्क और मनन करने पर मेरे मन में आया कि सन्तों के उपदेशात्मक वाणी और सत्संग ही इस अशान्ति और विकृति को दुर कर सकती है (सत्संगतिः कथ्य किं न करोति पुसां, सत्संगजा दोष गुणा भवन्ति ।) अतः मैनें राजर्षि जनक, जगदम्वा जानकी और महर्षि याज्ञवल्क्य की पावन-भूमि, प्राचीन मिथिला की राजधानी जनकपुरधाम के सन्त-साहित्य के विषय में अपनी लेखनी चलायी ।

राजर्षि जनक के समय से हीं जनकपुर धार्मिक अनुष्ठान, संत समागम एवं साहित्य कला, और संस्कृति का उद्गम स्थल रहा है । जनकपुरधाम के सन्तों ने हिन्दी सन्त-साहित्य परम्परा को वढाते हुए हिन्दी साहित्य की विशिष्ट सेवा की है। नेपाल में सन्त-साहित्य परम्परा साढे ग्यारह सौ वर्ष पहले से विद्यमान रही है। नेपाल के सिद्ध सन्तों एवं नाथयोगियों ने अपभ्रंश भाषा में जो रचनाएँ कीं वह आज भी काठमाडौ उपत्यका में चर्यागीत के नाम से प्रसिद्ध है । १६७४ ई.में जनकपुर के महात्मा सूरकिशोर दास द्वारा "मिथिला विलास" की रचना की गई, जो आज भी अपनी पौराणिकता का साक्ष्य उल्लेख कर रही है । हिन्दी-साहित्य के आदिकाल के सिद्धों के चर्यापदों का पता नेपाल में ही स.भ.म. करप्रसाद शास्त्रीद्वारा लगा है । इन्हें अव तक नेपाल उपत्यका में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी साहित्य पश्चिम नेपाल (दाङ) में उपलब्ध हुआ है। मध्यकालीन नेपाल के नाटचसाहित्य में तत्कालीन सन्त-भाषा का प्रयोग हुआ है। उत्तरमध्यकाल में नेपाल के पहाड़ी क्षेत्रों में 'जोशमणि' निर्गुण-सन्त-सम्प्रदाय तथा कृष्णप्रणामी सम्प्रदायद्वारा हिन्दी-सन्त साहित्य की रचना की गई और उसका प्रचार भी किया गया। काठमाडौं में कृष्णभक्ति की रचनाओं के लिए तीन सौ वर्ष पूर्व चन्द्रसखी नाम की एक प्रसिद्ध महिला हो चुकी है।

मल्ल राजाओं का समय भक्ति सत्संग के लिए प्रसिद्ध माना जाता है। जगत्ज्योति मल्ल और जयस्थिति मल्ल के हिन्दी भजन तथा नाटक तो अत्यन्त उत्कृष्ट हैं। इसी काल के एक मानवीर कक्षपति नाम के व्यक्ति का लिखा हिन्दी नाटक "श्रीकृष्ण चरित प्याख" नेपाल के तत्कालीन हिन्दी भक्ति-साहित्य का सुन्दर नमूना है। शाहवंशी राजाओं में पृथ्वीनारायणशाह, प्रतापसिंह शाह, गीर्वाणवीरविक्रम शाह आदि राजाओं ने हिन्दी सन्त-साहित्य के कडी में एक-एक इँट रखते गये। इसी समय में नेपाल तराई के जनकपुर में रामभक्ति का श्रृंगार और वात्सल्य भावना वाला साहित्य विपुल परिमाण में रचा गया। जनकपुर के सन्त-साहित्य परम्परा को डेढ सौ वर्ष पूर्व जनकराज किशोरी "अलि" ने दो दर्जन पुस्तकें लिखकर इस परम्पराको आगे बढाने में सहयोग दिया, तो अवधदास "प्रेमनिधि" उर्मिलाकान्त शरण,- अवधकुमार दास, रामस्नेही दास आदि सन्तों ने इसे आगे बढाया है। इसी तरह मैथिल साहित्यकारों में विद्यापति का नाम प्रमुखरूप से लिया जा सकता है। जिन्होंने सीताराम के प्रति श्रद्धाभाव से "स्तुति" लिखकर मैथिल और मिथिला को गौरवान्वित किया है। इधर पं.रामाकान्त झा, सुन्दर झा "शास्त्री" एवं पं. सूर्यकान्त झा आदि विद्वानों नें भी सीता-राम से सम्बन्धित काव्य लिखकर इसे गौरवान्वित किया है।

सन्त लोग रमता योगी और बहता पानी होते हैं। उनकी

Nepal Sanskrit University

...Funding: MIDF

प्रतिभा बहुमुखी होती है । वे स्वतन्त्र, गमनशील होते हैं । अपने उपदेशात्मक वचनामृतद्वारा मनुष्यों के कलुषभाव को दूर करते हुए उन्हें मानव कल्याण में लगाते चलते हैं । वे जहाँ गये वहीं की भाषा में प्रभु-सन्देश को चौपाई, दोहे, पद और गीत के रूप में प्रचार करते चले गये । इसीलिए साधु सन्तों की भाषाको सधुक्कड़ी भाषा भी कही गयी है । विवेचनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो सन्तों की दो श्रेणियाँ होती हैं । एक ऐसे सन्त होते हैं जो प्रपंचो से दूर रहकर एकान्त वासी हो प्रभु के नाम स्मरण कर अपना जीवन सफल वनाते रहे हैं । दुसरे ऐसे सन्त हैं- अपने ज्ञान का प्रचार कर सामाजिक बुराइयों का दूर करने में अपना अहो भाग्य समझते हैं । साधु-सेवा के साथ मानव-सेवा ही अपना धर्म समझते हैं । गौ, ब्राह्मण की सेवा में तत्पर रहते हैं । सन्तलोग ऐहलौकिक इर्ष्या, द्वेष, लोभ, मोह, पाखण्ड, मात्सर्यादि विषय- वासना में न पड़कर मानव कल्याणार्थ अपने को समर्पण कर देते हैं । सन्त असन्त के गुणों को रामचरित मानस में स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है । भरत के अनुरोध पर प्रभु श्रीराम संत और असन्त के स्वभाव को स्पष्ट करते हुए असन्त की संगति से दूर रहने का उपदेश देते हैं –

सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ ।
भुलेहुँ संगति करिअ न काऊ ॥
तिन्ह कर संग सदा दुःख दाई ।
जिमि कपिलहिं घालइ हरहाई ॥ - रामचरित मानस उ.का.।

दुष्टों का संगत कभी नहीं करना चाहिए । वे धोखेवाज, मतलवी और स्वार्थी होते हैं । दूसरों को दुःख देना ही अपना धर्म समझते हैं । सन्त परोपकारी होते हैं । परमार्थ हीं उनका धर्म होता है । वे मानवकल्याणार्थ अपना जीवन तक अर्पण कर देते हैं । परोपकार हीं उनका लक्ष्य होता है । वे साधु समागम और सतसंग में विश्वास करते हैं । भगवद्-भक्ति से बढकर उनके लिए और कुछ नही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है ।

विनु सतसंग विवेक न होई ।
राम कृपा विनु सुलभ न सोई ॥
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई ।
पारस परस कुधात सुहाई ॥ - रामचरित मानस वा का ।

सतसंग और राम कृपा के वीच अन्योन्याश्रय सम्वन्ध होता है । सतसंग के लिए चाह और रामकृपा के लिए भक्ति अनिवार्य है –

भनिति मोरि सव गुन रहित,
विश्व विदित गुन– एक ।
सो विचारि सुनिहहिं सुमति,
जिन्हकें विमल– विवेक ॥
एहि मह रघुपति नाम उदारा,
अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ ।
कलि विशेष नहिं आन उपाऊ ॥ - रामचरित मानस वा.का ।

प्रभु श्रीराम तो गुणों के भण्डार हैं । दया, करुणा, त्याग, निर्लोभता और शरणागत का रक्षाभाव विशेष रूप से उन के व्यक्तित्व में दर्शनीय हैं । उनका व्यक्तित्व कल्पवृक्ष के समान है, जहां से कोई भी याचक निराश नहीं लौटता । व्रह्म और जीव में सेव्य और सेवक का सम्वन्ध होता है । सेवक मालिक के गुणों से अवगत होकर सेवा को अंगीकार करने की चेष्टा करता है । सन्त लोग भगवान् के गुणों को गान करते हुए विश्व-कल्याण के पथ पर अग्रसर होते हैं । इन सव गूढ रहस्यों को राम भक्ति के विना सम्भव नहीं होता है । अतः मैंने जनकपुर के सन्त साहित्य को भक्तजनों के समक्ष रखने का दुःसाहस [illegible] है । मेरा पूर्ण विश्वास है की इन सन्तोंद्वारा रचित साहित्य के अध्ययन और मनन से नेपाल और भारत सहित विश्व में

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

ान्ति आएगी । मानवकल्याण होगा । सदगति मिलेगी । अशान्ति दूर होगी और विकृति कम होगी ।

िनु विश्वास भगति नहिंतेहि बिनु द्रबहिं न रामु ।
राम कृपा विनु सपनेहुँ जीव न लह विश्राम "९०"

रा. मा. उ. का.

NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY
पुस्तकालय
Acc. 30036
30035

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

ताराकान्त झा

सहधर्मिणी श्रीमती सुनैना झा

परिचय

नाम : ताराकान्त झा

जन्मतिथि : ०५/०९/१९५० ई. सन्

जन्मस्थान : मडई गा. वि. स. वार्ड नं. ५ महोत्तरी
जनकपुर, नेपाल

शिक्षा : (क) एम. ए. (हिन्दी)
(ख) साहित्याचार्य
(ग) शिक्षाशास्त्र (बी. एड)

विद्यापीठ : या. ल. ना. विद्यापीठ, मटिहानी, महोत्तरी

पद : सह-प्राध्यापक

सम्मान तथा पदक :-

(क) सुप्रवल गोरखा दक्षिणबाहु ।
(ख) शिक्षादिवस पुरस्कार
(ग) भारतीय राजदूतावास से पुरस्कार प्राप्त
(घ) आदर्श गा. वि. स., मटिहानी से पुरस्कार प्राप्त

लेख तथा रचना:-

जनकपुर का सन्त साहित्य प्रकाशित
युगबोध अप्रकाशित
कविता संग्रह अप्रकाशित
रचना संग्रह अप्रकाशित (नेपाली)

विभिन्न पत्र-पत्रिका मे समय-समय में लेख तथा रचना हिन्दी मैथिली तथा नेपाली मे प्रकाशित ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu